PSDIIT

(पवहारी शरण द्विवेदी इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी)

एडमिशन एवं इन्फारमेशन सेंटर

नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग, कम्प्यूटर्स टीचर ट्रेनिग, बी.सी.ए, पीजीडीसीए, एमसीए, बी.ए, एम.ए, मास्टर इन जनर्लिज्म एवं मास कम्युनिकेशन, डिप्लोमा इन कम्प्यूटर साईंस, डिप्लोमा इन टेक्सटाईल, एम.बी.ए, बीबीए, आईटीआई (इलेक्ट्रिकल, वायरमैन, ड्राफ्ट मैन आदि)

Visual Basic, JAVA, HTML, C, C++ programming, Projoect Work facility also available

प्रवेश 1 मार्च 2013 से प्रारम्भ

सम्बद्धताः ईलम यूनिवर्सिटी-सिक्किम, एम.बी. यूनिवर्सिटी-हिमाचल प्रदेश

समाज के हर वर्ग की शिक्षा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं सस्थाओं के कोर्सेस संचालित करवाये जाते है.

सम्पर्कः ६५ए, लक्सो कम्पनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड, मुंडेरा, चुंगी, इलाहाबाद-२११०११ मो०: 9335155949, 8726831971

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेहागन कला केन्द्र

एल.आई.जी. ६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, मोबाईलः 9454067535

कुंकीग, बेकिंग, पेंटिग, सिलाई, कढ़ाई, कटिग एण्ड टेलरिंग, जरदोजी, फ्लावर मेंकिग, होम डेकोरेशन, ग्लास पेंटिग, ज्वेलरी मेंकिग, कुशन मेंकिग, मेंहदी, आईसक्रीम, ट्वायज मेकिंग (सभी प्रकार के), इग्लिश स्पोकेन इत्यादि

नोटः १-हमारे यहॉ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है। ट्रेनिग के उपरान्त प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।
२- अन्य प्राफेसनल कोर्सेस एवं व्यवसायिक कोर्सेस

विभिन्न क्षेत्रों में शाखा खोलने के इच्छुक व्यक्ति/महिलाएं शाखा कार्यालयों में सम्पर्क करें

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः 08—09
मई—जून 2013

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10 / —
वार्षिक	: रु0 110 / —
पंचवर्षीय	: रु0 500 / —
आजीवन सदस्य	: रु0 1500 / —
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000 / —

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0ः 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी—93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व
डॉ० प्रणव पण्डया/नरेन्द्र मोदी/देवदत्त शर्मा 'दाधीच'........ 06—07
डॉ० रत्नाकर पाण्डेय/शिव शरण त्रिपाठी................ 08
कौशलेन्द्र पाण्डेय/हरिचरण वारिज/रमेश चंद्र त्रिवेदी 'पुष्प'.........09—13
बंशी लाल 'पारस'/वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'/राजेश कुमार सिंह 14—17
श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा/बबिता शर्मा/सुश्री बी.एस.शांताबाई... 19—21
एस.बी.मुरकुटे/ओम प्रकाश त्रिपाठी/मुखराम माकड़ 'माहिर'.... 22—24
सनातन कुमार वाजपेयी 'सनातन'/डॉ० शिवगोपाल मिश्र 25
डॉ० हितेश कुमार शर्मा/डॉ० हेमा उनियाल/श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 26—27
डॉ. अनिल शर्मा / ब्रज भूषण चतुर्वेदी/डॉ. ओम प्रकाश हयारण 28—29
संतोष शर्मा 'शान'/बालाराम परमार 'हंसमुख'/डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा 30—31
डॉ. सरोज गुप्ता/पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर....... 32
राम आसरे गोयल/मृदुलमोहन अवधिया/डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल/मिथिलेश द्विवेदी 33, 35, 38
काव्याभिव्यक्तिः
मृदुल मोहन अवधिया/डॉ० शरद नारायण खरे/ डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'/मोहित कुमार गोस्वामी/डॉ० तेज नारायण कुशवाहा/पं. गिरि मोहन गुरू/ डॉ. संगीता बलवन्त/बृज बिहारी ब्रजेश/जे.वी.नागरत्नमा/मुन्नू आनन्द/लक्ष्मी प्रसाद गुप्त किंकर 33—37
संपादकीय टिप्पणीया 20, 22, 24— 25, 28—29, 32, 34, 36, 38—40
विदेशी शुभचिंतको के संदेश 40
अंधा न्याय, लंगड़ा कानून समाज प्रवाह, मुंबई 42—44
मालवी बाल विनोद गीतों में प्रकृति ज्ञानः जगन्नाथ विश्व 55
स्थायी स्तम्भ
प्रेरक प्रसंग/अतिथ्य संवाद 04—05
१०वें साहित्य मेला के अवसर परः **देवदत्त शर्मा 'दाधीच'** 41
परिचर्चाः(रामकृष्ण गर्ग, रामआसरे गोयल, ओम प्रकाश त्रिपाठी, सुरेखा शर्मा, डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, डॉ० विमला मिश्रा) 47—52
व्यंग्यः मनमोहन चुप्पीः देवेन्द्र कुमार मिश्रा 53
जानकारीः हिन्दू धर्म में ३३ करोड़ देवी देवता है??/वाह तरबूज 45, 54
कविताएंःआचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर/हितेश कुमार शर्मा/ वली उल्लाह खां 'फरोग' 56
आध्यात्मः आतंकवादियों का मनोबल तोड़ने की विधि पवनसुत हनुमान से सीखे/जीवन के उस पार 46, 59
आपकी डाक/स्वास्थ्यःघरेलू उपचारः पं.नारायण शर्मा 61—62
साहित्य समाचार- 12,16, 52, 57—58, 60, 63
लघु कथाएंःअखिलेश निगम/मोहम्मद आरिफ/डॉ.मोहन तिवारी 64—65
समीक्षा 66

महान पुरुष वही है जो समय को महत्व देता है. अपना समय बेकार के कार्यो में व्यर्थ न करके जीवन को सार्थक बनाने वाले कार्य करता है.

यहां प्रत्येक को नष्ट हो जाना है, अमर कोई नहीं है. अमर तो वही कहा जा सकता है जिसको हम मरने के बाद भी याद किया करें. याद भी उसी की आती है जिसने हमें कुछ करके दिया हो.

जीवन में जीने के लिए कुछ करके दिखाओं, ताकि मरने के बाद भी तुम्हें याद किया जा सके. जी कर तुमने यदि ऐसे कार्य नहीं किए तो तुम्हारा संसार में जीना बेकार होगा.

सत्य यथार्थता का प्रतिरुप है उसका अनुसरण उसे सच्चा सुख देता है, इसके अपनाने से वह सदा बुराइयों से बचता है.

सत्य कटु होता है, ऐसी कहावत है. फिर भी सत्यता के आगे असत्य की पराजय अवश्य सम्भावी है. सत्य सम्भाव से मानव का आत्मिक बल बढ़ता है.

सत्य अनश्वर है, असत्य नश्वर है. सत्य स्थायी है, असत्य अस्थायी है. सत्य प्रत्यक्ष है, असत्य अप्रत्यक्ष है. सत्य सुखदाई एवम् असत्य दुःखदाई है.

जवानी में तीव्र वेग एवम् प्रवाह होता है, इसे जिधर प्रवाहित किया जाता है, क्रान्ति मच जाती है, उमंगो की लहरें उमड़ पड़ती है और जिनमें अनन्त धाराएं समाहित होती है.

जवानी जब मचल उठती है, तब दिल उफनाने लगता है, कामनाएं जब अंगड़ाई लेती हैं, भावनाएं जगने लगती हैं, तब कृतत्व साकार होने लगता है. जवानी के प्रवाह को कोई नहीं रोक नहीं सकता, दबा नहीं सकता, वेग उद्दाम होता है. एक उल्का है, एक अजस्त्र स्रोत है और लक्ष्य तक पहुंचना ही जिसका विश्राम है.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

वक़्त के साथ खुद को चलाए रखिए,
कोई तोड़े तो भी रिश्तों को बनाए रखिए
फूल मुरझाने की जद में नहीं आता जब तक
ज़िदगी फूल है, गुलशन में सजाए रखिए।

बचपना उम्र का एक आलेख है,
औ जवानी जमाने का अभिलेख है,
घर गृहस्थी कठिन भी है आसान भी,
पर बुढ़ापा उमर का शिलालेख है।

रहता खुला है हाजिरी का काम होता है,
मौत का दफ्तर है सबका नाम होता है,
दौलत बटोर ले तू शोहरत बटोर ले,
पर कफ़न में जेब होती है न कोई नाम होता है।

मौत ने भेजा निमंत्रण है लिखा आना पड़ेगा,
मेरी शादी है खुशी के गीत भी गाना पड़ेगा
जिंदगी ने कान में चुपके से मेरे ये कहा
बस इसी ही वक्त फ़ौरन ही मुझे जाना पड़ेगा।

रक्त से अभिषेक हिम शिखरों का वे करके गए,
और निज जयघोष हिम शिखरों का वे करके गए,
इतिहास आजादी का स्याही से लिखा जाता नहीं,
इसलिए निज रक्त से जय-पत्र वे लिख के गए.

डॉ० सर्वदानन्द द्विवेदी, उन्नाव

आखिर हम कब सुधरेंगे

एक राजनीतिक पार्टी के लिए एक व्यक्ति/संस्था आतंकवादी/नक्सलवादी है तो दूसरी पार्टी के लिए देशभक्त. आखिर कब तक चलेगा नेताओं का यह वोट का नाटक दाऊजी

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

हरिवंश राय बच्चन की इन पंक्तियों का जीवन में बहुत महत्व है क्योंकि हम सभी अपनी-अपनी नौका में बैठकर जीवन रुपी समंदर को पार करने में लगे हैं. ऐसे में हमारे इस सफर में कई बार समस्या रुपी लहरें भी आती हैं तो बड़े-बड़े तूफान भी. उन विकट परिस्थितियों में हमें इन्हीं पंक्तियों का सहारा लेना पड़ता है और साहस से कोशिश करते हुए आगे बढ़ना रहता है. जीवन में किया जाने वाला हर छोटा प्रयास उपयोगी होता है. यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए. यदि हम सफलता के उच्च शिखर पर बैठना चाहते हैं तो उसके लिए हमें फौलाद का मनोबल बनाना होगा और यह केवल अनुशासन व मूल्यों को आत्मसात करके ही संभव होगा और इसे संभव कर दिखाया है डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने, जिसका एक छोटा सा प्रयास है विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका का 'डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी विशेषांक'. यह विशेषांक अनायास ही प्रकाशित नहीं हुआ बल्कि इसकी महती आवश्यकता थी. इसके महत्व को मैंने जाना हिन्दुस्तानी एकेडेमी में आयोजित 'साहित्य मेला-२०१२' में. कार्यक्रम में सम्मिलित होने और सम्मान पाने के लिए दक्षिण भारत के दर्जनों विद्वान, साहित्यकार आए हुए थे और सबकी यही प्रबल उत्कंठा थी कि गोकुलेश्वर द्विवेदी कौन है, कहां है. मैं उनसे साक्षात् मिलकर कृतज्ञता व्यक्त कर सकूं. कभी-२ कुछ लेखक द्विवेदी जी से ही पूछते नज़र आते थे कि 'द्विवेदी जी' कहां है. यह खोज व जिज्ञासा एक व्यक्ति की नहीं बल्कि एक ऐसे व्यक्तित्व की थी जो उन्हें हजारों किलो मीटर दूर से प्रयाग की धरती पर खींच लायी थी. वह चाहे जबलपुर, मंडला, सिम्भावली, गाज़ीपुर, खीरी, हाथरस, बिजनौर, रायबरेली, दिल्ली, ग्वालियर, मुंबई, जयपुर, रावतसर, पीलीभीत, इंदौर, कानपुर, लखनऊ हो या बंगलौर, गोधरा, गुजरात, भोपाल व हरिद्वार इन शहरों के साहित्य प्रेमी, पत्रिका के प्रशंसक कार्यक्रम में शामिल होने आए थे. और जब 'डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी विशेषांक' प्रकाशित होने के बारे में अवगत कराया गया तो सैकड़ों लेख प्राप्त हुए और उसी योजनाओं का हिस्सा है कि दो महीनों के कठिन परिश्रम के बाद अब 'गोकुलेश्वर द्विवेदी विशेषांक' आपके हाथ में हैं.

कुछ लोग जिन्दगी में हवा के एक झोकें के मानिन्द आते हैं और अपनी खूबियों के बदौलत दिलो-दिमाग में इस तरह रच बस जाते है कि आजीवन आप उनसे अपने आपको अलग नहीं कर सकते हैं. विश्व स्नेह समाज के संपादक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का भी मेरी जिन्दगी में कुछ इसी प्रकार का मुकाम हैं. ऐसे लोग इतिहास के पन्नों में अपने को दर्ज कराने के लिए पन्ने दर पन्ने इतिहास बनकर ऐतिहासिक दस्तावेज में बदलने के लिए 'कबीर की कथनी' जो घर फूंके आपनों चले हमारे साथ' से भी गुरेज नहीं करते. कहा जाता है कि अपने जीवन की गणना आंसुओं से नहीं मुस्कराहट से करें और अपने उम्र की गणना वर्ष से नहीं बल्कि मित्रों की संख्या से करें. और आज का यह विशेषांक छोटी सी उम्र में बड़े-बड़े मित्रों के स्नेह का परिणाम है. जिसके विचार लेखनी एक व्यक्ति के जीवन सन्दर्भो पर चली है, उनको कोटि-कोटि आभार.

आज जब धीरे-धीरे पुस्तकों का अवसान हो रहा है. कैसेट, टी.वी., रेडियो व किताबों की दुकानें बंद होती जा रही है. सिनेमाघर में शो-रुम खुल रहे हैं. टच स्क्रीन पर फिसलती उंगलियां किताबों के पन्ने खोलने में दर्द महसूस कर रही हैं. ऐसे समय में १२ वर्षो से 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन बहुत महत्वपूर्ण है. आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक भी आप पसंद करेंगें. आपकी प्रतिक्रिया हमारे राह को आसान बनाएगी.

ईश्वर शरण शुक्ला

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नवोन्मेष हेतु एक अभिनव स्थापना

संस्थापक-सरंक्षक

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं शक्तिस्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा

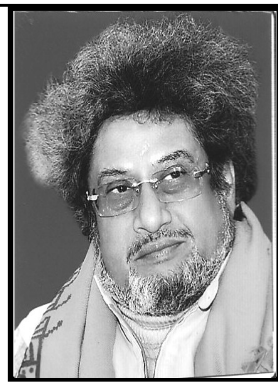

डॉ० प्रणव पण्डया

एमडी (मेडीसिन)

कुलाधिपतिः देव संस्कृति विश्वविद्यालय

प्रमुखः अखिल विश्व गायत्री परिवार

निदेशकः ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

संपादकः अखण्ड ज्योति (मासिक पत्रिका-८ भाषाओं में)

अध्यक्षः स्वामी विवेकानन्द योग अनुसन्धान संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)

मुख्य परिसरःगायत्रीकुंज-शान्तिकुंज विस्तार, हरिद्वार, उत्तराखंड-२४६४११

शुभ कामना संदेश

यह जानकर प्रसन्नता है कि नियमित रूप से राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' द्वारा समय-समय पर विविध विषयों पर केंद्रित विशेषांक निकालता आ रहा है. इसी क्रम में जून २०१३ का अंक 'डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व' को समर्पित है.

डॉ० द्विवेदी एक ऐसे व्यक्तित्व है, जिनका कर्म और मर्म दोनों उनकी रचनाधर्मिता में परिलक्षित होता है, बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० द्विवेदी पिछले दो दशक से राष्ट्रभाषा के उत्थान, प्रचार-प्रसार और नए आयाम प्रदान करने के लिए तन-मन-धन से कृत संकल्पित हैं. उनके इस सर्जनात्मक प्रयास एवं जुझारुपन का ही परिणाम है कि विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से देश-विदेश के राष्ट्रभाषा अनुरागियों को विविध सम्मानों से अलंकृत किया जाता है. आपके माध्यम से ही एक साथ इतने विद्वानों को एक मंच पर सम्मानित करने वाला देश का यह एकमात्र संस्थान है.

डॉ० द्विवेदी एक ओर हिन्दी साहित्य सेवा के लिए समर्पित रहे वहीं वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित युग साहित्य, आर्य वाङ्मय भाष्य के अनुरागी रहे हैं. इसीलिए 'अखण्ड ज्योति पत्रिका' के नैतिक-बौद्धिक एवं सामाजिक क्रांति के सूत्र उनके साहित्य में परिलक्षित होता है. लोक मंगल के लिए समर्पित सच्चे ब्राह्मण के गुण भी इन्होंने पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व से आत्मसात किया है. यही लोक मंगल की भावना आपमें जागृत हुई और आपने २००३ में स्नेहालय(अनाथाश्रम एवं वृद्वाश्रम) की नींव रखी.

विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका के जून अंक विशेषांक 'डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व' के प्रकाशन पर सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई ऋषियुग्म का स्नेह भरा आशीर्वाद.

(डॉ० प्रणव पण्डया)

सम्पादकीय पर टिप्पणियां

गोकुलेश्वर द्विवेदी जी संपादकीय 'भ्रष्ट्राचार शिष्टाचार का पर्यायवाची से पता चला कि भ्रष्टाचार को मूल से उखाड़ना ही धरती मां को बचाना है.

चंद्रशेखर देवाजी खुटेमाटे, रावलमाठ, विदर्भ, महाराष्ट्र

सम्पादकीय में निर्जल होता भारत के माध्यम से पानी की उपलब्धता तथा उसे दुरुपयोग को रेखांकित कर आपने गंभीर समस्या को उठाया हैं. बधाई.

डॉ. सुनील कुमार अग्रवाल, स्वप्निल सदन, रानी बाग, सुभाष रोड, चंदौसी, मुरादाबाद, उ.प्र.

सच्चे प्यार पे कुर्बान है-**'द्विवेदी'**
यारी करे तो यारों के यार है-**'द्विवेदी'**
और दुश्मन के लिए तूफान है **'द्विवेदी'**
तभी तो दुनिया कहती है अरे बाप
बहुत खतरनाक है **'द्विवेदी'**
इट्स द्विवेदी स्टाइल **'रॉक इन द्विवेदी'**
मो0: 08738001991

नरेन्द्र मोदी

मुख्यमंत्री, गुजरात
पांचवी मंजिल, ब्लाक नं०1, सरदार भवन,
नया सचिवालय, गांधीनगर, 382010,
गुजरात

सत्यमेव जयते

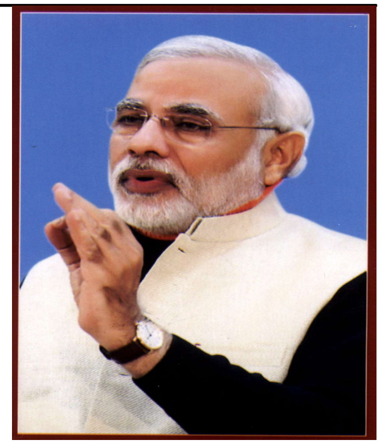

शुभ कामना संदेश

मानव सेवा में प्रवृत्त लोग व्यक्तिगत रूप से समाज एवं राष्ट्र को अपने कृतित्व द्वारा महत्वपूर्ण योगदान करते हैं. सेवा की अलग-अलग प्रवृत्ति और विविध स्वरुप में अपने विचार जन-जन तक पहुंचाकर राष्ट्र सेवा का अनोखा दायित्व निभाते हैं.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा विश्व स्नेह समाज मासिक का 'डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व' का विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है, यह जानकार खुशी हुई.

डॉ० द्विवेदी पिछले दो दशक से राष्ट्रभाषा के उत्थान, प्रचार-प्रसार और नये आयाम प्रदान करने के लिए तन-मन-धन से कृत संकल्पित है, और विविध संस्थानों से भी जुड़े हुए है. उनको हार्दिक अभिनंदन करते हुए दीर्घायु की कामना करता हूं. अंक की सफलता के लिए शुभकामना प्रेषित करता हूं.

प्रति:
श्री ईश्वर शरण शुक्ल
अतिथि सम्पादक विश्व स्नेह समाज

(नरेन्द्र मोदी)

हिन्दी सेवी, समाज सेवी व पत्रकार डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई

देवदत्त शर्मा 'दाधीच'

छोटी खाटू वाले
1431, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक,
जयपुर-302002, राजस्थान

निवासः दाधीच भवन, बी-23, कृष्णापुरी, पुराना रामगढ़ रोड, आमेर रोड, जयपुर-302002, राजस्थान
दूरभाषः (आ0)2630466, (का0) 2615835,
(फैक्स) 0141.2609750
मोबाइलः 9414251739, 9194610011
ईमेलःinfo@sidhifelt.com

डॉ० रत्नाकर पाण्डेय
पूर्व संसद सदस्य(राज्यसभा)
सदस्यः अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

फ्लैट नं० २-४, प्लाट नं०११३-११४,
कृष्ण कुंज, लक्ष्मी नगर,
दिल्ली-११००९२

मान्यवर श्री ईश्वर शरण शुक्ल जी

आपका पत्र मिला. यह जानकर खुशी हुई कि विश्व स्नेह समाज की ओर से गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी पर विशेषांक प्रकाशित हो रहा है. गोकुलेश्वर जी राष्ट्र सेवा एवं हिन्दी कार्यो के विकास हेतु विश्व स्नेह समाज तथा अन्य संस्थाओं के माध्यम से अनेक समारोह करते रहे हैं. उनके एक समारोह में मैं भी इलाहाबाद गया हूं. उनके अभिनन्दन से हिन्दी की नयी पीढ़ी का सम्मान होगा और उनके सामाजिक कार्यो से लोगों को प्रेरणा मिलेगी. विशेषांक के प्रकाशन के संदर्भ में मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें.

सादर

आपका
[signature]
(डॉ० रत्नाकर पाण्डेय)

श्री द्विवेदी एक वास्तविक हिन्दी सेवी व समर्पित पत्रकार है

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी हिन्दी सेवी होने के साथ हिन्दी सेवियों के भी सेवी है. श्री द्विवेदी पत्रकार होने के साथ पत्रकार सेवी भी है.

निः संदेह जिस मनोयोग से वह विश्व स्नेह समाज पत्रिका के माध्यम से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं वह किसी तपस्या से कम नहीं है. साहित्यिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन वर्तमान में दुरुह कार्य बन गया है. उनकी पत्रिका द्वारा समय-समय पर अलग-अलग विषयों पर प्रकाशित किये जाने वाले विशेषांक वास्तव में अत्यन्त लोकोपयोगी सिद्ध होते हैं.

अलावा इसके श्री द्विवेदी द्वारा प्रति वर्ष हिन्दी साहित्य सेवियों व पत्रकारों का सम्मान किया जाना भी उनकी हिन्दी व पत्रकारिता के प्रति समर्पण की भावना को ही दर्शाता है.

सीमित संसाधनों में इतना सब कुछ कर पाना वास्तव में किसी चमत्कार से कम नहीं है पर श्री द्विवेदी ने ऐसा न केवल कर दिखाया है वरन् वह ऐसा नियमित रूप से गत कई वर्षो से कर रहे हैं जो उनकी जीवटता का ही प्रमाण है.

श्री द्विवेदी जी के बारे में एक पंक्ति में इतना कहना कहीं प्रासंगिक व उचित होगा कि वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक वास्तविक हिन्दी सेवी व समर्पित पत्रकार हैं.

✍ **शिव शरण त्रिपाठी**
संपादक, द मॉरल, हिन्दी/अंग्रेजी साप्ताहिक, कराची खाना, कानपुर, उ.प्र.

हिंदी हेतु आपके यह स्तुत्य प्रयास सर्वथा श्लाघनीय हैं. मेरी मंगल कामनॉए व बधाई स्वीकारें. यथा अवसर रचना योगदान कर आपके सारस्वत यज्ञ में सम्मिलित होने की मेरी इच्छा हैं.

-**डॉ. रमेश मंगल बाजपेयी**, सीतापुर, उ.प्र.

राजनीति का अप्रिय चेहरा उजागर करके, दबी छिपी साहित्यिक प्रतिभा को मंच प्रदान करके आप आपना सामाजिक कर्त्तव्य निभा रहे है. -**अजयेद्रनाथ त्रिवेदी,** उपमुख्य राजभाषा अधिकारी, यूको बैक, गुवाहटी

आप की संपादकीय, राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के परिप्रेक्ष्य में संक्षिप्त टिप्पणी विचारणीय हैं. आपकी लेखनी में शोले का आगाज है. लोकतंत्र के सीने पर विराजते राजतंत्र की निरंकुशता पर तीखा प्रहार स्वागत योग्य हैं.

-**शिवेन्द्र त्रिपाठी,** ग्राम भारती संस्था, प्रतापगढ़

डॉ० **कौशलेन्द्र पाण्डेय,** वरीय साहित्यकार कानपुर, उ.प्र. से लिखते हैः

साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़े युवाओं के प्रेरणा स्रोतः गोकुलेश्वर जी

डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय

सम्पादकीय में द्विवेदी जी के पुरोवाक का पारायरा किया. इसके गांभीर्यजन्य चिन्तन पक्ष से बहुत उत्फुल्लित हुआ. कुछ पृष्ठों को पलटने पर तो मुझे लगा कि इस नई सामयिकी का सम्पादक अत्यन्त मेघावी, युगदृष्टा होने के साथ-साथ सारस्वत रुचि-अभिरुचि सम्पन्न भी है.

१३०, मारुतिपुरम, लखनऊ-१६उ.प्र.

यही कोई आठ साल पहले की बात है. गाजियाबाद से यू.एस.एम. पत्रिका के सम्पादक के साथ मैं भी था. यहां उन्हें पं. श्रीधर शास्त्री के नेतृत्व वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्तर से सम्मानित होना था. उनके माध्यम से तब मैं इलाहाबाद के कई साहित्यकारों से परिचित हुआ. इनमें स्वभाव से नितान्त शान्त गौरवर्णीय एक युवक भी था जिसने अपना हस्तामलक परिचय तो दिया किन्तु बहुत धीमी आवाज़ में. यूं मैं बहुत परिचित नहीं हो पाया था उनसे. बात आई और गई. लगभग दो महीने के अंतराल में मै उनकी रूपरेखा तक भूल चुका था, एक दिन 'विश्व स्नेह समाज' मेरे आवासीय पते पर प्राप्त हुई. सबसे पहले मैने सम्पादक का नाम पढ़ा-'गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी'. अनन्तर उनके पुरोवाक का पारायण किया. इससे गांभीर्यजन्य उनके चिन्तन पक्ष से बहुत उत्फुल्लित हुआ. दो चार पृष्ठ पलटने पर तो मुझे लगा कि इस नई सामयिकी का सम्पादक अत्यन्त मेघावी है, युगदृष्टा होने के साथ-साथ सारस्वत रुचि-अभिरुचि सम्पन्न भी. निश्चित रूप से सही दिशा ग्रहता की है श्री द्विवेदी ने. हाँ, तीन या चार छाया चित्रों में वह मंचासीन दिखे, तब यकायक मेरे मानस पटल पर उनकी रुपरेखा स्पष्ट हुई. उनकी पत्रकारिता दृष्टि से सर्वथा संतुष्ट मैने विभिन्न आकारीय रचनायें भी प्रकाशनार्थ भेजी, अक्सर भेजता रहा हूँ, प्रकाशित भी हुई है सभी. लगभग तीन वर्ष पूर्व पत्रिका के एक अंक में मेरा संक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित हुआ. बड़ी देर तक अंचम्भित रहा यह सोचते हुए कि उनकी मानसिकता अपनी पत्रिका के लेख की उपलब्धियों को सूची बद्ध करके संजोने और प्रसन्नता ग्रहण करने की है, किचितमात्र व्यवसायी नहीं है वह! वह अपना दायित्व समझते हैं, स्वयं ही उसके त्वारित निष्पादन में विश्वास भी करते हैं.

अपनी गार्हस्थिक दुश्वारियों के चलते केवल एक ही बार मैं साहित्य मेला में उपस्थित हो पाया हूँ. हिन्दुस्तानी अकादमी में था यह. मेरा सौभाग्य समझिये, तमाम कवियों और लेखनधार्मियों से खचाखच भरे सभागार में मुझे हिन्दी गौरव की उपाधि से अलंकृत किया गया था. जहाँ तक मेरे संज्ञान में है-वह दर्शनीय हैं भी- **'सहज सुभाव छुआ छल नाहीं.'** वस्तुतः अपनी संत मानसिकता के कारण द्विवेदी जी किसी के लिये भी नमनीय हैं. संदर्भित केवल एक ही उपस्थिति मैंने इन्हें अत्यन्त विनयशील और अत्युत्तम वक्ता रुप में देखा. हालांकि मंच से अलग ही रहे वह, वरीयता दी तो संस्था से सम्बन्धित अपने सराकरों को. साढ़े नौ बजे प्रातः ही मै पहुंच गया था हिन्दुस्तानी अकादमी तक. सभागार से बाहर लॉन में बड़ी तरतीब से धरी हुई मेजों पर प्रदर्शनी के लिये प्राप्त पुस्तकों तथा पत्रिकाओं को प्रदर्शित करने में उनकी तल्लीनता अप्रतिम थी. मैने मध्यम स्वर में उन्हें सहयोग करने की इच्छा प्रकट की. उन्होने दो क्षण के लिये अपनी पलके मेरी ओर तान दी, अनन्तर मुस्कुराये भी, नमस्कार की मुद्रा में आकर बोले-'अन्दर कई कार्यकर्ता हैं, अभी-अभी उनके पहुंचते ही सम्पन्न हो जायगा सब. आप हमारे अतिथि हैं, इतनी दूर से यहाँ तक आने से श्रमित भी है. सभागार में पहुंच चुकी केरल, छत्तीसगढ़, मुबंई, दिल्ली और कतिपय अन्य स्थानों की विभूतियों से आपको मिलवाऊँ; उनमें से कुछ तो साहित्य मेले में कई बार भाग ले चुके है, कुछ पहली बार ही

आये है, कुछ एक दिन पूर्व ही आ गये थे, और प्रथमदृष्ट्या ही मुझे वह अत्यन्त आत्मीय लगे. 'तथ्यतः मुझे सुखदतम विस्मयानुभूति हुई यह देखकर कि गोकुलेश्वर जी शिष्टाचार के महासमुद्र हैं.

लगभग पांच बजे तक रहा, गोकुलेश्वर जी के संयोजकत्व में सम्पन्न हो रहे सारे ही कार्यक्रमों का साक्षी. अनुभव किया कि सारे ही बन्धु द्विवेदी के स्तर से नियंत्रित और अनुशासित थे. फलस्वरुप अधिवेशन का समापन भी समय रहते हो गया था. भले ही प्रत्यक्षतः 'एंकरिंग' प्रखर वाजीपुत्र अंसार शिल्पी के जिम्मे दी. कार्यक्रम के दौरान ही नहीं, मध्याह्न भोजन के वक्त भी वह यथासंभव रुप से भिन्न स्थानों से आये अतिथियों से सम्पर्क करते दिखे, यह जानने के लिये कि भोजन उनकी रुचि के अनुसार रहा अथवा नहीं. यूं प्रत्येक दृष्टि से मैने उनके व्यक्तित्व को अन्यून पाया.

एक बात और जिसके उल्लेख के लोभ का मै संवरण नहीं कर पा रहा हूँ. पूरे दिन पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के प्रकाशन सातत्य, उसकी चित्रात्मकता, स्तंभ वैविध्य एवं सामग्री की स्तरीयता के साथ-साथ उसे गतिमण्डित करते ऊर्जा स्रोतो के बारे में सोचता रहा था. इस अंतराल में मुझे हिन्दी जगत की कई अच्छी-अच्छी साहित्यिक पत्रिकाओं की याद आई. इनके उत्साही सम्पादक, प्रकाशक कुछ महीने या दो एक वर्ष तक लेखको को उनका मंच देते रहे लेकिन बाद में वे या तो पक्षाघात से पीड़ित हो गई या सहसा ही हृदय गति रुक जाने से सर्वथा स्पन्दन शून्य! बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन को सारस्वत समृध्दि की पहचान देने वाली ''साहित्य'' पत्रिका भी कई बार निष्पन्द हुई, चेतनावस्था में भी आई; वर्ष २००८से अब तक के अंतराल में ऐसा ही स्वास्थ्य रहा उसका, वर्तमान में भी उसका नाम ही सभी के संज्ञान में है बस. गाजियाबाद के मेरे एक सम्मान्य मित्र के सम्पादन में नखशिख से विलक्षण पत्रिका दिल्ली दूरदर्शन के कुछ सेवा निवृत्त कर्मियों के सहयोग से प्रकाशित हुई किन्तु प्रवेशांक के बाद कोई भी अंक सुलभ नहीं हो पाया. इस अपरिस्थिति के मूल में एक ही बात है-अर्थन्यूनता. इसी कारण पूंजीपति वर्ग से संपोषित पत्रिकायें बड़ी पत्रिकायें समझी जाती है और उनसे अघिसंख्य निकर्षों पर उत्तम पत्रिकायें लघु पत्रिकाओं के नाम से जानी जाती हैं. अधिवेशन के दिन भाई गोकुलेश्वर अत्यधिक श्रमित थे, उन्हें अतिथि तथा स्थानीय आगन्तुकों कों ससम्मान विदा भी करना था तथा ऐसी ही कतिपय अन्य कार-गुजारियाँ भी निपटानी थी. .. तो मुझे उनसे इस बिन्दु पर कोई भी जानकारी करना उचित नहीं लगा था. लगभग एक सप्ताह पश्चात् मैने लखनऊ से दूरभाष पर ही उनसे बात की- सम्मान्य अनुज! पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का संपोषता कैसे कर पाते हैं, इसके जन्मने में प्राकृतिक अनुशासन कैसे बनाये रह पाते है आप? आये ेदिन प्रदेश और देश निर्वाचनों की चपेट में रहा करता है-तब उनसे काफी समय पहले ही सरकारी विज्ञापनों की किल्लत रहती है. तब कैसे अपना मनोबल बनाये रखते है.' अनुज! आहत न होना मेरे इस सवालों से. ये अस्लियतन सम्पूर्ण लघुपत्रिका जगत को दुखी रखते है. उत्तर में बोले वह- सहयोग राशि न देने वालों को भी मै धन्यवाद किया करता हूँ. सारस्वतः बन्धुओं का श्रम तथा सौहार्द-जन्य समर्पण भाव भी मुझे बड़ा सहयोग करता है, किन्तु सबसे बड़ी सहयोगी होती है परमेश्वर के प्रति मेरी आस्था! मुझे शक्ति मिलती है श्रीमद-भगवद् गीता के छठें अघ्याय के सोलहवें, किन्तु सत्रहवें श्लोक से विशेषकर. इसके अनुसार मै यथोषयुक्त आहार विहार करता हूँ, अपने लक्ष्य की दिशा में गतिमान रहने के लिये यथासंभव रुप से चेष्टाशील भी रहता हूँ. जरुरत भर की नीद ज़रुर लेता हूँ, जागते रहने के वक्त बिल्कुल ही सजग. कोई काम बन गया तो प्रभु को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ किन्तु किन्ही कठिनाइयों के मार्ग में आने पर पूर्णतथा अविचालित रहकर कुछ अतिरिक्त आस्था से उसे देख लेता हूँ. तथ्यतः नही समझता हूँ कि मैने अपनी ही सूझबूझ के इस्तेमाल से कोई सफलता पाई...अ अ अ .. आदरणीय! शायद मेरा उत्तर कुछ लम्बा हो गया! तो भी इतना और कह लेने की अनुमति दीजिये कि साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाले युवा को संत कबीर की उक्ति **''सीस उतारे मुंइ धरै तौ पइठे घर माहिं''** सदैव याद रखना होगा; यह भी कि तलवों को लहूलुहान करने वाले काँटे भी उसे अपने ही हाथों से निकालने पड़ते हैं.

वेशकीमती संदेश है यह आपके स्तर से. ....किन्तु अनुज आपके कर्माध यात्म को सुनकर मुझे बड़ा सुख मिला. साम्प्रतिक पीढ़ी के साहित्यिक पत्रकारों के लिये भी आपके ये सूत्रवाक्य समान रूप से दृष्टि-दा हैं. ..अब मैं आवश्वस्त हूं कि हमारी सामयिकी 'विश्व स्नेह समाज' एक दीर्घजीवी भविष्य की हक़दार बनेगी, आप भी स्वस्थ-सानन्द रहते हुए सौ वर्ष की अतिरिक्त आयु पायेंगे-ऐसी कामना है मेरी.

श्री हरिचरण 'वारिज' भोपाल, म.प्र. से लिखते हैः

बड़ा वही है जिसका व्यक्तित्व महान है

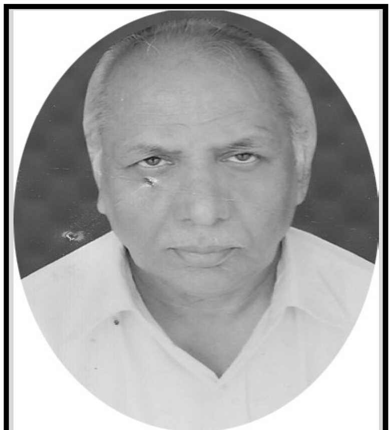

✍हरिचरण वारिज

यदि किसी व्यक्ति को आंतरिक रुप से डॉ० द्विवेदी जी को समझना है तो 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका की संपादकीय का कालम 'अपनी बात 'अवश्य पढ़े।

-ज्योतिष एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ
चित्रगुप्त नगर, कोटरा, भोपाल-४६२००३, म.प्र.

डॉ०गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी से मेरा पहला परिचय 2006 के साहित्य मेले में हुआ था. उन्होंने मुझे 'निराला सम्मान' देने के लिए आमंत्रित किया था. दरअसल डॉ० प्रमोद पुष्कर-भोपाल ने मुझे उनका पता दिया और कहा कि आप अपनी रचनायें उन्हें भेज दें. उसी वर्ष मेरी पुस्तक 'एक गीत की यात्रा' प्रकाशित हुयी थी.

हम उनका पण्डाल ढूढ़ते हुये उन तक पहुंचे. मैं थका थका महसूस कर रहा था क्योंकि भोपाल से इलाहाबाद का सफर काफी लम्बा है. जैसे ही डॉ० गोकुलेश्वर को देखा मैं दंग रह गया. एक दुबला पतला छोटे से कद का लड़का मेरे सामने था. जैसे ही मैंने अभिवादन किया वे तुरंत बोले पहले आप चाय पानी ले लें, उसके बाद हम आपको टेंट में पहुंचा देते हैं. बोली में मिठास, व्यवहार में गंगाजल सी शीतलता व्यवस्था के प्रति सजगता एक पल में परिलक्षित हो गया. चाय पीने के बाद हम टेंट में पहुंचे. वहां अनेक साहित्यकार देश के विभिन्न नगरो से आये हुये विराजमान थे. मैंने अपना परिचय दिया और सबसे अपना परिचय देने का निवेदन किया. एक कागज पर मैने नाम, पता, कविता की दो पंक्तियों का प्रारूप बना कर श्री मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक' की ओर बढ़ा दिया.

उनकी पक्तियां थी-

क्षत विक्षत हरे, तन के अंग भले कटते हैं/किन्तु राष्ट्र रक्षार्थ निष्ठ, रण में डटते हैं/धर्मयुद्ध में प्राण भले जाये तो जाये/पर न विजय से पूर्व वीर पीछे हटते हैं।

मैं देखता हूं कि डॉ० गोकुलेश्वर रण में न हो पर साहित्य क्षेत्र में वे डटे हुये है और विश्व स्नेह समाज तथा साहित्यिक अयोजनों से हिन्दी की महती सेवा कर रहे है. मैं कवि-सम्मेलनों का कवि होने के नाते अन्य अयोंजनों में कम ही जाता था. किन्तु डॉ० द्विवेदी ने मुझे बहुत उत्साहित किया. मैने उनसे निवेदन किया कि मेरी पुस्तक 'एक गीत की यात्रा' का विमोचन करवा दें. उन्होंने तुरंत पुस्तक की प्रतिलिपियों को सुन्दर ढ़ग से बंधवाया और श्री लक्ष्मी कान्त शुक्ल-सचिव, पंचायत एंव समाज कल्याण-उत्तर प्रदेश शासन द्वारा विमोचित करवाया. डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय जो संचालन कर रहे थे उन्होंने कहा 'वारिज जी कुछ छंद अपनी पुस्तक में गाकर सुनायें'. श्री लक्ष्मी कान्त शुक्ल जी ने भी अग्रह किया तो मैने कुछ छंद सुनायें-

कितना दर्द सहेजे ये मन
अब तो सहा नहीं जाता है
पीड़ाओ की गाथाओं को
जग से कहा नहीं जाता है।

मैंने अपनी दो तीन रचनाएं पढ़ी सुनकर, सुबह, सूचना एंव प्रसारण विभाग, नई दिल्ली के एक अधिकारी आये और मुझे बधाई दी तथा 'एक गीत की यात्रा' की प्रति मांगी. यह डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी जी का मार्ग दर्शन था कि मैं हर वक्त कविता पढ़ता गया जो उन्हें सम्मानार्थ भेजी थीं और मैंने वाह वाही लूटी. अगले वर्ष मुझे डॉ० राज कुमार शर्मा-संपादक दैनिक जागरण ने 'साहित्यरत्न' की उपाधि हेतु आमंत्रित किया.

डॉ० गोकुलेश्वर जी ने अनेक पुस्तकें मुझे दी थी. उनकी एक कम्प्यूटर की पुस्तक मेरी पोती कु० सृष्टि शर्मा जो अब 8वीं कक्षा में है बहुत काम आयी. यदि मै नयी रचनायें नहीं भेज पाता हूँ तो वे विश्व स्नेह समाज में पूर्व में भेजी गयी रचनायें प्रकाशित कर देते हैं जो यह वहां पड़ी रह गयी होती हैं. वैसे मै उन्हें हर वर्ष पत्रिका की सदस्यता राशि भेज देता हूँ किन्तु बिलम्ब हो जाय तो वे सदस्यता निरस्त नहीं करते वही स्नेह बनाये रखते हैं. यदि किसी व्यक्ति को आंतरिक रुप से डॉ० द्विवेदी जी को समझना है तो 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका की संपादकीय का कालम 'अपनी बात' अवश्य पढ़े. उनके शीर्षक

समसामयिक होते हैं और विचार मंथन होता है. सुधारवादी दृष्टि कोण, देशहित की बात. दिसंबर2011 में अपनी बात 'अन्ना का मकसद भ्रष्टाचार मिटाना या कुछ और...? 'अन्ना हजारे जी से मेरा नम्र निवेदन है कि इस आन्दोलन ने अपको एक गांव के नेता, अगुवा से देश का नेता बनाया है अतः आप भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज बुलंद कीजिए चाहे वह किसी भी पार्टी का भ्रष्टाचार हो, जनता से भ्रष्टाचारियों को वोट न देने की अपील कीजिए. अपनी गरिमा जो आप जनता के बीच बना चुके हैं वह बराकरार रखते हुए ही कार्य करें, आगे आपकी मर्जी?

जनवरी-2012 के अंक में वे 'अपनी बात वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा आखिर किसके हवाले?

उत्तर प्रदेश में पिछले वर्ष सभी थानों को यह निर्देश दिया गया था कि सभी वरिष्ठ नागरिकों की सूची बनाकर थानों में रखा जाये और उनकी सुरक्षा के लिए कारगार उपाय किये जाएं. बुजुर्गों के बदौलत ही हम संसार में हैं. कल हम भी बुजुर्ग होंगे.

'न मंदिर से, न मस्जिद से, न कॉलेज के दर से है पैदा।
दीन होता है फकत बुजुर्गों की नजर से पैदा।।'

नजर दौलत मानी जाती है. अतः डॉ० द्विवेदी जी का उपयुक्त कहना और उनका प्रबंन्ध करना वांछनीय हैं. वे एक वृद्धाश्रम से उक्त कार्य कर भी रहे हैं जो प्रशंसनीय हैं.

फरवरी-मार्च2012 अंक 'अपनी बात-सर्वोच्च न्यायलय का स्वागात योग्य फैसला।' हमें अपनी आवाज उठानी चाहिये. अगर हम गूंगे बने रहेगें तो हमारे नेता हमें बधुआ मजदूर बना देगे. जनहित को प्रभावित करने वाले कार्यो को खुलकर विरोध करें. ''डॉ० द्विवेदी ने लेखक वर्ग को सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से अवगत कराया और जागरुक किया.

इस प्रकार से डॉ० द्विवेदी बड़ी खुली आंख से और मस्तिक के तंतुओं को जाग्रत करके अपनी संपादकीय लिखते हैं. इसके अतिरिक्त 'विश्व स्नेह समाज' में जो स्थायी स्तम्भ हैं उनमें प्रेरक प्रंसग, जानकारी, इतिहास, समाज, शख्सियत, स्नेह बाल मंच, एस.एम. एस रचना, महिला रचनाकार, कहानी, स्वास्थ्य, लघुकथा, दाउजी की डायरी, चिट्ठी पत्रीं, कवितायें, साहित्य समाचार पुस्तक समीक्षा आदि के लिए उपयुक्त सामग्री पूरे देश से एकत्र कर पत्रिका को रुचिकर ही नहीं अपितु संग्रहणीय बना देते है.

मैं देश के अनेकों संपादकों से मिलता रहा हूँ जैसे धर्मवीर भारतीय, शरद जोशी, राजेन्द्र अवस्थी, सुरेश नीरव, श्याम सिहं व्यौहार, सत्यनारायण श्रीवास्तव आदि. इन सबका एक ही उदेश्य रहा कि हिन्दी प्रगति करें. हिन्दी राष्ट्रभाषा बने. डॉ० द्विवेदी जी हिन्दी की जो सेवा अपनी पात्रिका के माध्यम से कर रहे हैं यह हिन्दी के लिये गौरव की बात है.

उनके प्रति मै कहूंगा-

हर मानव में बड़प्पन का हर तत्व समान है।
विस्तृत और यश्स्व पर ही स्थित्व जहान है।।
यूं तो दुनिया में सभी अपने को बड़ा कहते हैं,
किन्तु बड़ा वही है जिसका व्यक्तित्व महान है।।

वे दीर्घजीवी हों और मां सरस्वती की तथा देश की अपने नये नये विचारों से सेवा करते रहें यही मंगल कामना।

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती. 3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजें. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी. 4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें. 5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें. 6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें. 7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयोग प्रदान करें. ❑संपादक

श्री रमेश चंद्र त्रिवेदी 'पुष्प', पीलीभीत, उ.प्र. से लिखते हैः

अभिनन्दनीय व्यक्तित्व एवं कृतित्व

रमेश चंद्र त्रिवेदी 'पुष्प'
उपसभापति, सनातन धर्म सभा
350, सुनगढ़ी, पीलीभीत, उ.प्र.

वय में लघु होते हुए भी प्रियवर द्विवेदी मेरे श्रद्धेय इस हेतु बन गये कि उनके प्रथम स्नेह भरे पत्र ने मेरे हृदय में वह श्रद्धा, स्नेह का भाव भर दिया कि वह दूर होते हुए मेरे अपने सगे संबंधी से अधिक हो गये. मैं अल्पज्ञ उस महान व्यक्तित्व के धनी पुरोधा, सफल सम्पादक, सफल संयोजक और साहित्य यज्ञ के यजमान को विषय में जितना भी लिखूं थोड़ा ही होगा. मुझे आपने इस योग्य समझा इसके लिए मैं आपक सदैव आभारी रहूंगा और यह अवसर हाथ से नहीं जाने दूंगा कि अपने परम श्रद्धेय अनुज द्विवेदी जी के पावन चरणों में अपने श्रद्धा के सुमन चढ़ाने का प्रयत्न अल्प बुद्धि के अनुसार करूंगा. वह मेरे श्रद्धेय है और भविष्य में रहेगें. उन्होंने अपना स्नेह देकर मुझे विश्व स्नेह समाज से जीवन भर के लिए जोड़ लिया है. इसके लिए मैं उनका चिर काल तक ऋणी रहूंगा.

समाज परम पिता परमात्मा का साक्षात स्वरूप है और उसकी सेवा जो तन मन धन से करता है वह व्यक्ति सम्मानीय हो जाता है. ईश्वर अंश जीवन अविनाशी के अनुसार 'द्विवेदी जी इनके ही स्वरुप सम्मान करने योग्य है. द्विवेदीजी के यदि नाम की विवेचना की जाये तो वे गोकुल में नन्द यशोदा पुत्र के रूप में साक्षात भगवान श्री कृष्ण के अवतार है. जिन्होंने अपने चक्र सुदर्शन से राक्षसों, दुष्टों का विनाश किया था तथा अपने सनातन धर्म की रक्षा की थी. वे विनम्रता के मूर्ति थे और छोटे से छोटे कार्य को करने में कभी संकोच नहीं करते थे. महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अपने हाथों जूठी पत्तले उठाने का कार्य करके इसका परिचय दिया था. इसी प्रकार अपने द्विवेदी जी ने अपनी कलम रूपी तलवार से अताताइयों, भ्रष्टाचारियों, आतंकियों, नारी शक्ति का अपमान करने वालों के विषय में अपने सम्मादकीयों में उनकी रक्षा करने का कार्य बड़ी तन्मयता, लगन और श्रमशीलता से किया है. मैं उनका हर संपादकीय लेख जरूर पढ़ता हूं और उससे मुझे प्रेरणा भी मिलती है. इस तरह मेरे सम्मानीय और प्रेरक भी है.

'दूर होकर भी किसी के प्रार्थना के आधार हो तुम.'

आज की दुनिया में ऐसे अनेकों लोग मिलेंगे जो अपनी वाणी, व्यवहार, त्याग, सेवा आदि में ऊपर से कुछ और होते है और अन्दर से कुछ और. मैंने जहां तक उनके क्रियाकलापों से उनको समझ पाया है कि वे इन दोहरे जीवन यापन करने वालों से अलग है. उनकी 20 वर्ष की सटीक साधना, तपस्या, त्याग, विद्वता इसका साक्षात प्रमाण है. उन्होंने अपने हर रूप में विनम्रमता की अदभुत मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया जो वृक्ष की डाल जितना झुकती है उसमें उतने ही अधिक फल होते है. द्विवेदी जी एक वट वृक्ष की छाया के नीचे सहस्त्रों साहित्य सेवियों को उच्च स्थान पर पहुंचाकर आदरणीय बना दिया है. आप गंगा यमुना, सरस्वती देवी के संग तट पर निवास करते हैं. उनकी आप पर विशेष कृपा है और बनी रहेगी क्योंकि समाज भी एक साहित्यिक धरोहर है. आपके जीवन से समाज सेवा भाव की प्रेरणा लेता रहेगा और सच्चे समाज, साहित्य सेवी के रूप में जाने जाते रहेंगें.

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि आप साहित्य उद्यान के सुन्दर सुरभित, सुमन की तरह अपने सौरभ से समाज को सहस्त्रों वर्षो तक सुरभित करते रहे. आपकी गंध से नये नये सुमन खिलते रहे और समस्त साहित्यिक सेवा भावी समाज आपको आदर्श मानता रहे. मानव शरीर नश्वर है. व्यक्ति अपने क्रिया कलापों के कारण ही अमर रहता है और समाज प्रेरक केन्द्र बन जाता है. उसके बाद वह कहां होगा और हम कहां. एक बार सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. फतेह सिंह जी से मैं उनके जीवन के अन्तिम क्षणों में मिला तो मैंने उनसे पूछा कि डॉ. साहब अब आप हमें कहां मिलोगे. उनके मुख से तुरन्त निकला कि इसके बाद मैं तुम्हें पुस्तकों में मिलूंगा. हर साहित्यकार की यही स्थिति होती है.

यूं तो गुलशन में गुल है बहुत से खिले
एक अपना मगर गुल हजारों में है
जर्रा जर्रा जमी का महकने लगा
ऐसी चर्चा चमन की बहारों में है।

श्री बंशी लाल 'पारस', भीलवाड़ा, राजस्थान से लिखते है:

संवाद सर्जक, विवाद विसर्जक है श्री गोकुलेश्वर

✍बंशी लाल 'पारस'

आपके द्वारा उपदिष्ट एवं व्यवहृत जीवन दर्शन अभिनंदनीय व अनुसरणीय है. आप अवसाद को आनन्द में बदलने के सारस्वत अनुष्ठान में रत है. आपका श्रेष्ठ संपादन जागतिक दस्तावेज है. आपका सम्मोहक व्यक्तित्व अनुराग जनक है. आप एक मानवीय जिजीविषा के उर्जस्वित स्वर है.

-नियामक-सामयिकी मासिक
ओशो कुंज, ट-१४, बापू नगर, भीलवाड़ा
राजस्थान-३११००१, दू० ०१४८२२४०३७१

एक संज्ञा को कई विशेषणों से समलंकृत कर जो संपन्न संज्ञा सूर्योदय की भांति ऊपर उठेगी वह जब सम्बोधन का रूप धारण करेगी तो वह नाम होगा गोकुलेश्र कुमार द्विवेदी! आप में निरभ्र निस्सीम आत्मीयता का आभास होता है. आप द्वारा आयोजित आयोजनों में जन मानस भाव विभोर होता है. आपमें नर्वदा की निर्मलता, सतपूड़ा की गम्भीरता एवं विध्याचल की नम्रता का सहज दर्शन होता है. आपकी समर्थ लेखनी से व्यास परम्परा का सम्पोषण, संवर्धन एवं संरक्षण अविरल गति से हुआ है. आपकी हिन्दी निष्ठा एवं राष्ट्रन्मुखी निष्ठा के मूर्त रूप धर्म तथा आर्यावर्त की अनाविल सांस्कृतिक परम्परा के वर्तमान कालिक सबल हस्ताक्षर है. आपकी लेखनी में मां वीणापाणि का निवास है. आपका संपूर्ण जीवन सांस्कृतिक आस्था से आपकी दृष्टि अप्रतिम है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की मुहूर्तवन्त प्रक्रिया को अनूठे अनुष्ठान वत सतत रखते हुए शुभ परिणाम तक पहुंचाया है. आपके द्वारा संपादित विश्व स्नेह समाज पत्रिका ने बाहृय और भीतर से जीवन मूल्यो को सुरक्षित रखने के उत्तर दायित्व को बखूबी निभाया है. रचनाओं का चयन सुधी दृष्टि का परिचायक है. पत्रिका साहित्य एवं संस्कृति पर छाये तामसिक प्रदूषण के घेरे को तोड़ने में सक्षम है.

योगः कर्मसु कौशलम् आपका परम ध्येय है।/सर्वे भवन्तु निरामयाः आपके आराद्य भाव है.

आज के आपाधपी युग में हिन्दी व हिन्दी सेवियों की सेवा करना एक अघोषित तप है. आपके द्वारा उपदिष्ट एवं व्यवहृत जीवन दर्शन अभिनंदनीय व अनुसरणीय है. रिस्तों की गर्माहट हमारे जीवन की संजीवनी है. आपका अपनापन जीवन यात्रा को अमृतमय अर्थवान बनाता है. आपके वक्तव्य में मुझे मीरा का दर्द, रैदास की पीड़ा, सूरदास की तकलीफ, कबीर, नानक, तुलसी की तड़फ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है. आप जन्मजात यातना के सूर्य पुरूष है. आप अवसाद को आनन्द में बदलने के सारस्वत अनुष्ठान में रत है. आपका श्रेष्ठ संपादन जागतिक दस्तावेज है. आपका सम्मोहक व्यक्तित्व अनुराग जनक है. आप एक मानवीय जिजीविषा के उर्जस्वित स्वर है. शील सौजन्य के प्रतिमान आपकी निकटता बोध सबको शीतलता और आत्मीयता प्रदान करता भातृभाव पूजाई बनाता है. आपका जीवन अनभ्र आकाश की तरह स्वच्छ है. आपके चरित्र में अनाघ्रात पुरुष जैसी सुकोमलता है और वज्र जैसी सुदृढता भी! आपका स्वभाव अनबिंधे मोती की भांति निष्कलुष है. विनय सम्पन्न स्वभाव अनुद्धिग्न चित्त स्थितप्रज्ञता की द्युति मंडित है. आपका व्यक्तित्व इतना पुष्कल एवं प्रभूत है कि इस थोड़े से कालखण्ड में शब्दसीमा में बांधना मुझ साधारण के लिए संम्भव नहीं! आपके व्यक्तित्व व कृतित्व पर अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन मानवीय गुणों से संपृक्त मनुष्यों का परमधर्म है.

यह वाङ्ग्मय मधुपर्क अर्पित कर मेरा मन आपके अकलुष प्रज्ञामंडित भास्वर तपोनिष्ट व्यक्तित्व एवं कृतित्व की दिव्याभा के आत्मसात आनन्दातिरेक से अभिभूत है. अक्षर के उपासक अग्निपथ के पथिक को मेरे शत शत चंदन वंदन! आप ऋषियों द्वारा प्रतिपादित शतवर्षीय जीवन अदीन आयुष्य का भोग करें.

एक फरिस्ता उतर आया जमीं पे
आज आदमी की शक्ल में
दुनिया वालों आओ अपनी आंख
हो तो देख लो
जब तक चमके सूर्य चन्द्रमा जब
तक है यह संसार
मेरे अन्तरंग आत्मीय तुम्हारा यशा
गाये सारा संसार

श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश', सचिव साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़, उ.प्र. से लिखते हैः

हिन्दी विकास के अग्रदूतः डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

नवीन कल्पनाओं में नवीन संकल्पक, सरलता के दोषी, सहृदयता के आरोपी, सत्य लिखने के कलंकी, अनुभूतियों के चतुर चितेरे, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, पूर्णतः हिन्दी भाषा व साहित्य को समर्पित, कर्तव्यनिष्ठ समाज सेवी द्विवेदी जी का नाम हिन्दी सेवा एवं साहित्य के क्षेत्र में सूर्य की भांति देदीप्यमान है. वे मौलिक एवं शोध परक रचनाओं के लिए विख्यात हैं. ज्ञान की दृष्टि से आपकी रचनाएं मील का पत्थर है.

✍ **वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'**
परियावां, प्रतापगढ़, उ.प्र. २२६४०८,
मो०: ९९५९६०१९८०

उदान्त चिन्तन के मनीषी, व्यष्टि में समष्टि के संस्थापक, लोक हितार्थ सदा समर्पित, भाषा भाव शिल्प के कुबेर, नवीन कल्पनाओं में नवीन संकल्पक, सरलता के दोषी, सहृदयता के आरोपी, सत्य लिखने के कलंकी, अनुभूतियों के चतुर चितेरे, अध्यात्म एवं दर्शन के मर्मज्ञ, महान शब्द शास्त्री, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, पूर्णतः हिन्दी भाषा व साहित्य को समर्पित, जन-जन तक अपनी रचनाओं की सुवास को प्रसारित करने वाले, कर्तव्यनिष्ठ समाज सेवी, उदारमन हृदय, विश्व स्नेह समाज मासिक के संपादक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी का नाम हिन्दी सेवा एवं साहित्य के क्षेत्र में सूर्य की भांति देदीप्यमान है. उनका नाम विशेष रूप से साहित्य एवं हिन्दी सेवा तथा शिक्षा के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में आदर से लिया जाता है. वे सच्चे मायने में भारतीय सांस्कृतिक चिंतन के प्रज्ञा पुरुष है. वे विवेकानन्द विचारधारा के चिंतक माने जाते हैं. पत्रिकाओं एवं पत्रों में उनके लेखों का विषय सदैव से राष्ट्रोन्मुखी रहा है. सम्पादन कला के वे मर्मज्ञ माने जाते हैं. उनकी अधिकांश रचनाएं शोधपरक एवं विज्ञान सम्मत मानी जाती है. वे मौलिक एवं शोध परक रचनाओं के लिए विख्यात हैं.

उन्होंने अपने सम्पूर्ण वाङ्गमय को नवीन चिन्तन द्वारा और भी ऊर्जावान बनाने का प्रयास किया है. मैं यहा द्विवेदीजी के लेखन पर अपना मत व्यक्त करना उचित नहीं समझता क्योंकि उन पर अन्य लेखकों के विचार छप रहे हैं. उनके जीवन विषयक पहलुओं पर भी अन्य विद्वानों के विचार आए हैं. किन्तु मैं इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि उनका सम्पूर्ण रचना संसार अद्वितीय, अकल्पनीय एवं कालजयी है. उनके साहित्य संसार ने उनकी अमरता को सुनिश्चित कर दिया है. द्विवेदीजी की पत्रिका विश्व स्नेह समाज देश की गिनी चुनी हिन्दी पत्रिकाओं में से एक है. जिसका एक मजबूत पाठक वर्ग है. पत्रिका अपनी विशिष्टता के कारण कुछ अलग ही पहचान बनाए हुए है. यह पत्रिका सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों तक में पढ़ी जाती है.

हिन्दी साहित्य के बड़े बड़े आयोजनों करना और उसके माध्यम से विविध विषयों पर परिचर्चा करना-कराना, विद्वानों का सारस्वत सम्मान करना आपकी महत्वपूर्ण योजना है. आप अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी के विकास एवं उन्नयन के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं. यह आप पर परमात्मा की असीम कृपा और आपकी श्रम तपस्या है जो अल्पायु में सम्मान प्राप्ति की उन बुलन्दियों को छू रहे हैं जो अच्छों को बुढ़ापे तक प्राप्त नहीं होती है. आपको अगणित सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हो चुके है. शिक्षण काल से ही आपकी साहित्यिक यात्रा निरन्तर चल रही है. आप जीविकोपार्जन के कार्यो से समय निकाल कर अपनी कृतियों का प्रणयन तो करते ही हैं तमाम समय अपनी पत्रिका में देते हैं. इसके अलावा अन्य पत्रिकाओं एवं पत्रों में लिखते रहते हैं. यह उन्हीं के वश की बात है कि वे दर्जनों पत्रों के उत्तर भी हर रोज देते हैं. समय समय पर साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए देश भर में भ्रमण भी करते रहते हैं. ज्ञान की दृष्टि से आपकी रचनाएं मील का पत्थर है. अधिकांश रचनाएं भावना प्रधान राष्ट्रीय चेतना परक विसंगतियों पर कुठाराघात करने वाली हैं. आपको हर विधा में लिखने की महारत प्राप्त है. राष्ट्रीयता का बिम्ब आपकी पुस्तकों में संजीवता से देखा जा सकता है. आपकी रचनाएं पाठकों के ऊपर गहरा प्रभाव डालती है. देश भर में आपके इष्ट मित्रों शुभ चिन्तकों की संख्या अनगिनत है. हिन्दी के प्रति आपका

लगाव श्लाघनीय है. सामाजिक कार्यों में भी आप बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं. द्विवेदी जी जरूरत मंदों का सहयोग भी करते रहते हैं. उनके जीवन का उद्देश्य भी साहित्य एवं समाज सेवा है. उनका सारस्वत व्यक्तित्व अत्यन्त सरल, समृद्ध एवं गगनचुम्बी है. उनके अपनत्व में देवत्व का आभास होता है. परिश्रम, संघर्ष एवं सृजनशीलता द्विवेदी जी को साहित्याकाश के उन नक्षत्रों के बीच ला खड़ा किया है जिसका प्रकाश सदैव प्रज्जवलित होता रहेगा. वे आत्म विज्ञापन से काफी दूर रहते हैं. आपकी उदारता, सरलता, सहृदयता, मृदुभाषिता नमनीय है. आपके गुणों के कारण ही आपके व्यक्तित्व की एक अलग ही तस्वीर साहित्य जगत के विशाल फलक पर उभर कर आती है. वह है सच्चे रचनाकार की तस्वीर.

अन्त में कहना चाहूंगा कि आप पर एक भव्य स्वागत ग्रन्थ छपना चाहिए था. फिर भी आप पर एक विशेषांक का प्रकाशित होना ही एक बड़ी उपलब्धि है. आपका रचना संसार व हिन्दी सेवाएं व्यापक है. द्विवेदी जी की भाषा ओजपूर्ण और बोधगम्य है. कथ्य-तथ्य एवं कला शिल्प की दृष्टि से आप एक समर्थ रचनाकार है. आपकी अनुकरणीय साधना निश्चय ही आपको 'महामानव' निरुपित करती है. आपका अदम्य साहस आपको साहित्यकांक्षा की 'चन्द्रलोक' पर स्थापित करती है. आपकी रचना धर्मिता अभिनन्दीय है.

मैं डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक की सफलता की कामना करता हूं तथा ईश्वर से कामना करता हूं कि श्री द्विवेदी जी स्वस्थ रहते हुए शतायु हों तथा अनवरत मां भारती के भण्डार को परिपूर्णित करते रहे.

पत्रिका के प्रकाशन के १२वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये .... नकद/ धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक.................................दिनांक...........

बैंक का नाम...

2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :..

पता :..

....

....पिन कोड..........

दूरभाष/मो0...........................ईमेलः................................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.

03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/-	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/-	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/-	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/-	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/-	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद -211011, उ.प्र. ई-मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

श्री राजेश कुमार सिंह, बायोवेद शोध प्रभारी, इलाहाबाद, उ.प्र. से लिखते हैः

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

✍ **राजेश कुमार सिंह**

तन से निर्मल, मन से बेजोड़, भावों से सरल सहज से दिखते हैं. तन-मन-धन से समर्पित होकर राष्ट्रभाषा को समृद्ध करने में प्रयासरत रहते है. बाल्यावस्था से ही समाज की सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रहे डॉ० द्विवेदी हर परिस्थितियों में दूसरे के दर्द को अपना दर्द समझने में सतत तत्पर रहे हैं.

-235डी, किदवई नगर, अल्लापुर, इलाहाबाद-211006

साहित्य माानव मन की कोमल अनुभूतियों की संवेदनाओ को जन्म देते है. जिसकी साधना से व्यक्ति कल्याण की भावना से प्रेरित होते है. तकनीकी शिक्षा में महारत हासिल होने के बावजूद भी इन्हीं भावों को संयोजकर डॉ० द्विवेदी ने साहित्य और समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित कर अपने सार्थक उद्देश्य को अग्रसर किए हुए हैं. गोकुल, मथुरा, उ.प्र. में जन्में, बाल्यकाल में ग्राम-टीकर, पो०टीकर, जनपद देवरिया, उत्तर प्रदेश में रहने वाले डॉ० द्विवेदी साहित्य समाज और राष्ट्र के लिए अपने को समर्पित कर देने के उद्देश्य से पावन प्रयाग की पवित्र भूमि नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद में व्यवस्थित है.

अर्थाभाव और पाठकों की अध ययन उदासीनता के बावजूद विगत १२ वर्षो से राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का सफलता पूर्वक सम्पादन और निंरतर प्रकाशन का निर्वाह बखूबी कर रहे हैं. राष्ट्र के कोने-कोने से विशेष प्रशंसा प्राप्त कर रहे है. आज के साहित्यिक माहौल में यह कार्य अन्य सम्पादकों के लिए टेढ़ी खीर के समान है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के अन्तर्गत राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान हेतु डॉ० द्विवेदी मील के पत्थर के समान पहल करते है. तन से निर्मल, मन से बेजोड़, भावों से सरल सहज से दिखते हैं. हर वक्त, हर जगह एक ही जैसे रूप में सजग मिलते है. तन-मन-धन से समर्पित होकर राष्ट्रभाषा को समृद्ध करने में प्रयासरत रहते है. इच्छा वचन जिम्मेदारी कड़ी मेहनत चरित्र सकारात्मक सोच दृढ़ता सफलता के प्रत्येक गुण डॉ० द्विवेदी के मन वचन और कर्म में विद्यमान है.

डॉ द्विवेदीजी साहित्य की सेवा में राष्ट्रीय क्षितिज पर दैव्यीयान नक्षत्र के रूप में जगमगा रहे है. देवरिया से लेकर दिल्ली तक, इलाहाबाद से लेकर औरंगाबाद तक हिन्दी की अलख निरंतर प्रज्जवलित कर रहे हैं. विज्ञापन विहीन पत्रिका को साहित्य से सराबोर कर सात समुन्दर तक पहुंचा कर अपने कर्मठ और सृजनशील व्यक्तित्व को रेखांकित कर रहे है. डॉ० द्विवेदी अपनी सृजनात्मक क्षमता से साहित्यिक रचनाधर्मिता को युग बोध से संल्पवक्त कर रहे है. इस कार्य में उनका चिंतन मुख्य भूमिका निभा रहे है. डॉ० द्विवेदी ने राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' में सम्पादक की कलम से' सम्पादकीय लिखने की एक नई बेवाक शैली ईजाद किए है. इससे हिन्दी भाषी प्रदेशों में आपकी एक नई पहचान बनी है. हिन्दी जगत में यह व्यापक रूप से परिलक्षित हो रही है.

विगत दो दशक से डॉ० द्विवेदी विविध क्षेत्रों जैसे साहित्यकार, शिक्षक, कम्प्यूटर विशेषज्ञ, चिकित्सक, बहुआयामी सृजनशील पत्रकार, लेखक, समाजसेवी, संपादक के रूप में सक्रिय होकर विशिष्ट ख्याति अर्जित किए है. सैकड़ों मंचों का सफलतापूर्वक संचालन करने के साथ राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रमुख वार्ताकार के रूप में विशिष्ट पहचान बना ली है. अब तक लगभग पन्द्रह पुस्तकों का सम्पादन आप कर चुके है.

डॉ० द्विवेदी बिना सरकारी अनुदान के भी साहित्य का आयोजन कर रहे है. प्रत्येक वर्ष देश के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विद्वतजनों, साहित्य सेवियों, कवियों का सम्मान राष्ट्रीय स्तर के साहित्य मेला में इलाहाबाद में करते आ रहे है. युवाओं को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन डॉ० द्विवेदी की अनूठी पहल है. आज के परिवेश में यह एक सामान्य कार्य नहीं है. सुदुर प्रान्तों में राष्ट्रभाषा के समर्पित मनीषियों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक विशेषांक अब तक प्रकाशित कर चुके है. कम्प्यूटर विशेषज्ञ

डॉ० द्विवेदी की 1992 से लगातार देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख कहानियां, संस्मरण आदि प्रकाशित हो रहे है. मुख्य पत्रों में हिन्दी दैनिक 'आज', दैनिक जागरण, अमर उजाला, सहारा, न्यायाधीश, युनाइटेड भारत, अक्षर भारत, पाक्षिक परख, मानसी कहानियां, सरस सलिल, मुक्ता सहित देश की लभगभग एक सौ से भी अधिक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित है. हिन्दी मासिक 'विश्व एकता संदेश' में 'क्यों खिलौना बनी हुई मुस्लिम महिलाएं' नामक लेख में संपादक द्वारा विशेष रूप से प्रशंसित और लेख के ऊपर अंक में सम्पादक की विशेष टिप्पणी छपी.

डॉ० द्विवेदी जी बाल्यवस्था से ही समाज की सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं. कक्षा तीन में पढ़ते समय अपने पिता को डाकघर लोगों के पैसे जमा करते देख, उनसे इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर गरीब बच्चों के हितार्थ बाल बचत बैंक की स्थापना कर गरीब छात्रो को रबर, पेंसिल, रिफिल, कॉपियां आदि उपलब्ध कराने का कार्य किये. अल्प बचत से इस बैंक को व्यक्तिगत स्तर पर खड़ा करके कक्षा पांच तक जारी रखे. कक्षा ८ में पढ़ते वक्त देवरिया में रहने वाली एक असहाय वृद्धा के सहायतार्थ एक कम्बल, रजाई खाने के कुछ समान दिये. इलाहाबाद मे आने पर गरीबों के सहायता करने के लिए प्रतिदिन एक घंटे ट्यूशन पढ़ाना चालू किए. अपने एक कम्प्यूटर के सहपाठी के लिए कम्प्यूंटर सेंटर खोले. समाज सेवा के लिए 15 जून 1996 को जी.पी.एफ. सोसायटी नामक एक सामाजिक संगठन की अवधारणा रखे. जो बाद में चलकर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के नाम प्रचलित है. वृद्ध और अनाथ लोगों के सहायतार्थ 'स्नेहालय' का संचालन कर रहे हैं. हर परिस्थितियों में दूसरे के दर्द को अपना दर्द समझने में सतत तत्पर रहे हैं. चाहे भूकम्प पीड़ितों की सहायता करने के लिए धन एकत्र करना हो या निराला जी की तरह असहाय वृद्ध की सेवा करना हो जैसे कार्य में अग्रणी रहे हैं. 1925 में स्थापित और लंबे अर्से से बंद पड़े अंध विद्यालय एवं शरणालय को 1998 में चालू कराने में भरपूर सहयोग दिया. स्नेहालय की स्थापना कर इसको संचालित कर रहे हैं. हिन्दी महाविद्यालय के निर्माण के क्षेत्र में दृढ़ संकल्पित है. इसके लिए झुझलाने और अकुलाने के बजाय धैर्य और दृढ़ता से संभव बनाने हेतु प्रतिबद्ध है.

बाल्यकाल से जिस सेवाभाव का बीजारोपण डॉ० द्विवेदी के हृदय में हुआ उसका विशाल वृक्ष आज फलों से लदकर तैयार है. हिम्मत उठाकर अपने जो पांव उठाए है उसमें अब पंख लग गए हैं. मेहनत के लिए उठे दोनों हाथों में अथाह बल आ गए हैं. श्रम से सुख ले रहे हैं और सभी कुछ सुखद और आनंदमय दिख रहे हैं. बहुमुखी गुणों से सम्पन्न डॉ० द्विवेदी अब केवल हँस ही नहीं रहे है अपितु अन्य सभी को हँसने को प्रेरित भी कर रहे हैं. अपने स्तुत्य कार्य को राष्ट्र के कोने-कोने में फैलाये रखने हेतु प्रतिबद्ध एक टीम की सख्त आवश्यकता महसूस कर रहे हैं.

ब्रज भूषण चतुर्वेदी 'बीबीसी' को सम्मानित करते हुए डॉ० द्विवेदी

हिन्दी जमीन से जुड़ी हुई भाषा है। इसका सदा प्रयोग करें। हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग से ही इसे बढ़ावा मिलेगा. दाउजी

यादों को हमने खोने न दिया, गमों ने हमें चुप होने नहीं दिया, आंखे जो आज भी भर आई उनकी याद में, पर उनकी हंसती हुई सुरत ने हमे रोने ना दिया। मो० ०८६५७१२४४६०

श्रीमती विजय लक्ष्मी 'विभा', इलाहाबाद, उ.प्र. से लिखती हैः

जितने आस्थावान उतने ही ऊर्जावान है गोकुलेश्वर

श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा

आज मैं गोकुलेश्वर की क्षमताओं का आंकलन किया करती हूं. अपने काम के प्रति कितना आस्थावान और कितना ऊर्जावान है यह नौजवान जिसने चंद सालों में इतनी बड़ी संस्था बना डाली और नामानुकूल उसे स्थापित कर दिखाया.

-साहित्य सदन, १४६जी/२, चकिया, इलाहाबाद-२११०१६

भीड़ के अनवरत प्रवाह में आहस्ते -आहस्ते अपनी राह बनाते, लक्ष्य को आगे रखकर धक्कम धुक्की सहते हुये क़दम बढ़ाते, कभी लोगों की तानाकशी के प्रहार झेलते, कभी थोड़ी सी कामयाबी हासिल होने पर विजय का रौब लिये से समाज सेवा का भारी बोझ कांधों पर रखे, साहित्य जगत का एक नन्हा सैलानी जब पहली बार मुझसे मिलने मेरे घर आया था तो मैंने उसे एक बच्चे की भांति, उसे उसकी लगन उत्साह और कर्मठता के लिये भरपूर सराहा था और उसकी सफलता के लिये आशीर्वाद दिये थे. आज वह बच्चा एक सशक्त नौजवान है और उसका अभियान एक वटवृक्ष का रूप लेकर चतुर्दिक अपनी शाखाएं फैला चुका है. आज वह डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी के नाम से, एक अच्छे लेखक, पत्रकार, समाज सेवी, साहित्यकार एवं संपादक के रूप में जाना जाता है.

सन् २००३ या चार की बात रही होगी. गोकुलेश्वर ने मुझे एक मीटिंग में बुलाया था. उन्होंने मीटिंग स्थल तक पहुंचने के लिए वाहन की व्यवस्था भी की थी. मीटिंग में कोई आठ-दस लोग उपस्थित थे. संस्था जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम परिवर्तन का प्रस्ताव सर्वप्रथम रखा गया. सर्वसम्मति से अखिल भारतीय हिन्दी सेवी संस्थान नाम रखा जाना तय हुआ. मुझे यह नाम कुछ सुना हुआ सा लगा. मैंने कहा 'गोकुलेश्वर, यह नाम तुम्हारी कर्मठता, तुम्हारे उत्साह और लगन को देखते हुए कुछ ढीला-ढाला सा लग रहा है. इसमें चुस्ती और फुर्ती दोनों ही नहीं है. अखिल भारतीय हटाओ और विश्व हिन्दी साहित्य सेवी संस्थान कर दो कैसा रहेगा?

सभी ने सर्वसम्मति से विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान रखने का निर्णय लिया. हिन्दी सेवा का हमारा संकल्प भारत के लिये तो है ही, इसे विश्व स्तर पर होना चाहिए और हमें इसके लिये सक्रिय होना चाहिए.

इसी मीटिंग में सर्वसम्मति से मुझे संस्था का अध्यक्ष चुन लिया गया. संस्था के सचिव और संस्थापक गोकुलेश्वर थे ही. संस्था की नवीनीकृत रूप रेखा और संविधान तैयार हुआ और कार्य प्रारम्भ हो गया.

आज मैं अपने कक्ष में बैठे-बैठे गोकुलेश्वर की क्षमताओं का आंकलन किया करती हूं. अपने काम के प्रति कितना आस्थावान और कितना ऊर्जावान है यह नौजवान जिसने चंद सालों में इतनी बड़ी संस्था बना डाली और नामानुकूल उसे स्थापित कर दिखाया.

गोकुलेश्वर अब मेरे सामने पहले जैसे गोकुलेश्वर नहीं, अब एक बड़ा नाम है, बड़ा परिचय एवं बड़ा कद.

प्रारम्भिक दिनों में जब उन्होंने विश्व स्नेह समाज पत्रिका का संपादन प्रारम्भ किया था, प्रायः पत्रिका में अनेक कमियां और अनेक त्रुटियां मिल जाया करती थी और मैं बेहिचक उन्हें वे त्रुटियां दिखा दिया करती थी जैसे कोई अध्यापक अपने छात्र को दिखा दे. गोकुलेश्वर एक हल्की मुस्कान के साथ उन्हें स्वीकार कर लेते थे और दूसरी बार, मैं देखती थी वे कमियां पत्रिका से दूर हो गई है. आज विश्व स्नेह समाज एक अच्छी और उपयोगी पत्रिका कही जा सकती है. यह सफलता उनके अति विनम्र स्वभाव और धैर्य को रेखांकित करती है.

वे प्रतिवर्ष संस्था के बड़े-बड़े आयोजन करते है, स्वाभाविक है, कुछ गलतियां भी होंगी ही. मैंने उन्हें उन गलतियों की ओर इंगित किया, उन्होंने बड़े ही सहज भाव से उन्हें स्वीकार किया और तत्काल संशोधन कर लिया. यह स्वभाव ही उनके महान चरित्र और निरन्तर प्रगति का राज़ है. आज

गोकुलेश्वर का जितना वृहद कार्यक्षेत्र है उतना ही बड़ी उनके सम्मान, पुरस्कार, मानद उपाधियों और अलंकरणों की सूची है जिनका उल्लेख करने मात्र से लेख का कलेवर चौगुना हो सकता है. अतः इतना ही पर्याप्त है.

'लर्निग कम्प्यूटर विद फन भाग-१, २ व ३, सुप्रभात-काव्य संग्रह, ये आग कब बुझेगी आदि उनकी प्रकाशित चर्चित पुस्तके हैं. ढेरों संस्थाओं से जुड़े हुये, हर संस्था में महत्वपूर्ण पदों की भूमिका का निर्वाह करते हुए गोकुलेश्वर को एक लम्बे अरसे से देखती आ रही हूं. सादा वेशभूषा, कुछ कर दिखाने का जज्बा, बुलन्दियों को छूने का हौसला, विनम्रता और निश्छलता का प्रतीक सा यह कर्मठ नौजवान जो एक बड़ा और पवित्र अभियान लेकर कर्मभूमि में उतर पड़ा है, मैं उसको आशीर्वादों एवं शुभकामनाओं के साथ अभिनंदन करती हूं. मेरा आशीर्वाद उसका सम्बल बने, यही कामना है.

श्रीमती बबीता शर्मा, गाजीपुर, उ.प्र. से लिखती हैः

साहित्य मेला हिन्दुस्तानी एकेडमी में हिन्दी साहित्य के ज्वाजल्यमान, साधारण वेश-भूषा वाले, अपनी प्रतिभा की आभा से पूरे समाज को प्रकाश देने वाले इस जननायक को देखने और मिलने का सु-अवसर मिला. 'कथनी और करनी' को तराजू के पलड़े में बराबर तौलने वाले इस नायक ने अपने सद्कर्म से समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास करने की कोशिश की है.

डां० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी ने 'स्नेहाश्रम' के माध्यम से अनाथ बच्चों और वृद्धों की सेवा करने का जो वीणा उठाया है, अति सराहनीय है.

जननायक द्विवेदीजी

जन के नायक
मन से निर्मल
चलते हुए
कर्म-पथ पर अविरल
साधक तुझे
शत्-शत् नमन.

विश्व स्नेह समाज के कालम 'अपनी -बात' के माध्यम से आपके न्यायायिक और आक्रामक विचारों से अवगत हुई. हिन्दी साहित्य के पुरोधा द्विवेदी जी अपनी समीक्षात्मक प्रतिभा के लिए भी जाने जाते है. द्विवेदी जी की कहानी/उपन्यास/लघुकथा एवं काव्य के माध्यम से हिन्दी की सेवा कर रहे है. आपने कई पुस्तकों का लेखन तथा संपादन कर अपनी सम्पादकीय प्रतिभा का जौहर दिखाया है।

इस सरल सौम्य महामहिम के लिए चन्द शब्द प्रेषित हैं-

✍ **बबिता शर्मा**
ग्राम- वीरापाह, पो. करण्डा, जिला-गाज़ीपुर, उ.प्र.

''लेखनी चलाकर
वार उनपे कर दो
जो दिल में मैल लिए हैं (तम)
उजास उनमें भर दो।
संताप हर तरफ है
हर एक दिल जल रहा है
सुधा-शब्द से तू
बौछार उनपे कर दो।।

आपकी सम्पादक मनीषा से मण्डित अंक प्राप्त कर आन्तरिक प्रसन्नता हुई. आपके सम्पादकीय में भारत में लोकतंत्र की वर्तमान तथाकथित प्रशासकों द्वारा की जाने वाली दुर्गति पर बड़ी प्रखर और उत्तेजक टिप्पणी है. आपकी इस टिप्पणी से 'पत्रकार युग का प्रहरी होता है' यह बात सचमुच चरितार्थ हुई हैं.

-डॉ०श्रीरंजन सूरिदेव, कंकड़बाग, पटना

बच्चों के यौन उत्पीड़न पर सम्पादकीय में आज की प्रमुख सामाजिक समस्या का अच्छा विवेचन किया गया है तथा उचित मार्गदर्शन माता-पिताओं को देकर बच्चों के तंग और छोटे पहनावे से बचने का सही संकेत दिया गया है. स्व रक्षा हेतु जूडो-कराटे आदि की शिक्षा भी आवश्यक हो गई है.**-डॉ. कमलेश शर्मा,** भोपाल,मप्र.

अपने कर्तव्य के निभाते हुए आप भारत की विविध समस्याओं को अपने पाठकों के सामने लाने का पूरा प्रयास कर रहे है.

-रचना यादव, अहमदाबाद, गुजरात

आपके द्वारा किये जा रहे महान कार्य के लिये समस्त हिन्दी जगत आपका आभारी रहेगा.

मैं हृदय से आपके इस रचना सारस्वत अनुष्ठान को प्रणाम करता हू व दीघायुत्व को अशेष मंगल कामनाएं.

-अब्दुल समद राही, पाली राजस्थान

सुश्री बी.एस.शांताबाई, प्रधान सचिव-कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बंगलौर, कर्नाटक से लिखती हैः

श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी निडर और संयमी व्यक्ति है

सुश्री बी.एस.शांताबाई
संरक्षकःविश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, १७८, चौथा मेन रोड, ६वा क्रास , चामरेजपेट, बंगलौर-५६००१८, कर्नाटक

मेरे छोटे भाई के समान श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक कुशल संघठक व्यक्ति हैं. हर क्षण राष्ट्रभाषा हिन्दी के कार्य में लगे रहते हैं. उनकी सोच समझ यह है कि सभी हिन्दी साहित्यकारों को एक मंच पर लाना है. पूरे भारत में हिन्दीतर साहित्यकार हों, हिन्दी प्रदेश के साहित्यकार हों, छोटे-बच्चे हों या युवक हों सभी को साथ में लेकर कार्य को सुसंपन्न करने वाले व्यक्ति हैं. १२ साल से 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका चलाकर राष्ट्रभाषा के लिए अपना योगदान दे रहे है. मुझे विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के वार्षिक आयोजन 'साहित्य मेले' में एक बार सम्मानित होने, एक बार विशिष्ट अतिथि तथा दो बार कार्यक्रम की अध यक्षता करने का सौभाग्य मिला हैं. मेरे ऊपर इन्होंने एक विशेषांक भी निकाला था तथा वर्ष २०१२ में संस्थान द्वारा मुझे अभिनंनदित करने का गौरव प्रदान किया है. भविष्य के हिन्दी छात्रों को भी प्रोत्साहन भी दे रहे हैं. श्री गोकुलेश्वर जी निडर और संयमी व्यक्ति हैं, किसी से डरने वाले नहीं हैं. उनको बड़े लोगों से अच्छा संस्कार मिला है. अतः वे साहित्य में लगे रहकर भी संस्कार नही भुलते. ऐसे व्यक्ति को समाज, सरकार आदि सभी लोगों को प्रोत्साहित करना चाहिए.

इनके माध्यम से पत्रिका मे हिन्दी के बढ़ते प्रभाव व स्वभाव को बहुत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है. किसी देश की अखंडता को बनाए रखने में भाषा का बड़ा योगदान होता है. यह काम श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी बहुत होशियारी से संचालन करते आ रहे हैं.

माता-पिता को अपने बच्चों को अच्छा संस्कार प्रदान करना चाहिए. अच्छे संस्कार में पले बच्चे भविष्य में देश की उन्नति के लिए अपना जीवन तयाग करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं.

भगवान, श्री गोकुलेश्वर द्विवेदीजी को और भी शक्ति, आरोग्य और आयुष्य देकर उनको हिन्दी की, देश की उन्नति के लिए आगे बढ़कार प्रेरणा दें. कुशल संचालन के लिए उनको मेरा साधुवाद.

सुप्रसिद्ध हास्य व्यंग्य के हस्ताक्षर कैलाश गौतम जी का पत्रिका की पहली वर्षगांठ के अवसर पर स्वागत करते हुए डॉ० द्विवेदी

सोनभद्र के वरिष्ठ पत्रकार मिथिलेश द्विवेदी के ऊपर प्रकाशित पत्रकार यज्ञ का विमोचन करते हुए बायें से गोकुलेश्वर द्विवेदी, मिथिलेश द्विवेदी, मुनीस बक्श आलम

श्री एस.बी. मुरकुटे, बेलगाम, कर्नाटक से लिखते है:

हिन्दी की श्वास लेने वाले डॉ० गोकुलेश्वर

बढ़ जाता है मान व्यक्ति का निस्पृह सेवा करने से,
हीरा होता मूल्यवान तब कांचन संगति पाने से।।

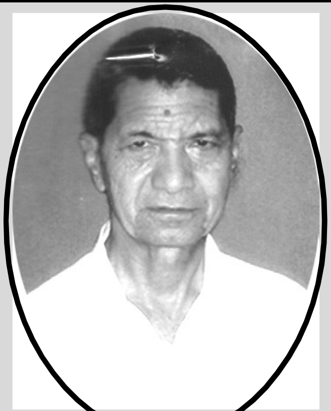

एस.बी.मुरकुटे
कार्यसमिति सदस्य, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, क्रास नं०२, आनंद नगर, बड़गांव, बेलगाम-५, कर्नाटक

निरंतन हिन्दी की सेवा में सत्संग हिन्दी की स्वास लेने वाले डां० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी का जन्म 15 जून को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में एक मध्यम वर्गीय मालवीय ब्राहमण परिवार में हुआ. श्री द्विवेदी के पिता पवहारी शरण द्विवेदी डाक विभाग में पोस्ट मास्टर थे. अपने पिता की पाँच सन्तानों में चौथे नंबर के श्री द्विवेदी जी का जन्म तीन बहनो के बाद हुआ था इसलिये उनका बहुत लाड़ प्यार से पालन हुआ. बचपन से ही उन्हें समाज सेवा में रुचि थी. कक्षा 4के छात्र थे तबसे वे गरीब बच्चों की मदद करते थे. क्योंकि उनके साथ किताबें कापियां पेन्सिल आदि नहीं होती थी. अपने मित्र सुधीर कुमार के साथ मिलकर उन्होंने एक चाइल्ड बैंक बनवाया. उन पैसों से गरीब बच्चो को मदद करते थे. लेखन, पत्रकरिता, समाज सेवा हिन्दी सेवा, लेखन जन्मजात है तभी तो अपने कक्षा 6 में पढ़ते समय 'एकता की सीख' नामक कहानी लिखी.

2004 से विश्व हिन्दी सहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से हिन्दी के उत्थान के लिये कार्यरत है. संस्थान के कम समय में ही अपनी एक अलग पहचान बना लिया है. नित नई योजनाएँ, नित नये आयाम स्थापित करना भी द्विवेदी जी की दिनचर्या है.

वुनरिक महिला हिन्दी सेवा समिति बंगलोर की संचिव श्रीमती शांताबाई के कार्य को फरवरी 2009 श्रीमती शांताबाई विशेषांक प्रकाशित किया है.

कर्नाटक बेलगाँव के वरिष्ट हिन्दी लेखक मैं एस.बी.मुरकुटे जी गत पचास साल की हिन्दी सेवा देखकर उनकी कार्यकारिणी में नियुक्ति की। व्यक्ति के कार्य का उचित सम्मान करते है.

सचिव-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान 2001 से अबतक संपूर्ण विश्व में हिन्दी के प्रसार के लिये कार्यरत है। राष्ट्रीय महासचिव-भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार मंहासंघ, सलाहकार-हिमालय और हिन्दुस्तान नेटवर्किंग सिस्टम, आजीवन संदस्य-राही संस्थान, राजस्थान सहित करीब दो दर्जन सामाजिक साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं के सदस्य.

सम्मान-साहित्य श्री सम्मान 2005 परियाँवा प्रतापगढ़, 2005 राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान, 13वें अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह गाजियाबाद 2003, हिमालय और हिन्दुस्तान पत्रकारिता सेवा सम्मान 2004, मानवरत्न-संपादक रत्न-अन्त. सम्मानोपाधि महाविद्यालय 2005, हिन्दी सेवा सम्मान-2005, जेमिनी अकादमी 2005, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ लखनऊ, डां०तारा सिंह सम्मान-स्वर्ग विभा मुंबई 2009,

आकाशवाणी इलाहाबाद से 1996 से निरंतर प्रसारित, दूरदर्शन केन्द्र इलाहाबाद से 2006 से वार्ता, परिचर्चा का प्रसारण आचार्य महाप्राण जैन श्वेताबंबर पीठ भिवानी द्वारा आयोजित स्तम्भ लेखक तथा वर्तमान समस्याएँ विषय में वार्ताकार, हिन्दी को विश्व की भाषा बनाना उनका एक सपना है, भारत का ऐसा कोई राज्य नही होगा जहाँ उनके परिचित जानने वाले न हो, अब तो धीरे धीरे विदेशों में भी अपनी पकड़ बना रहे है.

भगवान से प्रार्थना है कि उनका स्वास्थ्य क्रियाशील एवं शांतीमय जीवन रहे. वे सदा अपने ज्ञान और अनुभव की दीप शिखाऐं हिन्दी साहित्यकारो व पथ आलोकित करते रहे.

आपके सम्पादकीय में भारत में लोकतंत्र की वर्तमान तथाकथित प्रशासकों द्वारा की जाने वाली दुर्गति पर बड़ी प्रखर और उत्तेजक टिप्पणी है. आपकी इस टिप्पणी से 'पत्रकार युग का प्रहरी होता है' यह बात सचमुच चरितार्थ हुई हैं.

— **डॉ०श्रीरंजन सूरिदेव**, कंकड़बाग, पटना, बिहार

श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, राष्ट्रपति व राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत प्रधानाध्यापक, सोनभद्र, उ.प्र. से लिखते हैः

जिसके सम्पर्क में आये अपना एक अमिट प्रभाव छोड़े है श्री द्विवेदी

✍ओम प्रकाश त्रिपाठी

लेखकीय व सम्पादकीय धर्म का निर्वहन इनके व्यक्तित्व की पहचान है. सभी के सम्पर्क में आकर उनकी अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित कर मानवता की नींव सुदृढ़ करने का एक क्रान्तिकारी प्रयास डॉ० द्विवेदी ने किया है.

अन्नपूर्णा भवन, बलरामदास धर्मशाले के बगल में, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र-२३१२१६, मो०: ९४१५६७७५१६

विश्व स्नेह समाज पत्रिका के सम्पादक, सहजता, सरलता की प्रतिमूर्ति डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अपनी पूर्ण सृजनशीलता एवं रचनात्मक सहृदयता के साथ न केवल हिन्दी भाषा के उत्थान में अपना अप्रतिम योगदान किया है वरन् बच्चों, युवकों एव वृद्धों में भी उनके सम्पूर्ण सृजनक्षमता तथा छिपी आन्तरिक शक्तियों को प्रस्फुटित करने में श्री द्विवेदी ने एक अतुलनीय प्रयास किया है. सामान्य परिवार के सदस्य, सीधी सादी आकृति, सामान्य वेशभूषा, अत्यन्त सरल स्वभाव तथा मधुर वाणी से परिपूर्ण श्री द्विवेदी जिसके सम्पर्क में आये अपना एक जादुई और अमिट प्रभाव छोड़े है. अपनी पत्रिका के माध्यम से राष्टीय एकता और अखण्डता हेतु लेखों, निबन्धों तथा रचनाओं के संकलन द्वारा रचनाधर्मिता का विकास करने में श्री द्विवेदी सिद्धस्त है. इनकी अभूतपूर्व क्षमता एवं समाज तथा राष्ट्र के विकास में सम्पूर्ण मानवता की स्थापना हेतु इनके सद्प्रयासों के फलस्वरुप अनेक सम्मानों एवं प्रशस्तियों से इन्हें विभूषित किया जा चुका है. श्री द्विवेदी ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रखरता से पूर्ण लोगों को विभिन्न प्रकार के अलंकरणों एवं सम्मानों को प्रदान कर स्वयं सम्मानित होने की हैसियत दिखलाया है.

तीर्थराज प्रयाग की धरती के सम्मान के अनुरूप श्री द्विवेदी ने सभी धर्मो, सभी सम्प्रदायों, सभी स्तर के लोगों को सम्मान प्रदान किया है.

देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों के बिगड़ते हुए स्वरूप को एक सफल आयाम देने, उन्हें पुनीर्जीवित करने तथा प्रेरक का कार्य करने के संदर्भ में श्री द्विवेदी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है. लेखकीय व सम्पादकीय धर्म का निर्वहन इनके व्यक्तित्व की पहचान है. माानव के विभिन्न स्तरों पर भी इन्होंने अनेक लेख लिखकर मानवीय मूल्यों की पतनशीलता पर विराम लगाकर उसमें गत्यात्मकता एवं जीवन अर्पित करने का अतुलनीय प्रयास किया है. देश के चर्चित तथा उदीयमान लेखकों, साहित्यकारों, रचनाकारों, चिकित्सकों, समाज सेवियों, सुरक्षा कर्मियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अन्यान्य जनों को अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेष्ट रहने तथा उनमें राष्ट्र प्रेम जागृत करने का पूर्ण प्रयास भी श्री द्विवेदी द्वारा किया गयाा है. सभी के सम्पर्क में आकर उनकी अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित कर मानवता की नींव सुदृढ़ करने का एक क्रान्तिकारी प्रयास डॉ० द्विवेदी ने किया है. देश के गौरव एवं तेज को विकसित करने में इनके योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता. अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं समय के प्रति समर्पण तथा उचित निर्णय क्षमता के आधार पर इन्हें न केवल सम्पादक, लेखक, साहित्यकार, रचनाकार वरन् समाज सेवी के रूप में विभूषित करना अतिशयोक्ति न होगी.

एतदर्थ उपर्युक्त के आलोक में डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के व्यक्तित्व के निखार तथा अन्य उदीयमान कृतिकारों, कलमकारों, रचनाकारों को अभिप्रेरित करने के क्रम में पत्रिका को इनके जीवन का एक अंग बनाने हेतु अंक को प्रकाशन हेतु सभी सदस्यों एवं सृजनात्मक सोच को विस्तरित करने के प्रयास में लगे सभी जनों को कोटिशः बधाई देते हुए श्री द्विवेदी के सुदीर्घ जीवन एवं उज्जवल भविष्य की मंगल कामना.

श्री मुखराम माकड़ 'माहिर' हनुमानगढ़, राजस्थान से लिखते हैः

हिन्दी और हिन्द की सेवा में समर्पित एक आदर्श व्यक्तित्व

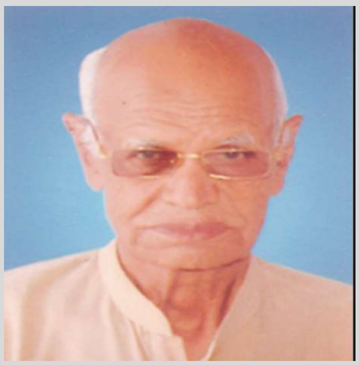

✍ मुखराम माकड़ 'माहिर'

यदि किसी व्यक्ति को आंतरिक रुप से डां० द्विवेदी जी को समझना है तो 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका की संपादकीय का कालम 'अपनी बात 'अवश्य पढ़े।

-सेवानिवृत्त उपजिलाधिकारी
विश्वकर्मा विद्या निकेतन, रावतसर, हनुमानगढ़, राजस्थान-३३५५२४

भारत की स्वतंत्रता के लिये हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग करने वाले शहीद परमेश्वर से यही प्रार्थना किया करते थे कि-

हे! ईश भारतवर्ष में शतबार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का लोकोपकारक कर्म हो।

ऐसे परम त्याग की भावना से ओतप्रोत महानुभावों का आज अभाव हो गया किन्तु ऐसे नररत्न दुर्लभ नहीं है. श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी इसी कोटि के राष्ट्रसेवी महापुरूष हैं. आपका संतस्वाभाव, अदभुत विनम्रता, कर्तव्य निष्ठा एवं राष्ट्रभक्ति अद्वितीय है. सन् 2006 से मै विश्व स्नेह समाज से जुड़ा हुआ हूँ. यधपि श्री द्विवेदी से मेरा कभी प्रत्यक्ष साक्षात्कार तो नहीं हुआ किन्तु पत्राचार निरन्तर होता रहा है. मेरी एक कृति तिरंगी पहेलियां आपके सहयोग से ही प्रकाशित हुई और उसका विमोचन मेरे स्वास्थ्य सम्बंधी कारणों से न आ पाने पर भी साहित्य मेले में आपने मेरी अनुपस्थिति में ही करवा दिया. यह मामूली बात नहीं है. ऐसा एक सरल, संवेदनशील एवं साहित्यप्रेमी सज्जन ही कर सकता है. श्री द्विवेदी ने न सिर्फ विमोचन का कार्यक्रम ही सम्पन्न करवाया वरन् विश्व स्नेह समाज में सचित्र समाचार भी प्रकाशित करवाया. लेखकों को प्रश्रय देने वाले ऐसे सहृदय विद्वान सौभाग्य से ही मिलते हैं. यदाकदा मेरी रचनायें विश्व स्नेह समाज में प्रकाशित होती रहती है. वार्षिक संकलन में भी मेरी सहभागिता रहती है। अतः निःसन्देह आपसे मेरा आत्मिक जुड़ाव है और एतद्र्थ मैं स्वयं को धन्य समझता हूँ. इस पत्रिका का उद्देश्य केवल हिन्दी सेवा एंव राष्ट्र सेवा ही है. अर्थोपार्जन इसका लक्ष्य नहीं. नवोदित कलमकारों को भी यह मंच प्रदान करती है. इतनी सस्ती पत्रिका सचमुच दुर्लभ है.

पत्रिका के सम्पादकीय तथा उसमें प्रकाशित रचनायें ही सम्पादक के व्यक्तित्व का सच्चा प्रतिबिम्ब होती हैं. ऐसी मेरी मान्यता है. हर सम्पादकीय में आप राष्ट्र की ज्वंलत समस्याओं को रेखांकित कर, विचारोंत्तेजक एंव सटीक विवेचना प्रस्तुत करते है. चाहें अयोध्या का प्रंसग हो, चाहे हिन्दी के वर्चस्व की बात हो, चाहे कालेधन, भ्रष्टाचार एवं कदाचार के विषय हों आप अपने स्पष्ट विचार प्रस्तुत करते है. भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के आप प्रबल पोषक है तथा आपकी रचनाओं में राष्ट्रधर्म के परिपालन की उदस्त भावनायें निहित होती है. सपने तो बहुत से लोग देखते है परन्तु अपने शिव संकल्प को पूरा करने वाले आप जैसे देवपुरूष बिरले ही होते हैं. कहा भी हैं-

सपने सुनहरे पारस बन जाते है
जब संकल्प के पंख लग जाते है।

श्रद्धेय द्विवेदी जी के बहुआयामी प्रखर व्यक्तित्व को चन्द शब्दों में समेटना सम्भव नहीं है. हर वर्ष साहित्य मेला आयोजित करना, हिन्दी साहित्यकारों को व्यापक स्तर पर सम्मनित करवाना, हिन्दी लेखकों की कृतियों के प्रकाशन में हर सम्भव सहयोग देना, स्नेहाश्रम का संचालन करना तथा राष्ट्रसेवी संस्थाओं में तन-मन-धन से सक्रिय भागीदारी करना सचमुच आप जैसे कर्मठ तपस्वी विद्वान के लिये ही सम्भव है. अतः परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि-

मधुमय मधुमास-सा हो हर पल आपका
स्नेहसिक्त दीवत-सा हो जीवन आपका
दीर्घ निरामय रहे सदा जीवन आपका
क्षण-क्षण हिन्द-हिन्दी सेवा में बीते आपका
मंगलकामनाओं सहित-

राष्ट्रभाषा के उन्नायक, श्रद्धेय विभूति की दीघार्यु एवं उज्जवल भविष्य के लिए ईश्वर से कामना करता हूं। **संग्राम सिंह सोढ़ा,**
सोढ़ांग लोक साहित्य संस्थान, चक सचियापुरा, बज्जू, बीकानेर, राजस्थान-334305

श्री सनातन कुमार वाजपेयी, वरिष्ठ साहित्यकार, जबलपुर, म.प्र. से लिखते हैः

सेवा एवं त्याग डॉ० द्विवेदी के व्यक्तित्व के महानगुण है

मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि डॉ० द्विवेदी साहित्य, शिक्षा, समाज, अध्यात्म, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में तन मन धन से जुड़े हैं. समाज को आदर्श रूप में देखने की इनकी परिकल्पना है. इनके अन्दर कुछ कर गुजरने की छटपटाहट है.

✍ सनातन कुमार वाजपेयी 'सनातन'
पुराना कछपुरा स्कूल, गढ़ा, जबलपुर, ४८२००३, म.प्र. मोः ९९९३५९९१३९

गोकुल धाम में जन्में डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी की बहुमुखी प्रतिभा से समग्र हिन्दी जगत परिचित है. डॉ० द्विवेदी स्वभाव से अत्यन्त सहज, सरल, विनम्र एवं मिलनसार है. करूणा ममता इनके सहज गुण है. समाज के कल्याणार्थ ये सतत चिन्तनरत रहते है. इसी उद्देश्य से इन्होंने अपने हाथ में अनेक योजनाएं ले रखी है.

विश्व स्नेह समाज मासिक के माध यम से समाज एवं साहित्य की सेवा करना, संस्थापितों को सम्मानित करना एवं नवोदितों को प्रोत्साहित करना इनका प्रमुख लक्ष्य है.

डॉ० द्विवेदी एक अच्छे पत्रकार एवं श्रेष्ठ रचनाकार है. इनके द्वारा अनेक कृतियों का सृजन किया गया है. विश्व स्नेह समाज का १९९७ से नियमित प्रकाशन किया जा रहा है. इसके माध्यम से अनेक क्रान्तिकारी कार्य किये गये हैं. समय-समय पर पत्रिका के उपयोगी विशेषांक प्रकाशित होते रहे है.

डॉ० द्विवेदी एक व्यक्ति न होकर अपने आप में एक सक्रिय संस्था है. अनेक समाजोपयोगी गतिविधियों को गति प्रदान करना डॉ० द्विवेदी की सहज प्रकृति है. इनके कर्म का मर्म इनकी रचनाधर्मिता में स्पष्ट देखा जा सकता है.

विगत दो दशक से डॉ. द्विवेदी हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए कृत संकल्पित है. इसके लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बसने वाले श्रेष्ठतम साहित्यकारों को इलाहाबाद में बुलाकर, वृहत आयोजन के माध्यम से उन्हे सम्मानित करना एवं प्रचार प्रसार करना मुख्य है. इन कार्यक्रमों के माध यम से विद्वान मनीषियों एवं सृजन धर्मी महानुभावों की सृजन धर्मिता का वास्तविक मूल्यांकन होता है.

डॉ० द्विवेदी स्नेहाश्रम, वृद्धाश्रम, अनाथालय के संचालक है. इनके अतिरिक्त नगर एवं राष्ट्र की अनेक सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध होकर अपनी सक्रिय भूमिका का निवर्हन कर रहे है. मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि डॉ० द्विवेदी साहित्य, शिक्षा, समाज, अध्यात्म, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में तन मन धन से जुड़े हैं. सेवा एवं त्याग इनके व्यक्तित्व के महानगुण है. समाज को आदर्श रूप में देखने की इनकी परिकल्पना है. इनका राष्ट्रभाषा प्रेम अनुपम एवं प्रशंसनीय है. गो संवर्धन के लिये गोशाला की स्थापना, छात्रों के उन्नयन के लिए उन्हें हर प्रकार से प्रोत्साहित करना, वृद्धों की सेवा डॉ० द्विवेदी के क्रिया कलापो के प्रमुख अंग है.

अनेक साहित्यिक यात्राएं कर चुके और अनेक संस्थाओं से सम्मानित डॉ० द्विवेदी के माध्यम से सहयोग प्राप्त कर अनेक निर्धन छात्र अपने लक्ष्य को प्राप्त कर चुके है. अनेक वृद्धगण इनके स्नेहसिक्त व्यवहार एवं सद्भावों के माध्यम से ऊर्जास्वित होकर आनन्द एवं खुशियों के बीच अपना जीवन यापन कर रहे है. इनके अन्दर कुछ कर गुजरने की छटपटाहट है. समाज में परिव्याप्त विकृतियों के आमूल निरसन की कामना एवं क्रांतिकारी परिवर्तन के माध्यम से सत्समाज के संस्थापन की मानकिसता है.

आपकी सम्पादकीय सोचने को विवश करती हैं. पत्रिका की अन्य सामग्री भी सुरुचिपूर्ण, पठनीय, मननीय किं वा ज्ञानवर्द्धक है. आज के युग में पत्रिका चलाने का कार्य कुछ दुष्कर-सा होता जा रहा हैं.

-**डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'**, चम्पावत, उत्तराचंल

आपने अपने संपादकीय लेख में तथाकथित संतो का सच उजागर करने का जो प्रयास किया है व अपने आपमें सराहनीय हैं. समाज का यह कड़वा सच है कि ये कुछ तथाकथित संत-असंतो वाले कार्य कर समाज ही नहीं वरन् सम्पूर्ण हिन्दू समाज को बदनाम कर रहे है.

-**शरद कपूर**, खैराबाद, सीतापुर, उ.प्र.

डॉ० शिव गोपाल मिश्र, प्रधानमंत्री विज्ञान परिषद, इलाहाबाद से, उ.प्र. से लिखते हैः

कर्मठ युवा पत्रकारः डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

डॉ० शिवगोपाल मिश्र
प्रधानमंत्री, विज्ञान परिषद, प्रयाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, इलाहाबाद-२, उ.प्र.

८ वर्ष पूर्व विज्ञान परिषद, प्रयाग के मेरे कक्ष में एक तरुण कमीज पैंट पहने प्रविष्ट हुआ. मैंने उसे बैठाया और पूछा कि बतावें क्या कार्य है. उन्होंने सकुचाते हुए एक सामान्य पत्रिका निकाली और मेरे सामने रखते हुए कहा कि मैं इसका सम्पादन करता हूं. क्या विज्ञान परिषद प्रयाग अपना कोई विज्ञापन दे सकता है? मैं मन ही मन इस युवक के उत्साह से पुलकित था. अतः मैंने कह दिया, 'क्यों नहीं?' फिर तो वो अपनी पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का नया अंक लेकर मेरे पास आते रहे.

मैंने हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी में इनके द्वारा आयोजित एक सम्मान-अलंकरण समारोह में भी भाग लिया. न जाने देश के कितने साहित्यकार पुरूष तथा महिलाएं एकत्र थे और उन्हें सम्मानित किया जा रहा था.

ये युवा डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी थे. अब तो मैं उनके नाम तथा कार्य दोनों से अवगत हो चुका हूं.

प्रसन्नता की बात है कि वे अपनी पत्रिका में हिन्दी, हिन्दू संस्कृति, विज्ञान, धर्म तथा राजनीति को समान स्थान देते हैं. पत्रिका के कलेवर एवं बाह्य सज्जा में भी सुधार हुआ है.

ऐसे कर्मठ युवा पत्रकार के सम्मान में विशेषांक का प्रकाशित होना उनकी ख्याति को स्वयं बताता है. डॉ. द्विवेदी चिरंजीवी हो, यही कामना है.

डॉ० हितेश कुमार शर्मा, अधिवक्ता, बिजनौर, उ.प्र. से लिखते हैः

उनकी सज्जनता की मेरे हृदय में एक अमिट छाप है

डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी हिन्दी के प्रचार प्रसार में सतत लगे हुए है. प्रतिवर्ष विशाल आयोजन करना. प्रतिभागियों के भोजन और आवास की व्यवस्था करना, बहुरंगी सम्मान पत्र प्रदान करना और साथ में यथासम्भव आर्थिक राशि देना एक कठिन कार्य नहीं, एक कठोर तपस्या की भांति है जो वह दृढ़ निश्चय के साथ निर्वाह कर रहे है. हिन्दी के प्रति उनका प्रेम उनकी लगन को देखते हुए पूरा देश उनके साथ जुड़ गया है. एक ऐसा मंच उन्होंने इलाहाबाद में स्थापित कर दिया है. जिसमें अनेकानेक विद्वान सम्मिलित होते हैं और सम्मानित होते है. उनकी कार्यशैली से मैं बहुत प्रभावित हूँ. मुझे उनके मंच द्वारा जब प्रथम बार सम्मानित किया गया, तब मेरा उनका कोई पुराना परिचय नहीं था. किन्तु मेरी साहित्य सेवा से प्रभावित होकर उन्होंने मुझे अपने मंच से सम्मानित किया और रुपये ५००१/- कि धनराशि का चेक भी पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया. मुझे भी सम्मान के साथ चेक प्राप्त करने का पहला अवसर था. रात्रि भोज उन्हीं के साथ हुआ. सुबह जब मै उठा तो वहाँ श्री हनुमान मन्दिर भगवान के दर्शन करने गया. तब मैंने वह चेक पुःन देखा, उसमें अंकों में लिखी राशि और शब्दों में लिखी राशि में एक रुपया कम लिखा गया था. मैंने श्री गोकुलेश्वर जी को फोन किया तो उन्होंने मुझसे वही मन्दिर पर ठहरने के लिए कहा, तथा थोड़ी देर बाद आकर चेक को ठीक किया और मुझे जलपान कराया. उनकी यह सज्जनता मेरे हृदय **में एक** अमिट छाप छोड़ गई हैं. मैं आज भी उनका सम्मान करता हूँ और उनके प्रत्येक कार्यक्रम से जुड़ा रहना चाहता हूँ। हिन्दी के लिए जो कार्य वह कर रहे हैं उसमें उनकी सफलता कर ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ.

डॉ० हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन, सिविल लाइन्स, बिजनौर-२४६७०१, उ.प्र.

डॉ० हेमा उनियाल, नई दिल्ली से लिखते हैः

डॉ० द्विवेदी की पहल स्वागत योग्य है

✍ डॉ० हेमा उनियाल
८/५५०, लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली-०३

हिन्दी साहित्य के विकास एवं संरक्षण-संवर्द्धन के क्षेत्र में श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी का नाम अनभिज्ञ नहीं है. हिन्दी साहित्य को अपने अल्प प्रयासों से समृद्ध करने का सराहनीय प्रयास उन्होंने किया है. वर्तमान स्थिति में पत्रिका निकालना और हिन्दी के समारोह आयोजित करना आसान नहीं है. इस स्थिति में उन्होंने हिन्दी साहित्य की पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' को तो जीवन्त रखा ही साथ ही हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकारों, साहित्यकारों को समय-समय पर हिन्दीं के सारगर्भित कार्यक्रमों में आमंत्रित कर, उन्हें सम्मानित कर हिन्दी साहित्य को व्यापक मंच प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है.

अपने कार्यक्रमों में बाल रचनाकारों को भी उभरने का वह पूरा अवसर प्रदान करते हैं, निःसंदेह बाल रचनाकार कल के बड़े रचनाकार व साहित्यकार बन सकते हैं. उनके भीतर की प्रतिभा को समाज के सम्मुख लाकर, बाल साहित्य के विकास एवं उत्थान में भी उनकी अहम भूमिका को दर्शाता है. प्रयागराज व साहित्य नगरी के नाम से अभिहित इलाहाबाद नगरी पूर्व से ही साहित्य का गढ़ रही है, हालांकि समयागत स्थितियों और शीघ्र ही पद प्रतिष्ठा व सम्मान पा लेने की कामना ने इलाहाबाद के साहित्य क्षेत्र को प्रभावित किया है, किंतु मर्मज्ञ रचनाकार-साहित्यकार अनवरत बिना किसी लालसा के अपने साहित्य से समाज को जागरूक एवं दिशा प्रदान करते रहे हैं. श्री गोकुलेश्वर जी के संयोजन में दो बार (सन् २००५, व २०१३) इलाहाबाद नगरी आने और कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाने का अवसर प्राप्त हुआ. हिन्दी साहित्य को व्यापक रूप से प्रचार में लाने और विकास हेतु उनकी पहल स्वागत योग्य है. ईश्वर आगे भी उन्हें सही दिशा और शक्ति प्रदान करे, ऐसी पूर्ण आशा है.

श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली' रायबरेली, उ.प्र. लिखती हैः

तुम चलो चल पड़ेगा, संग तुम्हारे कारवां।

✍ श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली'
हिन्दी सांसद, पूर्वांचल प्रभारी, बी/६१३,
इन्दिरा नगर, रायबरेली, उ.प्र.

सर्वप्रथम नाम ही एक अनोखे व्यक्तित्व का परिचय कराता हुआ प्रतीत होता है. गोकुलेश्वरजी तमाम सारी उपलब्धियों को समेटे हुये ऊपर से दिखाने वाले सजता की प्रतिमूर्ति है.

द्विवेदीजी से मेरी मुलाकात साहित्य मेला 2006में हुयी. देखने पर लगा ही नहीं कि यह कि कर्मनिष्ठ व्यक्ति है जो साहित्य की नगरी में परचम फहराने को अतुर हैं.

सहित्य मेला के मंच पर बड़े-बड़े मनीषियों, विद्वानों का आना और उनके बोधमयी वक्तव्य का रसपान पुस्तक-प्रदर्शनी प्रतियोगितायें आदि जैसे बनाये जो आज की विषमताओं के बीच दुर्लभ लगते है. द्विवेदीजी बड़ी कुशलता के साथ सम्पादित करते आ रहें है. सामने से देखने में द्विवेदी जी बिल्कुल नही लगते कि वे स्वयं अपने अंतर में इतनी उत्कृष्ट भावनाओं का समंदर संजोये हुये है. परन्तु इसमें संदेह नही कि वे गागर में सागर की उक्ति को शत-प्रतिशत चरित्रार्थ करते है.

मेरा तो उनसे साहित्य मित्र का नाता रहा है. विश्व स्नेह समाज जैसे स्नेहिल पत्रिका का सम्पादन कार्य द्विवेदी जी को ही परिश्रम का प्रतिफल है.

पत्रिका छापना या निकालना बहुत बड़ी बात नही है. बड़ी बात है सामग्री का संयोजन एंव नियमितता और यह दुरूह कार्य डा० गोकुलेश्वर जी बड़ी ही कुशलता और बेवाकी के साथ करते आ रहे हैं.

डा० गोकुलेश्वर के इन प्रगतिशील कदमों के लिये सविद ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि भाई गोकुलेश्वर -गोकुलेश्वर ही रहे और यदि वे गोकुलेश्वर ही रहे तो पृथ्वी पर सभी कार्य जो वे सम्पादित करना चाहेंगें निविध रूप से सम्पादित होते रहेंगें। सम्मान में-

तुम चलो चल पड़ेगा
संग तुम्हारे कारवां।
देख लो शायद तुम्हारे
दम से जलती है मशाल।

डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल' बिजनौर, उ.प्र. से लिखते हैः

एक प्रेरक व्यक्तित्वः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

✍ **डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'**
८२, गुजरातियान स्ट्रीट, धामपुर, बिजनौर, उ.प्र., मो० ६७१६०६४६३०

गोकुलेश्वर द्विवेदी जी से मेरी प्रथम भेंट ११मई२००८ को (प्रतापगढ़) में हुए एक साहित्यिक समारोह में हुई. समारोह का आयोजन किया था श्री वृंदावन त्रिपाठी 'रत्नेश' जी ने. औसत कद सामान्य स्वास्थ्य व मृदु व्यवहार, पत्राचार व विश्व स्नेह समाज से जुड़ाव तो पहले से ही था, इस मुलाकात में जिस सहजता से द्विवेदी जी से वार्ता हुई लगा ही नहीं कि हम पहली बार मिल रहे है.

विश्व स्नेह समाज और विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से गोकुलेश्वर जी की पहचान सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं, वरन विदेशों तक में बनी है. प्रतिवर्ष हिन्दी सेवियों का सम्मान व साहित्य मेला का आयोजन आपकी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आपके प्रकाशन से विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है.

आपके कुशल सम्पादन में पत्रिका विश्व स्नेह समाज का विगत १२वर्षो से निरन्तर प्रकाशन आपकी साहित्य के प्रति समर्पण भावना का उदाहरण है. इस पत्रिका के कई विशेषांक चर्चित हुए हैं, जिनमें-पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक, डां०रामकुमार वर्मा विशेषांक, डां०तारा सिंह विशेषांक, शांता बाई विशेषांक, माघमेला विशेषांक, सोनभद्र

विशेषांक, मध्य प्रदेश के साहित्यकार विशेषांक, भ्रष्टाचार कारण एवं निवारण विशेषांक प्रमुख है.

गोकुलेश्वर द्विवेदी के संपादन में ही प्रकाशित साहित्य संकलन ये आग कब बुझेगी (३भाग) चर्चित रहे है। इनमें देश के विभिन्न रचनाकारों की सहभागिता है। ये आग कब बुझेगी में भ्रष्टाचार कारण एवं निवारण, विघालयःज्ञान का मन्दिर या व्यवसाय का अड्डा, आतंकवाद का खात्मा विषयों पर सभी-विधाओं में सामग्री प्रस्तुत की जाती है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान व गोकुलेश्वर द्विवेदी एक दूजे के पर्याय है. इनकी साहित्य व समाज सेवा प्रजम्य है.

एक सामान्य सा दिखने वाला व्यक्ति इतना सबकुछ कैसे कर लेते है. सोचकर आश्चर्य होता है किन्तु प्रत्यक्षम किम प्रमाणम, काम तो इनके सामने है ही, काम पर आपकी छाप स्पष्ट है, तो शक की गुंजाइश ही नहीं.

आपकी यही कर्मशीलता, लगन और समर्पण भावना ही है जिसके लिए मैंने आपको प्रेरक व्याक्त्वि की संज्ञा दी है. द्विवेदी जी ने अपने कार्यों से जो प्रभाव समाज में छोड़ा है, साहित्य जगत -पत्रकरिता जगत में जो मुकाम हासिल किया है वह यूं ही नहीं मिल जाता.

भाई द्विवेदी जी के प्रति हमारी हार्दिक शुभकामनाएं कि वह प्रगति के अगले सोपानों पर यूं ही चढ़ते जायें. उज्जवल सुखी व दीर्घ जीवन की हार्दिक मंगलकामनाएं.

पत्रिका परिवार को बधाई जिन्होनें इस निश्चार्य हिन्दी प्रेमी, सम्पादक-पत्रकार के व्यक्त्वि पर विशेषांक निकालने का मन मनाया.

सम्पादकीय में संतो के जीवन के सत्य का एक पहलू पढ़कर मन घृणा से भर गया. सत्य का साथ निभाते रहिए. पत्रिका में समाहित अन्य सभी रचनाऍ बहु ही अच्छी रही.

-डॉ. बृजेन्द्र सिह बैरागी, बलिया, उ.प्र.

पत्रिका के सम्पादक निश्चित ही सुयोग्य है जो पत्रिका को अनवरत् प्रगति की ओर ले जाने हेतु पूरे मनोयोग से प्रयासरत हैं. इस युग में जब साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान एवं धर्मयुग जैसी पत्रिकायें जो पूजीपतियों की थी काल कलवित हो गयी. वहॅा दिये और तूफान की कहानी की तरह आपने जो यह बौद्धिक दीप जलाये रक्खा है इसी दीप की ज्योति निरन्तर मुखर हो एवं भविष्य में मार्तण्ड की भॉति प्रखर हो मेरा आर्शीवाद सहित साधुवाद स्वीकारें.

-सुधाकर दीक्षित 'सुबोधद्ध, पनकी, कानपुर

सम्पादकीय के माध्यम से आपने भारतीय समाज में श्राद्धकर्म के नाम पर होने वाले अनुचित कार्यो का खुलासा कर अच्छा कार्य किया हैं.

-डॉ. दिनेश प्रसाद शर्मा, भोजपुर, बिहार

श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'बीबीसी', वरिष्ठ फिल्म लेखक, समीक्षक, इंदौर, म.प्र. से लिखते हैः

प्रतिभापुंज साहित्यकारः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

इलाहाबाद संगम की पवित्र नगरी, देश के शीर्षस्थ साहित्यकारों की कर्मस्थली, इसी में वर्तमान में विगत दो दशक से देशभर में साहित्य, सद्विचार, पत्रकारिता, अपनत्व का बिगुल बजा रहे है एक युवा साहित्यकार 'गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी'. जिनकी प्रतिभा व सद्व्यवहार को देखकर मैं हमेशा हतप्रभ रह जाता हूं.

श्री द्विवेदी से पहले पत्राचार से संपर्क, फिर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान से मेरा सम्मान एवं आतिथ्य, इसमें विचारों का आदान-प्रदान, रेलवे स्टेशन के आगमन से एवं फिर विदाई तक इस इंसान ने जो प्रेम का सागर मेरे प्रति बोध किया, उससे मैं सदैव अभिभूत रहता हूं. श्री द्विवेदी न सिर्फ साहित्य के लेखन, विचार, संपादन में ही कुछ करते हैं बलिक उनके विचार व कार्य सर्वोच्चता को चूमते हैं व व्यक्ति मानसम्मान से द्रवित हो जाता है.

मैंने अपने ७६बंसतों में अनेको साहित्य मनीषियों से भेंट की है लेकिन इस सरल व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति से मिलकर मैं न सिर्फ गद्गद हुआ बल्कि मानता हूं कि इलाहाबाद के इस युवा संत साहित्यकार द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' को जोड़ने का जो प्रयास किया जाता है वह अविरल साहित्य में गंगा-यमुना का प्रवाह दिखाई देता है स्तुत्य है.

श्री गोकुलेश्वर कुमाार द्विवेदी ने साहित्य परंम्परा मे सेवा के साथ बहुत कुछ वैचारिकता दी है. मैं उनकी बहुमुखी सेवा की प्रशंसा करना चाहता हूं. ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस प्रभावशाली सादगी पूर्ण व्यक्तित्व को और ऊंचाईयां व सफलता मिले. इस विशेषांक कि सफलता के लिए साधुवाद.

✍ **ब्रज भूषण चतुर्वेदी 'बीबीसी'**
३०१, प्रभात रेसीडेंसी, ६५-७५, तिलक पथ रोड, रामबाग डाकघर के विपरीत, इन्दौर, म.प्र.

डॉ० ओम प्रकाश हयारण 'दर्द' झांसी, उ.प्र. से लिखते हैः

एक असाधारण व्यक्तित्वः डॉ० गोकुलेश्वरजी

यह बात उस समय की है जब डॉ० गोकुलेश्वर जी ने मुझे संस्था विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा विहिसास अलंकरण से अलंकृत करने हेतु २००७ में आयोजित सम्मान समारोह में आमंत्रित किया था. मैं उस तिथि पर इलाहाबाद पहुंच कर प्रथम बार अपनी उपस्थिति दर्ज की. इसी वक्त मुझे डॉ० गोकुलेश्वर जी के दर्शन हुये थे.

यह देखकर मैं बहुत अचंभित था कि यह युवक इतनी प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था का प्रज्ञेता है. इकहरा बदन, गेहुंआ रंग, साधारण कद काठी लिये यह युवक, समाज व देश के लिये ढेरों योजनायें आयोजित कर युवक-युवतियों व सहित्यकारों के उत्थान हेतु दृढ़ संकल्प होकर उन्हें शीर्ष स्थान दिलाने हेतु प्रयासरत है.

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि विश्व हिन्दी सहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद, उ०प्र० डा० गोकुलेश्वर द्विवेदी के व्याक्तित्व एवं कृतित्व पर एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रहा है. यह पुर्नात हम सभी के लिये गौरव की बात हैं. इसके लिये संस्थान को लख-लख बधाईयाँ स्वीकारें.

✍**डॉ. ओम प्रकाश हयारण 'दर्द'**
३२०, सी.पी.मिशन कम्पाउण्ड,ग्वालियर रोड, झांसी, उ.प्र.

आपकी सम्पादकीय में साफ-सुथरी बेबाक बात प्रभावित करती है. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा हिंदी साहित्य के प्रति आपका समर्पण भाव एवं उसके विकास में योगदान सराहनीय है. आपका साहित्यिक क्षेत्र में योगदान महत्वपूर्ण है, जबकि ऐसे आयोजन करना बड़ा कठिन होता है. -**शिव डोयले,** विदिशा, म.प्र.

श्रीमती संतोष शर्मा 'शान' हाथरस, उ.प्र. से लिखती हैः

हिन्दी प्रसार को अग्रसरः श्री गोकुलेश्वर

संतोष शर्मा 'शान'

मेरे साहित्यिक सफर में एक ऐसे समाज सेवी हिन्दी सेवी और साहित्यकार के सम्पर्क में आई जिसे देखकर लगा यही वो व्यक्ति हैं जो हिन्दी को अविरल बहने वाली धारा के रूप में बाँध तोड़ कर बहा देने की उत्सुकता दिखाई है, जिनका नाम है गो+कुल+ईश्वर. ...

ग्राम-सूरतपुर, पो० मैंडू, हाथरसा, उ.प्र.

अपने लेखन से जुड़ने के बाद हिन्दी सेवा में योगदान के सफर में मुझे अनेको सम्माननीय कलमकार पत्रकार मिले, जिन्होंने हिन्दी के उत्थान जैसे कार्यो का वृत लिया हुआ है. परन्तु इस सफर में एक ऐसे भी समाज सेवी हिन्दी सेवी और साहित्यकार के सम्पर्क में आई की उन्हें देखकर, मिलकर लगा की यही....यही वो व्यक्ति हैं जिन्होनें हिन्दी को अविरल बहने वाली धारा के रूप में बाँध तोड कर बहा देने को उत्सुक दिखाई दिये. सम्पूर्णता में विश्व और प्रेम के साथ सारे समाज को मिला दिया.. जोड़ दिया और अपने वृत की खुश्बू के साथ छोड़ दिया. उन हिन्दी प्रेमियों के द्वार तक बहने को 'विश्व स्नेह समाज' के रूप में जिनका नाम है गो+कुल+ईश्वर....

हमारे ब्रज में श्री कृष्णजी ने गौ की यानी गायों की रक्षा हेतु गौचरण लीला की थी, और उन्हीं को गोकुल का ईश्वर कहा जाता है.

आज भी गाय की तरह हमारी हिन्दी भी राष्ट्रभाषा का नाम पाकर भी अपने मूल अधिकार को, अपने सही सम्मान और सुरक्षा को पथराई आंखों से निहार रही है. और इसीलिए तन, मन, धन से अधिकार व सम्मान दिलाने में अग्रसर है हमारे श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी.

मुझे इस संस्था से जुड़े अभी थोड़ा ही समय हुआ है किन्तु इतने समय में ही उनके हिन्दी और समाज के प्रति प्रेम और जुझारूपन से अत्यंत प्रभावित हुई. फिलहाल विश्व हिन्दी साहित्य संस्थान के नौवें साहित्य मेले में उनके प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ. जहाँ मेरी कहानी को प्रथम पुरस्कार के योग्य चुना गया था. जैसे सुना था, उनकी कर्मनिष्ठता हिन्दी के प्रति निस्वार्थ प्रेम, मिलनसार, को देख उससे कही अधिक पाया. उनसे मिलकर जो बात जुबान पर आई वह बस यही थी "यथा नाम...तथा गुण".

बहुमुखी प्रतिभा के धनी और हिन्दी के प्रसार-प्रचार में सहयोग और नये नये आयामों के लिये जिस प्रकार वें हर संभव प्रयत्नशील है. ये वाकई काबिले तारिफ है. यही नहीं हिन्दी के अलावा उन्होंने कर्म को यर्थाथ में बदल वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम एवं अंधविधालय को, उसके प्रबंधन को भी बखूबी संभाला है. एक साधारण व्यक्ति का मात्र एक परिवार को संभालना उसकी जिम्मेदारी निभाना काफी मुश्किल होता है. उनकी जिम्मेदारी....! इतना सब कुछ प्रबन्ध करना, बहुत ही सहजता से प्रसन्नता पूर्वक निभाना, संभालना!! आश्चर्य होता है. यही सब कुछ उन्हें साधारण से असाधारण बनाता है. तभी तो इन सबके बावजूद उन्होंने प्रण लिया पत्रकारों, साहित्यकारों और हर अन्याय के भ्रष्टाचार के प्रति खुल कर आवाज उठाना, इस सामाज के बिगड़ते स्वरुप को संवारने के लिये हिन्दी प्रेमियों को प्रोत्साहित करने का.

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के माध्यम से देशी विदेशी सभी राष्ट्रभाषा प्रेमी जनों को सम्मान व अलकृत करना, साधारण व्यक्ति के लिए बहुत मुश्किल और कठिन कार्य है. अतः मैं चाहूंगी की हमें, हम सबको उनके द्वारा हिन्दी के अस्तित्व को बचाने के लिए शुरु किये गये महान यज्ञ में साथ बैठ कर आहुति देनी चाहिये ताकि समाज में सारी बुराईया जलकर राख हो जाये और हिन्दी का आलौकिक प्रकाश न्याय की सुगंध से सम्पूर्ण विश्व का वातावरण प्रकाश्य हो जाये. गोकुलेश्वर जी को ऐसे महान यज्ञ के लिये कोटिशः साधूवाद....धन्यवाद.

साथ ही ढेरों शुभकामनाएं ताकि वें इन संकल्पों को पूरा कर अपने प्रत्येक प्रयास में सदैव अग्रसर रहे! और उनका यह निर्भीक व्यक्तित्व सभी कलमकारों, पत्रकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें.

श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे, महाराष्ट्र से लिखते हैः

डॉ० द्विवेदी एक सच्चे इंसान व साहित्यकार है

हमारे देश में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भरमार हैं. हिन्दी की तन-मन-धन से सेवा करने का दावा करने वालों की संख्या भी कम नहीं है. आजादी के बाद से ही हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दर्जा दिलाने के लिए असंख्य लेख लिखे गये. करोड़ों के खर्च पर गोष्ठियॉं एवं विदेशी यात्राएँ हुई. केन्द्र व राज्य सरकारों के पास राष्ट्र भाषा कार्यान्वयन का अमला है. लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गॉंधी का सपना आज भी सपना ही है. इस सपने को साकार करने में अन्य विभूतियों के साथ-साथ डॉ. गोकुलेश्वर द्विवेदी का योगदान अतुलनीय, स्मरणीय एवं अनुकरणीय होने के साथ साथ प्रचार-प्रसार योग्य है. ताकि आने वाली पीढी न केवल उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सके अपितु जुझारूपन व रचना के क्षेत्र में उनके योगदान से परिचित होकर कुछ नया सत्यम्-सुन्दरम् करने की प्रेरणा ले. सार्थक चिंतन समाजोपयोगी, मानवता हितैशी तथा राष्ट्र कल्याणकारी होता है. डॉ. द्विवेदी के चिंतन में यह भाव कूट कूटकर भरे हैं. उनकी करनी व कथनी एक समान है. चकाचौंध की दुनिया में जहॉ रातोंरात धन्नासेठ व मीडिया प्रभारी बनने के महाअवसर मौजूद हों वहॉ भला असहाय की सेवा कौन व क्यों करेगा? डॉ. द्विवेदी ने जो रास्ता चुना उसे गॉंधी जी के शब्दों में एक 'सच्चा इंसान व साहित्यकार' का संज्ञा दी जाती है. डॉ. द्विवेदी के प्रत्येक लेख मानव सेवा तथा राष्ट्र उत्थान भाव से ओतप्रोत होते हैं. संपादक की कलम सशक्त, निर्भीक तथा विश्वबन्धुत्व से सराबोर रहती है. मैंरे शब्दों में डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक सच्चे पत्रकार एवं प्रजातंत्र के निर्मल नभ को स्वच्छ बनाए रखने में अपनी कलम का सद् उपयोग कर रहें हैं. मैं इस सशक्त हस्ताक्षर के उज्जवल भविष्य के लिए गोक़ुलेश्वर से प्रार्थना करता हूं.

✍ **बालाराम परमार 'हंसमुख'**

उप प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय नं० १, देहू रोड, पुणे-४१२१०१, महाराष्ट्र

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र. लिखते हैः

पता अंग्रेजी में लिखने पर नाराज हो गए थे :

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी से मेरी मुलाकात इलाहाबाद में हुई थी. मैंने उनको एक सीधा-सादा व्यक्तित्व पाया. जिनके जीवन का उद्देश्य मातृभाषा हिन्दी का उत्थान करना था. उनके चौबीसों घण्टों का चिन्तन केवल हिन्दी, हिन्दी और हिन्दी ही था.

विश्व स्नेह समाज का निरन्तर प्रकाशन डॉ० द्विवेदी की मेहनत का ही नतीजा है. इसके माध्यम से वे समय-समय पर विविध विषयों पर केन्द्रित विशेषांक निकालते आ रहे है. पाठकों का भी बढ़ता हुआ क्रम है जो समय-समय पर उचित प्रतिक्रियाएँ देता आ रहा है. डॉ० द्विवेदी उन महानुभावों में से एक हैं जिन्होनें साहित्य सेवा को व्यापार का माध्यम नही बनाया है. मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होनें अपने भाषण में कहा था कि विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान इलाहाबाद द्वारा दिये जा रहे साहित्य मनीषियों का सम्मान किसी भी तरह धन से जुडा हुआ नहीं है. आज के युग में जब धन बहुत बड़ी चीज है तब इस प्रकार का कार्य करना एक महान समर्पण की भावना को जगाता है. डॉ० द्विवेदी इस बात पर मुझसे नाराज हो गए थे कि मैं अपना पता अंग्रजी में क्यों लिखता हूँ. मैं उनकी भावना का आदर आज तक करता आ रहा हूँ. अन्त में यही कहूँगा हिन्दी के उत्थान में गोकुलेश्वर का योगदान।

सदैव याद रखा जाएगा सदियाँ गायेंगी गुणगान।।

✍ **डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा**

कन्सल्टेंट फिजिशियन २७ ललितपुर कॉलोनी, डॉ.पी० एन० लाहा मार्ग, लश्कर ग्वालियर-४७४००६, म०प्र०

डॉ० सरोज गुप्ता, आगरा, उ.प्र. से लिखती हैः

द्विवेदी जी का व्यक्तित्वः फ्लेवर और तेवर

✍डॉ. सरोज गुप्ता
से.नि. रीडर-हिन्दी,
४/२६६, बालूगंज, आगरा-२८२००१, उ. प्र.

गोकुल धाम की पैदायश, गोकुलेश्वर नाम का प्रभाव, डां०गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के रुप का प्रतिफलन स्वाभाविक प्रक्रिया है, आशीषों की बौद्वार-धाम का प्रभाव, जुझारु व्यक्तित्व का कर्म के प्रति समर्पण, लगन, निष्ठा, आत्म विश्वास का भाव संस्थान की उत्तरोत्तर प्रगति में उनकी भूमिका सराहनीय है.

व्यक्तित्व का फ्लेवर-तेवर उनकी रचना धर्मिता, कार्य शैली कुशल प्रबन्धन-संचालन में झलकता रहा है. इतना ही नहीं अपनी वाक पटुता, सादगी-सरलता के प्रभाव से वह प्रभावित-प्रेरित कर हिन्दी-प्रचार-प्रसार हेतु अपने से अन्य को जोड़कर चलने में भी पांरगत है. अपनी बात कहूँ-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के कार्यक्रम में उनसे मैं प्रथम बार मिली थी. उनका ब्रोशर देखा, उसमें अध्यक्ष पद पर विजय लक्ष्मी विभा, सचिव डां० गोकुलेश्वर द्विवेदी अंकित देखे.

विभा जी से मेरा पूर्व परिचय था. हम एक ही मंच से बोले, सम्मानित हुए है. द्विवेदी जी सामने थे. उनका आत्म विश्वास, वाक् कला, संस्थान की प्रगति के प्रति उनकी लगन-रूझान देखी. एक ही साथ स्नेहाश्रम, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम, गौशाला पुस्तकालय, हिन्दी महाविद्यालय की योजना, चूँकि मैं भरतपुर में अनाथाश्रम से विगत १५वर्षो से सेवा दे रही थी सो मैंने सेवा नियुक्ति के बाद उधर सेवा देने का मन बना लिया.

मैंने संस्थान की सदस्यता ग्रहण कर ली. दो साल बाद उन्होंने मुझे कार्यसमिति का सदस्य बना दायित्व सौंप दिया. काम करना और दूसरों से कराना ये दोनों कला द्विवेदी जी में हाजिर है.

दूसरी मुलाकात १३ फरवरी २०११ साहित्य मेला में हुई. कार्यक्रम का क्रिया-कलाप चौंकाता रहा. बड़ी खामोशी से कार्य निपटाते हुए द्विवेदी जी ने सबका दिल जीत लिया. मंच संचालन, आतिथ्य सत्कार जिसमें आत्मीयता उलीच-उलीच रख दी. संस्थान की प्रगति से सबको आश्वस्त किया.

कुशल संपादक-साहित्यकर के रुप में भी वे आगे ही हैं. उनके व्यक्तिव पर विशेषांक प्रेरणास्पद रहेगा. व्यक्तिव का फ्लेवर-तेवर देख हिन्दी निष्ठ संस्थान की प्रगति में सक्रिय भागीदार बन सामने आयेगें, ऐसा विश्वास है-कर्मठ व्याक्तिव विजयी रहे.

पं.मुकेश चतुर्वेदी 'समीर', सिविल इंजीनियर सागर, म.प्र. लिखते हैः

डॉ० द्विवेदी की राष्ट्रभाषा की सेवा श्लाघनीय

देश-देशान्तर में एक क्रांतिकारी विचारणा शक्ति को जन्म देने वाली मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के संपादक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी ने अपने उत्कृष्ट साहित्यिक आयोजनों, सारगर्भित संपादकीय लेखों, विविध उपयोगी संकलनों तथा अनाथादिक आबाल-वृद्ध सेवा के प्रकल्पों द्वारा राष्ट्र भाषा की सेवा के साथ साथ राष्ट्र-सेवा में अपने आयुष्य के बेशक़ीमती दो दशक विविध अकथनीय प्रतिकूलताओं के बावजूद समर्पित किये वह सर्वथा श्लाघानीय रहेंगे.

ईश्वर उन्हें और अधिक ऊर्जान्वित करते हुये उत्तरोत्तर समृद्धि, सफलता व सुयश प्रदान करता रहे. इसी प्रार्थना व इसी अधिमुक्ति के साथ देश के मूर्धन्य विद्वान ईश्वर शरण शुक्ल का आभार व्यक्त करता हूं इस उपयोगी विशेषांक के संपादन हेतु.

कौन है जो बताये समझाये,
ज़ाते-परवरदिग़ार कब से है
आपकी आंखों में 'समीर' वहां
शोहरतों का ख़ुमार कब से है

✍ पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'
छोटी देवी बाईसा मोहाल, नर नारायण वार्ड, सागर, म.प्र. ४७०००२, मो० ९९२६३५९५३३

आपने पत्रिका में गागर में सागर भरने की कोशिश की है और सफल भी रहे हैं. आपकी साहित्य साधना चिरजीवी हो ऐसी मेरी शुभकामना हैं. दीपा कुटौला 'अर्पिता', अल्मोड़ा, उत्तरांचल

श्री राम आसरे गोयल, सिम्भावली, उ.प्र. से लिखते हैः

हिंदी सेवा को समर्पित डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी पिछले बीस वर्षो से हिन्दी की सेवा करते हुए देश में हिन्दी भाषा के साहित्यकारों को प्रति वर्ष अलग-अलग सम्मानों से सम्मानित करते आ रहे हैं. अनेक विद्वानों को एक साथ सम्मानित करने वाला देश का ये एक मात्र अनूठा संस्थान है. आप 'मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया' के राष्ट्रीय अध्यक्ष, अंध विद्यालय की प्रबंध समिति के सदस्य, वृद्धाश्रम एवं अनाथाश्रम के संचालक तथा अन्यान्य सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए सामाजिक और हिन्दी की तरक्की के लिए तन, मन, धन से समर्पित हैं.

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० द्विवेदी साहित्यकार, शिक्षक, कम्प्यूटर विशेषज्ञ, पत्रकार, लेखक, चिकित्सक, समाज सेवी, सम्पादक, नाटककार के साथ-साथ गरीब असहायों की सेवा को सर्दव तत्पर हैं. आप हिन्दी साहित्य के क्षितिज पर दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में शोभित हैं. दर्जनों सम्मानों से सम्मानित डॉ० द्विवेदी देवरिया जिले के रहने वाले हैं लेकिन जीवन को साहित्य आदि के लिए समर्पित कर इलाहाबाद में रहते हैं. आप पिछले १२ वर्षो से 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पत्रिका का सुंदर ढंग से सम्पादन कर रहे हैं.

अनेकानेक मंचों का संचालन करने के अलावा राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रमुख वार्ताकार के रूप में अपने विशिष्ट पहचान बनाई है. 'हिन्दी महाविद्यालय' के निर्माण हेतु आप दृढ़ संकल्पित है. आपने तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी हिन्दी सेवा व समाज सेवा को ही प्रमुखता दी है. 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका में सम्पादकीय लिखने की शैली जहां नई दिशा देती हैं वहां पाठक को सोचने को भी मजबूर करती है. आपकी पत्रिका अनेक प्रांतों के राष्ट्रभाषा समर्पित साहित्य मनीषियों पर विशेषांक भी निकालती हैं. वास्तव में विज्ञापन विहीन पत्रिका को सात समुन्दर पार तक पहुंचाना आपके कर्मठ और सृजनशील व्यक्तित्व को दर्शाता है.

बाल्यकाल से जिस सेवा भावना का बीज आपके हृदय में हुआ था उसी के फलस्वरुप आपकी इच्छा, वचन बद्धता, जिम्मेदारी, सकरात्मक सोच का परिणाम है कि उसी का विशाल वृक्ष आज फलों से लदा हुआ है डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी के रूप में. आपकी सोम्यता सहज ही सामने वाले को आकर्षित कर लेती है. मैं उनके भविष्य की मंगल कामना करते हुए परमात्मा से कामना करता हूं कि वो डॉ० द्विवेदी को स्वस्थ रखते हुए उनकी संकल्पित राह को सुगम बनायें।

✍ **राम आसरे गोयल**
संदीप टैक्सटाइल्स, सिम्भावली-२४५२०७, उ.प्र. मो०: ९८९७६०३७५२

श्री **मृदुलमोहन अवधिया,** शिक्षक एवं साहित्यकार, जबलपुर, म.प्र. से लिखते हैः

यशस्वी डॉ० गोकुलेश्वर जीः भाव प्रसून

हिन्दी के अभ्युदय में, सक्रिय-सजग समान।
विज्ञ कुमार गोकुलेश्वर जी, पाते अनुमान मान।।
कीर्तिमान उनके कई, प्रतिभा से सम्पन्न।
कलमकार-सम्पादक-लेखक, उनके रूप प्रसन्न।।
विविध विधा सम्पन्न आपका, वैचारिक सरताज।
व्यापक हिन्दी-नेह आपका, 'विश्व स्नेह समाज'।।
बहु आयामी विधा-साधना, नित सादा व्यवहार।
शोध कार्य में प्रस्तुत करते, दिग्गज रचनाकार।।
हिन्दी माता के चरणों में, नत हो चुका ललाट।
महिमा मण्डित हृदय हो गया, पाकर भाव विराट।।
अंचल-अंचल के वागीश्वर, साहित्यिक कृतिकार।
समलंकृत सम्मानित होते, पाकर हृदय उदार।।
हिन्दी सर्व समर्थ युगों से, दिग-दिगन्त में व्याप्त।
देश-देश में बहुविध प्रचलित, नित्य मान है प्राप्त।।
दीप दिखाना अनुचित होगा, जब समक्ष आदित्य।
हिन्दी सेवा सदा अकिंचन, पाकर नव साहित्य।।
विनयशील हिन्दी सेवी हैं, गर्वित पा सत्संग।
दीर्घायुष्य द्विवेदी जी हों, जागे हृदय उमंग।
बार-बार यदि जन्म मिलें तो, होवे अपना साथ।
भारत और भारती का हम, कभी न छोड़े साथ।।

✍ **मृदुल मोहन अवधिया**
हितकारणी महाविद्यालय के निकट, १९९६, देवताल गढ़ा, जबलपुर, म.प्र. ४८२००३

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी के प्रति

क़दम-क़दम हैं बढ़ते जो गोकुलेश्वर द्विवेदी,
हर विकार से लड़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
पत्रकार है, हिन्दी सेवक, बेहतर जो आयोजक है,
सच्चाई पर अड़ते जाते, गोकुलेश्वर द्विवेदी।
सरल-सहज हैं, मिलनसार हैं, विनम्रता को धारण कर,
नित नव मानक गढ़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
दीन-दुखी, वृद्धों को जिसने, करुणा का सागर सौंपा,
संत रूप में मढ़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
है उदारता, परहित लेकर, जिसने मानवता को सींचा,
दया पाठ को पढ़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
पाश्चात्यता फैल रही है, मूल्यों पर छाया संकट,
संस्कृति पद पर पड़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
उपलब्धि, सम्मान, अलंकरण, अनगिन जिसने पाया,
विनत भाव से झड़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
जिसने भी मानवता छोड़ी, त्याग दिया है ईमां को,
उससे नित्य अकड़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।
जिसने सत्य का दामन थामा, नीति के पथ पर राही जो
झूठ से हरदम भिड़ते जाते गोकुलेश्वर द्विवेदी।

डॉ० शरद नारायण खरे,
विभागाध्यक्ष इतिहास, शासकीय महिला महाविद्यालय, मण्डला, म.प्र. ४८१६६१

दर्शनीय व्यक्तित्व (हायकु में)

दर्शन हुआ
बहुमुखी प्रतिभा
वाले व्यक्ति का।
इलाहाबाद
के साहित्य मेला में
प्रभा, शक्ति का।
वह संस्थान
विश्व हिन्दी सेवा का
अनुरक्ति का।
हिन्दुस्तानी
अकादमी हॉल
देश भक्ति का।
बारह ईस्वी
फरवरी, बारह
अभिव्यक्ति का।
सम्मान मेरा
हो रहा था, विद्वान
अन्य व्यक्ति का।
गोकुलेश्वर
बताते सज्जनों को
मार्ग मुक्ति का।
धन्य द्विवेदी
क्या कहना आपकी
सेवा, युक्ति का।
देदीप्यमान
विद्वान द्विवेदी हैं
प्रभा पंक्ति का।
लेखक अच्छे
हर कार्य उत्तम
इस व्यक्ति का।
'भले भलाई
पर लहैं' याद आती
इस सूक्ति का।

डॉ० नरेश पाण्डेय 'चकोर'
सम्पादक-अंग माधुरी, बोरिगं रोड (पश्चिम) ५८ गाँधीनगर, पटना-८०००१, बिहार

आपने अपने संपादकीय में 'श्राद्ध कर्म कितना सच कितना झूठ' में सही मुद्दा उठाया है. यदि हम अपने बड़े बुजुर्गो का आदर, सम्मान व उनकी उचित देख भाल करें तो कुछ करने की जरुरत नहीं हैं. परन्तु न जाने क्यों हम अपने इस कर्तव्य को निबाहने में असफल हो रहे हैं.

-**भीमबली वर्मा,** श्रेष्ठ विहार, दिल्ली

सस्कारोंन्नयन करने वाले रचनाकारों के चयन में आपकी सम्पादकीय मनीषा काबिले कद्र है.

-**डॉ० सत्येन्द्र अरुण**, लखीसराय, बिहार

कम समय में आपने इस पत्रिका को हिन्दी जगत में स्थापित कर एक सम्मानीय स्थान दिला दिया है. यह आपकी लगन एवं समर्पण का प्रभाव है.

-**राजेश्वरी शाडिल्य,** संपादक,भोजपुरी लोक, लखनऊ

डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल', पूर्व प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर, म.प्र.से लिखते है:

राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्पित व्यक्तित्वः डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी हिन्दी भाषा और साहित्य जगत के चर्चित हस्ताक्षर हैं. आपने पिछले दो दशक से अपना संपूर्ण जीवन हिन्दी भाषा के प्रसार प्रचार तथा हिन्दी साहित्य का भंडार भरने के लिए समर्पित कर दिया है. इसी कारण आप हिन्दी साहित्याकाश के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में केवल भारतवर्ष में ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचाने जाते हैं.

आपने हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा केवल साहित्य सृजन के माध्यम से नहीं की है. आप इस हेतु हिन्दी जगत में साहित्य सर्जना करने वाले अक्षरधर्मियों को विभिन्न साहित्यिक संगोष्ठियों में अपने अमूल्य विचार प्रस्तुत करने हेतु भी आमंत्रित करते हैं. इतना ही नहीं आप विभिन्न साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से देश भर के साहित्यकारों को सम्मानित भी करते हैं. इस कार्य में वे अपना तन-मन-धन सभी कुछ अर्पित करते हैं और देश के ही नहीं विदेशों के राष्ट्रभाषा प्रेमियों को आमंत्रित कर विविध सम्मानों से सम्मानित करते हैं.

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी हिन्दी भाषा और साहित्य के उपवन को पुष्पित पल्लवित करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाने और संचालित करने का महनीय कार्य कर रहे हैं.

यह ध्यान देने योग्य बात है कि आप मीडिया फोरम ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष है. आज के युग में मीडिया प्रसार प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम है. अतः आपने इस मीडिया को भी हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रसार प्रचार में लगा रखा है. इस प्रकार अनेक साहित्यिक सम्मानों की वित्त व्यवस्था, उनका प्रसार प्रचार और उपयुक्त आयोजन करके उनके समुचित वितरण को अंजाम देना एक बड़ी भारी जिम्मेदारी होती है. जिसका आप अनेक वर्षो से सफल निर्वाह करते हुए अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं.

आज के स्वार्थपूरित युग में समाज सेवा का बीड़ा उठाना कोई संत स्वभाव वाले व्यक्ति के ही वश की बात हैं. यहां भी द्विवेदीजी अपनी सेवा भावना से यह सिद्ध कर रहे हैं कि आप एक निष्काम कर्मयोगी हैं. अंध विद्यालय की प्रबंध समिति के सदस्य के रूप में, वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम के संचालक के रूप में तथा अन्याय समाज सेवी संस्थाओं से जुड़कर की जाने वाली आपकी समाज सेवा अशक्तों/गरीबों, दीन दुखियों की निस्वार्थ सेवा, सहायता आपकी चारित्रिक भव्यता का स्वयंसिद्ध प्रमाण है.

ऐसे महनीय सद्पुरुष डॉ० द्विवेदी को मेरा विनम्र अभिवादन.

✍ **डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल'**
१४३६/बी, सरस्वती कॉलोनी, चेरीताल वार्ड, जबलपुर, म.प्र.-४८२००२,

मुकद्दर का सिकन्दर

द्विवेदी गोकुलेश्वर कुमार
स्व० पवहरी शरण द्विवेदी के घर के चिराग
नीम सराय मुण्डेरा के रहने वाले
कभी नहीं बैठते बेकार।
दिन भर दौड़ते रहते हैं
रात को देर से घर पहुँचते है
पत्नी की सुनते फटकार
फिर भी खुश रहते यार।
स्नेहाश्रम, वृद्धाश्रम चलाते है
समाज की सेवा करते है
कार्य कर रहे कभी से
सहयोग पाते सभी से।
कम्प्यूटर में माहिर हैं
यह तो जग जाहिर है
लिखावट पर नहीं दे पाते ध्यान
हिन्दी का करते सम्मान।
शालीनता इनमें भरी है
दया की नही कमी है
डॉ० की उपाधि है
ईश्वर शरण इनके साथी है।
करूं क्या इनका बखान
शब्द लिखे नही जाते हैं
ऐसे कर्मठ व्यक्ति को
हम बड़ी मुश्किल से पाते है।

✍ **मोहित कुमार गोस्वामी**
३३, रिफ्यूजी कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद
मो०: ९४१५६९७९७६

काव्याभिनंदनम्

‘विश्व स्नेह समाज’ मासिक प्रकाशन
‘गोकुलेश्वर’ को दे रहा ऊंच आसन
प्रफुल्लित खबर पद मन-सुमन
गोकुलेश्वर द्विवेदी नमन! नमन!!
तीर्थराज का सुपुत्र युग-तीर्थंकर
शुभेच्छु भाव के देव सदा शुभंकर

सतत निकलता रहे ‘स्नेह समाज’
सेवा से फूले-फले भारत गणराज
भर दहा भरता रह हिन्दी का सौध
अभिसिंचित पुष्पित फलित हो पौध
नमन करूं गोकुल तेरी संतता को
तेरी शुचिता को; समता को; सौम्यता को

तेरे धर्म-कर्म तेरी पत्रकारिता को
अर्पित हिन्दी सेवा भावना भविता को
आयुर्विद्या यश बल देकें भगवान
अंतरिक्ष तक गूंजे कीर्तियों के गान!

✍ डॉ० तेज नारायण कुशवाहा
कुलपतिः विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ,
गांधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर, बिहार

काव्याभिनंदनम्

श्री गोकुलेश्वर द्विवेदी प्रयागराज, स्थान
चहुँदिशि चर्चित कर दिया साहित्य सेवा संस्थान
स्नेहाश्रम के है प्रमुख संचालक श्रीमान
‘मीडिया फोरम’ संस्था के अध्यक्ष सुजान
तन-मन-धन अर्पण सतत बीते बीसों वर्ष
हिन्दी के उत्कर्ष हित किया सतत संघर्ष

लेखन सम्पादन सृजन आयोजन अविराम
अल्प समय में द्विवेदी ने पाया खास मुकाम
देश प्रदेश विदेश से पाये कई सम्मान
‘साहित्य-सौरभ’ भेंट कर परिषद मुदित महान

✍ पं. गिरि मोहन गुरू
शिव संकल्प साहित्य परिषद, नर्मदापुरम्, म.प्र.

अनुकरणीय व्यक्तित्व

गंगा, जमुना, सरस्वती,
मिलकर बनाती जहां संगम।
गोकुलेश्वर नाम का एक,
तारा है वहां जगमग।
सीधा-साधा, भोला भाला,
सरल स्वच्छ सज्जन।
सबकी सेवा करता,
करता सबका बंदन।
वृध्द, अनाथों को,
समझे वह अपना।
सुख देकर दुख ले लूं,
यही है उसका सपना।
हिन्दुस्तान में हिन्दी को,
दे सबसे ऊंचा स्थान।
हर हिन्दुस्तानी की,
हिन्दी से ही बने पहचान।
हिन्दी को जन जन में,
पहूँचाने का लिये हैं संकल्प।
कुछ अच्छा करुँ, कुछ नेक करुँ,
यही सोचते हर पल।
जितना भी लिखूँ
लगेगा कम।
‘स्नेह समाज’ पढ़ते रहो,
नही रहेगा गम।
अनुकरणीय व्यक्तित्व,
हैं गोकुलेश्वर।
आप जरुर मिलें,
जब भी मिले अवसर।।

✍ डॉ. संगीता बलवन्त
हिन्दी सांसद, प्रीतम नगर कॉलोनी,
गाजीपुर, उ.प्र.,

कुल मिलाकर सामग्रियों की विविधता और सम्पादकीय दृष्टि का कायल हूँ.

–**सुधाकर**, मधुपुर, झारखण्ड

प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी को कौन, आम आदमी पढ़, समझ सकता है. रेणु को लोग बस तीसरी कसम से ही जानते है. साहित्य को आम आदमी तक पहुँचाने के गत दशक से प्रयास शुरु हुए है. आप भी उसी श्रृंखला में एक रत्न है.

डॉ० कमलेश शर्मा, भोपाल, म.प्र.

पत्र की संपादन कला प्रशंसनीय है. हर स्तर के पाठक पर संपादक महोदय का ध्यान, संपादक महोदय की सुखी दृष्टि का परिचायक है.

–**डॉ० स्वर्ण किरण,** नालंदा, बिहार

महान साहित्यकार, मनीषी, समाजसेवी डां० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के लिए सादर उद्‌बोधित

पंथ पर बढ़ते बटोही!

पंथ पर बढ़ते बटोही पैर मत पीछे हटाना!
क्यों न पंथ अवरूद्ध करदें।
सरित-गिर-गहवर-गुफायें?
क्यों न आ व्यवधान डालें,
शूल सम चुभती हवायें?
पर तुम्हें इनके गले में डाल वाँहें मुस्कराना!
पंथ पर बढ़ते बटोही पैर मत पीछे हटाना!!
पंथ कंटक मय अगर हो,
तो न तुम भयभीत होना!
शूल सारे चुन ओ पन्थी!
फूल मग में तुम सजोना।
ओ, पथिक सबसे विलग पथ हैं तुम्हें अपना बनाना!
पंथ पर बढ़ते बटोही पैर मत पीछे हटाना!!
यह न सोचो चिर तिमिर में,
किस तरह से लक्ष्य पाता?
एक जुगुनू तो अँधेरी रात में,
हो चमक ....पाता।
है तुम्हें हर मावस को यहां पूनम गहाना!
पंथ पर बढ़ते बटोही पैर मत पीछे हटाना!!
क्या पता, कितने गये हैं,
पन्थ पर गुजर राही?
कर रहे है पुष्टि देकर,
चिन्ह पद के, निज गवाही!
है समय-सरि पर तुम्हें भी चिन्ह पद के छोड़ जाना!
पंथ पर बढ़ते बटोही पैर मत पीछे हटाना!!

✍ **बृज बिहारी ब्रजेश**
प्रतिनिधिः विश्व स्नेह समाज मासिक,
'गीतिका' मोहम्मदी खीरी, उ.प्र.,

द्विवेदीजी

हिन्दी की सेवा में
अनन्य, अनवरत सतत श्रम से
देश के कोने कोने में
हिन्दी साहित्यकारों का परिचय पाकर
विश्व में ही स्नेह रचाकर
विविध रीति के साहित्य प्रसार
विविध सम्मान पाकर
तन मन धन सेवा में अर्पित कर
सबको आदर देकर, पाकर
नक्षत्र के जैसे चमकते हुए
आपकी साधना ध्येय उन्नत
कार्य करते अनवरत
हजारी प्रसाद द्विवेदी के जैसे
चारो ओर नाम, कीर्ति पाये
आपको अभिनंदन, अभिवादन

-जे.वी.नागरत्नमा
हिन्दी प्रचारिका,
सिद्धेश्वर नगर, द्वितीय
क्रास, शिमोगा-३,
कर्नाटक

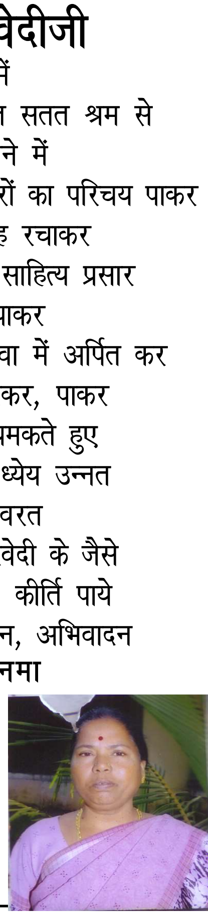

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी आपके लिए

यूँ ही रोशन रहे नसीब आपका,
जैसे रोशन दीवाली के दीप हो रहे।
हर इक पल भी आपकी जिन्दगी का,
इन दियों की तरह जगमगाता रहे।
हर खुशी हो तुम्हारे मुकद्दर में
गम की छाया भी रहे तुमसे दूर ही
मन के ऑगन में फूल खिलते रहे
मुस्कराते रहो कलियों की तरह
खिलखिलाते रहो फूलों की तरह,
तेरे दिल में बहार उमड़ती रहे।
हमेशा रहे तेरे लब पे तबस्सुम
माथे पे न ही गम की शिकन
और ऑखे सदा मुस्कराती रहे
ईश्वर की कृपा हो तुमपे सदा,
तन्हाईया हो हमेशा तुमसे जुदा
तेरे घर में खुशी हर बरसती रहे।

-मुन्नू आनन्द
मकान न० २५४, मल्हूपुरा
मुज्जफरनगर, उ०प्र०-२५१००१

वाणी के वरद सपूत श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी

पावन पुण्य अमिय-सरवर है।
अक्षर-धाम संस्कृति-स्वर है।।
संस्कृति रूपी गोमाता हित-
सचमुच आप गोकुलेश्वर है।।
मातृशक्ति के मान पान से।
हिन्द राष्ट्र के स्वामिमान से।।
सा वसुधैव कुटूम्ब रूप है।
अक्षर साधक ब्रहामान से।।
ऐसे वाणी सुत का वंदन।
अर्पित है यह अक्षत चंदन।।
मानवता के उन्नायक का।
सारा जग करता अभिनंदन।।

लक्ष्मी प्रसाद गुप्त किंकर
ईशानगर(छतरपुर)
म० प्र०

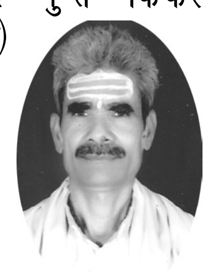

श्री मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी, संरक्षकः भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ, सोनभद्र से लिखते हैः-

हिंदी सेवी डा० गोकुलेश्वर द्विवेदी सरलता के प्रतिमूर्ति

-मिथिलेश प्रसाद द्विवेदी
मान्यता प्राप्त पत्रकार
सोनभद्र, उ०प्र०, मो०-9415874124

पूर्वांचल की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरती बरहज, देवरिया की माटी में पले-बढ़े एक दुबली, पतली काया के हिंदी सेवी, कलमकार व समाजसेवी डा० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी यद्यपि किसी परिचय के मोहताज नही है फिर भी इनके प्रगाढ़ व्यक्तित्व के बारे में कुछ लिखने का अवसर मिला है जिस पर अपने अल्प ज्ञान के बल पर यहां यह उल्लेखित करते हुये कहना है कि डा० द्विवेदी 'विश्व स्नेह समाज' का लगभग 13 वर्षो से जिस दृढ़ परिसंकल्पना के साथ सफलता पूर्वक संपादन व प्रकाशन करते चले आ रहे है. वह इस आर्थिक व व्यवसायिक युग में एक सराहनीय कदम है. श्री द्विवेदी जी के मन मस्तिष्क में हिंदी साहित्य व समाज सेवा की जो अटूट परिसकंल्पना भरी हुयी है निश्चित तौर पर उसका लाभ अपनी मासिक पत्रिका के माध्यम से वे देश, काल व समाज को देते चले आ रहे है. उनके मन में यद्यपि सभी भाषाओं को सम्मान देने की संकल्पना है किन्तु हिंदी भाषा के उन्नयन व उसके विकास के प्रति वे पूरी तरह समर्पित व संकल्पित है. यही कारण है कि वे प्रत्येक वर्ष हिंदी के उन्नयन हेतु हिंदी मेला लगाकर न सिर्फ हिंदी सेवियों को उसके लिए प्रेरित करने का कार्य करते है अपितु देश के विभिन्न प्रान्तों में हिंदी के प्रति कार्य करने वाले लेखकों साहित्यकारों कवियों व पत्रकारों को हिंदी सेवी सम्मान से नवाजने का भी काम करते है. डा० द्विवेदी सम्प्रति दो दशक वर्षो से प्रयाग की धरती एवं गंगा, जमुना व सरस्वती की पावन तट के समीप स्थित नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा इलाहाबाद में रहकर पत्रकारिता, संस्कृति व साहित्य तथा समाजसेवा का कार्य निरंतर करते चले आ रहे है। वर्तमान में जहां विश्व स्नेह समाज, राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन कर रहे है वही पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मीडिया फोरम का भी संचालन बखूबी कर रहे है। इसके अतिरिक्त असहायो, गरीबो की सेवा एवं हिंदी साहित्य, संस्कृति व लोक कला से जुड़े देशभर के तमाम साहित्यकारों कवियों व कलाकारों का सम्मान भी करने से वे नही चुकते। इसलिए तो उन्हें देश के अनेक प्रान्तों में साहित्य व समाजसेवा के क्षेत्र में अग्रणीय रहने वाली संस्थाओं द्वारा उन्हें विभिन्न मानक उपाधियों से न सिर्फ नवाजा गया है बल्कि कई संस्थाओं ने उनका अभिनन्दन भी किया है। ऐसे महान हिंदी सेवी व्यक्तित्व व साहित्य के धनी डा० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के प्रगाण व उल्लेखनीय व्यक्तित्व के बारे में जितना भी देखा जाय कम ही है। उन्होनें सोनभद्र में भी अपनी संस्था की ओर से हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी सेवियों का सम्मान करने का अद्वितीय कार्य किया है। उनके इसी सरल स्वभाव व हिंदी साहित्य के प्रति अगाध आस्था के कारण सोनांचल के साहित्यकार डा० अर्जुनदास केसरी, मुनीर बख्श आलम, प्रख्यात कवियत्री रचना तिवारी, ओम प्रकाश त्रिपाठी, अजय चतुर्वेदी 'कक्का', दीपक कुमार केसरवानी, पत्रकार विजय शंकर चतुर्वेदी व सनोज कुमार तिवारी आदि भी उनके प्रबल समर्थक व प्रशंसक रहे है। अंत में डा० द्विवेदी की सेवा भावना सरलता, सहजता व सबके प्रति सकारात्मक सोच रखने वाली उनकी बुद्धिमत्ता को नमन करते हुये उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

सम्पादकीय पर टिप्पणियां

आप परिश्रमी व्यक्ति है. निरपेक्ष भाव से आपके परिश्रम की अधिकाधिक प्रशंसा की ही जानी चाहिए. ईश्वर करे कि आपकी यही आस्था सदैव ही बनी रहे और साहित्य की दिनोदिन प्रगति करें.

-मुन्नेबाबू दीक्षित, सहा.बेसिक शिक्षा अधिकारी, पीलीभित

संपादकीय में पुलिस विभाग के कार्यो पर व्यंगात्मक टिप्पणी सामयिक लगी.

-राजेश कुमार पुरोहित, भवानीमंडी

पत्रिका में संपादकीय पुलिस विभाग का काम बदल गया है बहुत अच्छा लगा. इस लेख में आपने वर्तमान पुलिस के चेहरे को बेनकाब किया है. इसके बावजूद पुलिस महकमें की सेहत पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है. विविध साहित्य विधा से भरपूर आपकी पत्रिका हरवर्ग के लिए पठनीय है. कम कीमत में इतनी सामग्री उपलब्ध कराना बड़ा ही आश्चर्य जनक लगता है. सही मायने में हिंदी की सेवा आप हृदय से कर रहे है.

-राम सहाय वर्मा, नोएडा

पत्रिका के अंक में आपके सम्पादकीय को पढ़कर सुखद आश्चर्य हुआ. वह पचपन की नायिका, दिखती है पच्चीस, मेकअप तुझे प्रणाम है, तु यूग का जगदीश
और दूसरे दोहे-बाली वुड के अजब है रंग-ढंग दस्तूर
जिसके तन पर वस्त्र कम, मलिका वही हुजूर।
मुझे अच्छा लगा. पत्रिका की सामग्री पठनीय व रोचक है.

-डॉ. रामसनेही लाल शर्मा, फिरोजाबाद, उ.प्र.

देश की आंतरिक सुरक्षा के खतरों को लेकर आपका सम्पादकीय मन को झकझोरता है. लगता है हमने अपनी शान्ति को देश के ही रक्तबीजों के सुपुर्द कर रखा है. देश से गद्दारी करते नेताओं से जब तक मुक्ति नहीं मिलेगी, तब तक देश यूँ ही आतंकवाद की भट्टी में सुलगता रहेगा.

-रमेश राज, संपादक, तेवरी पक्ष, अलीगढ़, उ.प्र.

अंक साधारण एवं सरल होते हुए भी आकर्षक एवम् पठनीय है. पत्रिका का विशेष आकर्षक था-संपादकीय. समयानुकूल, तथ्य परक, विषय, जो सोचने पर मजबूर करते हैं-हम क्या थे? क्या कर रहे हैं? अपहरण एक व्यवसाय हो गया है. इससे लोग अपनी रोजी-रोटी चला रहे है. इसमें मात्र अशिक्षित बेरोजगार आदि ही नहीं वरन् सभ्य वर्ग भी सम्मिलित है. आपके उत्कृष्ठ संपादकीय, भागीरथ प्रयास के लिए साधुवाद.

-रितेन्द्र अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

हिन्दी के प्रचार प्रसार में तथा सौहार्द, भाईचारा आदि की स्थापना करने में आपकी पत्रिका बेहद उपयोगी हैं. यह हर्ष की बात है कि हिंदी के माध्यम से आप जैसे विद्वानों के संपर्क में आने का अवसर मिला है.

-डॉ.जार्जकुट्टी वटोत्त, रीडर-हिंदी, सेंट थामस कॉलेज, पाला, कोटटायम, केरला

आपका कुशल सम्पादन एवं लेखकों व कवियों की रचनाधर्मिता एवं समर्पित भाव अच्छा लगा. आप किन परिस्थितियों में साहित्य सेवा कर रहे है नहीं जानता किन्तु पत्रिका से आपका सुरुचिपूर्ण सम्पादन एवं समर्पण स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है.

-डा. राजकिशोर सक्सेना 'राज', पूर्व सहायक नगर आयुक्त, उधम सिंह, उत्तराखंड

पत्रिका जनवरी अंक प्राप्त हुआ जिसे बहुत ही बेहतरीन और दमदारी से प्रकाशन किया जा रहा है. जिसका मुख्य उदाहरण आपने दिसम्बर०६ के अंक में राज ठाकरे पर देशद्रोह का मुकदमा क्यों नहीं? अपनी बात से आपने वास्तविक इन देशद्रोहियों को बेनकाब किया है जो कुंए में मेढ़क बनकर संकीर्ण विचार धाराओं से जुड़े क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद जैसे मुट्ठी भर लोग जिनमें अधिक नहीं करोड़ो में सैकड़ा भी नहीं, व्यर्थ का काम और हल्ला मचा देते हैं.

-कवि विनोद अलबेला,शिवपुरी, म.प्र.

आपकी 'अपनी बात' प्रभावपूर्ण रहती है. बेबाक साफ सुथरी बात कहने के लिए बधाई.

-शिव डोयले, विदिशा, म.प्र.

आपने साफ सुथरी छवि एवं सैद्धांतिक प्रवृत्ति के साहित्यकारों, कवियों व लेखकों के जीवन परिचय व यथागुणों की महत्ता पर चर्चा करके साहित्य प्रेमियों का दिल जीत लिया है. मेरी हार्दिक इच्छा है कि पत्रिका में और निखार आयेगा.

-जसवन्त सिंह जनमेजय, नई दिल्ली

आपकी संपादकीय में लिखी बात है 'आज जरुरत है सर को सही करने की' पत्रिका आवाज दे रही हैं. हम अपना कर्तव्य करें, समाज पर प्रभाव तो पड़ेगा ही. ऐसा विश्वास है. कार्य अच्छा हैं.

डॉ. श्रीमती विनोद तिवारी, रीवा, म.प्र.

आप अच्छे और सुलझे हुए संपादक है. आपने विश्व स्नेह समाज का कई सफल विशेषांक निकाला है, आपको सफलता मिली है. मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ है-

-बुद्धेश्वर प्रसाद सिंह, सम्पादक, मधेपुरा, बिहार

कुछ विदेशी शुभचिन्तकों के भी संदेश प्राप्त हुए. जिन्हें अंग्रेजी में होने के कारण एक में समाहित कर दिया जा रहा है:-

वेल विशेज

इट्स ग्रेट प्लीजर टू नो दैट नेशनल पापुलर मैगजीन 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पब्लिशड ए स्पेशल इश्यू ऑन डॉ.गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी. वी रीयली थैंकफुल टू ऑल मेम्बर्स हू इनवाल्व इन दीस स्पेशल वर्क. वी नो डॉ. द्विवेदी नियरली लास्ट ५-७ ईयर्स. ही इज वेनी सिनसियर, लेबोरियस हार्डवकिंग सोशल परसन. ही टोटली डीवोटेड फॉर सोशल वर्किग. वी विश हीम फार हेल्थी लाग लाईफ

नैन्सी डेवेंनपोर्ट
फ्री टाउन, सियेरा लियोन

मरीयाम्मा सिसे
फ्री टाउन, सियेरा लियोन

नाजिया नवाबजादा
एंटीओच, कैलिफोर्निया

जॉन जे. डन्फी
गॉडफ्रे, इल्लिनोज

सम्पादकीय पर टिप्पणियां

आपने 'अपनी बात' में वीआईपी सुरक्षा पर सामयिक कटाक्ष किया है. काश अदालत का निर्णय और आपकी प्रेरणा शासकों की आंखे खोल पाती! साहित्य के क्षेत्र में आपका प्रयास स्तुत्य है.

-नन्द कुमार मनोचा 'वारिज', लखनऊ

आपकी साहित्यिक सेवा राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है. यह सुखद विषय है. आप जैसे मनीषी ही देश हित और हिन्दी पत्रकारिता को स्थायित्व दिशा दे सकेगें.

-ओम प्रकाश त्रिवेदी
संपादक, साहित्य जनमंच, गाजियाबाद, उ.प्र.

यौन उत्पीड़न पर आधारित आपका आलेख सच्चाई बयान करता है. चौटालाओं की कमी नहीं देश में तमाम नेताओं के द्वारा किये भ्रष्ट्राचार और उन की अपार धन-संपत्ति संग्रह की लोलुप प्रवृत्ति को उजागर कर रहा है यह आलेख. **-प्रताप सिंह सोढ़ी,** इन्दौर,मप्र.

रादना फरचुला सपला
क्रागुजेवाक, सर्बिया

हैपी वर्थडे एण्ड वेस्ट विशेज फॉर पब्लिकेशन ए स्पेशल इश्यू ऑन यू ऑफ 'विश्व स्नेह समाज'
माईकल निकेलस विजडम

क्रागुजेवाक, सर्बिया

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिल्कुल आसान

१. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खाता संख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,

२. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

१०वें साहित्य मेला के अवसर पर

मां भारती के चरणों में वन्दन करता हूं. मां सरस्वती के चरणों में वन्दन. इस साहित्य मेला में पधारे सभी अतिथिगण, साहित्यकार बन्धुओं व मातृ शक्ति को नमन! श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान को बहुत बहुत बधाई जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से संस्थान से जुड़े हुये सभी पदाधिकारियों व सम्बन्धित प्रतिनिधियों को भी बधाई व शुभकामनाएं. मेरा संस्थान से पिछले ३-४ वर्षो से सम्पर्क रहा है. संस्थान की पत्रिका में समय-समय पर मेरे अनुभव के आधार पर रचनाएं भेजता रहा हूं व सम्पादक जी की कृपा से कभी-कभी प्रकाशित भी होती है. श्री द्विवेदी जी की लेखनी में बड़ी ताकत है वे राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, पत्रिका, साहित्य जगत व संस्थान के समर्पित योद्धा है. राष्ट्र भाषा के प्रति हम जागरूक नहीं हैं यदि है भी तो सरकार की पर्याप्त सहायता नहीं. आज राष्ट्र भाषा अपंग लड़खड़ाती अंग्रेजी की बैशाखी के सहारे चलती है. साहित्य समाज का दर्पण होता है. उसका प्रतिबिम्ब साहित्य में निहित होता है. भारतीय संस्कृति की पृष्ठ भूमि में त्याग, तपस्या, दया, दान, सन्तोष और शांति का महत्वपूर्ण स्थान है. साहित्य जगत में अनेक ग्रन्थ पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है लेकिन उसका लाभ प्रत्येक मनुष्य को नहीं मिल पाता क्योंकि उसका सामर्थ्य क्षमता नहीं है कि अधिक लागत की पुस्तक खरीद कर पढ़ सके तथा वे आलमारी व पुस्तकालयों की शोभा बन कर रह जाती है. इसके लिये मनन-चिन्तन करना है. सरकारी अनुदान से कम मूल्य रखे ताकि अधिक से अधिक व्यक्ति लाभ उठा सकें. भारतीय संस्कृति व सभ्यता की उन्नति में साहित्य जगत का बहुत बड़ा योगदान रहा है. साहित्य में मानव के द्वारा विकसित परम्परारें, रीति-रीवाज, आचार-विचार, धर्म, कला तथा पर्यावरण संरक्षण का समाविष्ट है. आज के इस प्रजातंत्र के युग में विका का स्तम्भ पत्रकारिता-समाचार-पत्र व साहित्य है. संसार की समस्त प्रकार की नित्य नवीन गतिविधियों को जन-जन तक पहुंचना पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य है. यह सदैव लोकतंत्र की पूरक रही है. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में साम्राज्यवादी शक्तियों पर देशवासियों को विजय मिली उसका मुख्य श्रेय साहित्य जगत को है. थोड़े से शब्दों में बड़ी बात कहना एक अच्छे साहित्य के गुण है. साहित्य जगत एक विशेष सम्प्रदाय, जाति-पंथ, देश समाज से प्राबद्ध न होकर सार्वभौमिक है. सभी साहित्यकारो को एक जुट होकर भ्रष्टाचार, आतंकवाद, भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, सामाजिक कुरुतियों के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए. पत्रकारिता साहित्य प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ है. साहित्य में भारतीय इतिहास संस्कृति, भारतीय ज्ञान, भारतीय सदाचार का प्रतिपादन करने का संकल्प लेना चाहिए.

-देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
छोटी खाटू वाले
1431, चाणक्य मार्ग, सुभाष चौक,
जयपुर-302002, राजस्थान

आवश्यकता है हिन्दी साप्ताहिक

का बा चर्चा

हेतु विभिन्न शहरों में समाचार/विज्ञापन प्रतिनिधियों, ब्युरो प्रमुख की. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

१० रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड इलाहाबाद-२११००१
मोबाईलः 9935396715, 9335155949

बेबाक संपादकीय के लिए बहुशः धन्यबाद. यह पत्रिका साहित्य, राजनीति तथा समाज की समसामयिक गतिविधियों पर अच्छी-खासी सामग्री प्रस्तुत कर रही हैं. हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न आप जैसे सपूतों को पाकर ही भारतमाता गौरान्वित होती हैं. प्रचार-प्रसार के इस महायज्ञ में शामिल आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाईयां.

-डॉ० हरेराम पाठक, डिगबोई महिला महाविद्यालय, डिगबोई, असम

मुद्दा

अंधा न्याय, लंगड़ा कानून

कसाब को आतंक मचाते हुए गिरफ्तार किया गया था, जिसके सबूत वीडियो सीडी के अलावा प्रत्यक्षदर्शी भी थे. तमाम सबूतों के बावजूद मामला वर्षो तक चला जिस पर करोड़ो रुपए खर्च हुआ. शंका तो यह भी थी कोर्ट में फांसी की सजा होने पर भी क्या उसे फांसी दी जा सकेगी? ठीक ऐसे ही इन्दिराजी की हत्या के बारे में भी हुआ. जहां उनकी हत्या होते अनेंको ने देखा फिर भी सबूतों को गूंथने का काम चलता रहा.

&lekt izokg, मुंबई

न्याय की देवी आंखों पर पट्टी बांधे तराजू से न्याय तोलती है तो दूसरी तरफ हमारा कानून किस हद तक लंगड़ा और लाचार है कि खुले सबूतों के बावजूद न्याय में वर्षो लग जाते है. उदाहरण अगर ले तो कसाब को पूरी दुनिया(मीडिया) के सामने आतंक का उत्पात मचाते हुए गिरफ्तार किया गया था, जिसके सबूत वीडियो सीडी के अलावा प्रत्यक्षदर्शी मौजूद रहे और बाद में कोर्ट की कार्यवाही शुरू होने पर उसने अपना जुल्म भी कबूल कर लिया था परन्तु जैसे ही हमारे कानून की जानकारी उसे मिली वह मुकर गया कि मुझसे जबरन गुनाह कबूल कराया गया है और बावजूद तमाम सबूतों के मामला वर्षो तक चला जिस पर करोड़ो का खर्च न्याय प्रक्रिया में और उसकी उसकी सुरक्षा पर करना पड़ा. शंका तो यह भी थी कोर्ट में फांसी की सजा होने पर भी से उसे फांसी दी जा सकेगी? कोई नहीं कह सकता था. आखिर उसे फांसी दे दी गई. एक तरफ कानून लंगड़ा है तो दूसरी तरफ उसमें भी राजनीति की दखल वोटों की फिकर प्रभावी हो जाती है. वर्षो पूर्व महात्मा गांधी की हत्या करने वाले ने स्वयं को कानून के हवाले किया साथ सबूतों के और उसने प्रथम दिन से ही मैंने गांधी की हत्या की है की खुली स्वीकृति की परन्तु बावजूद तमाम सबूतों के हमारी कानून व्यवस्था ने दो वर्ष का समय खराब किया. ठीक ऐसा ही इन्दिराजी की हत्या के बारे में भी हुआ. जहां उनकी हत्या होते अनेंको ने देखा फिर भी सबूतों को गूंथने का काम चलता रहा. ये तो दो जगजाहिर उदाहरण है बाकी ऐसे अनेक मामले हैं जिनमें कानूनी कार्यवाही की लम्बी और थका देने वाली प्रक्रिया से वर्षो निकल जाते है. किये गये दावों की फरियाद का निराकरण होने में पीढ़ियां निकल जाती है.

दूसरे उदाहरण- शहरों के गटर के खुले मेनहोल के देखे जा सकेंगे. जिनमें वारदाते होती रहती है परन्तु लापरवाह कर्मचारियों, अफसरों पर कार्यवाही नहीं होती. जमीनों में खुदनेवाले बोरवेल के खुदाई के दरम्यान गड्ढे खुले पड़े रहते है जिनमें आए दिन छोटे बच्चे गिरकर मरने के किस्से भी मीडिया पर देखने को मिलते है. ठीक इसी तरह बिजली के खुले जंक्शन बाक्स और सड़कों पर से गुजरने वाले बिजली के नंगे तार अथवा रोड लाईट्स के खंभों में बिजली लीकेज को लेकर अकस्मात होते रहते है, मगर उनकी रोकथाम या बेपरवाह कर्मचारियों पर कानूनी कार्यवाही नहीं होती. हमारे देश आई.पी.सी, सिविल, रेलवे, पोस्टल, सेल्स टैक्स, इन्कम टैक्स, कस्टम आदि को मिलाकर लाखो कानून है. ऊपर से एक कानूनी कलम ऐसा भी है 'व्यक्ति को हर कानून की जानकारी रखनी चाहिए. कानून की अनभिज्ञता बचाव नहीं हो सकती.' अब कोई पूछे कि इतने सारे कानून तो ब्रह्मा जी को भी याद नहीं हो सकते. मगर इसी न्याय से सरकार व अदालत चल रही है. किसी ने इसका प्रतिवाद नही किया. नतीजा, आज इन लूले लंगड़े समय बाह्य कानूनों से न्याय प्रक्रिया में वर्षो निकल जाते है. सबसे बड़ी बात हमारा न्याय चलता है सबूतों पर और सबूत बदले जा सकते है, मिट जाते है या फिर अपराधी और गवाह मुकर जाते है तब न्याय जो भी मिलता है वह सही कैसे हो सकता है? झूठ का सच और सच का झूठ चलता रहता है. नतीजा खूंखार अपराधी निर्दोष छूटकर नये -नये जघन्य अपराध करते रहते हैं. पकड़े हुए आंतकियों पर मामले चलते रहते है पर वर्षो तक उन्हें सजा नहीं होती.

आजादी मिलने से लेकर अब तक पिछले 63 वर्षो में करीब 15 हजार हिन्दू मुस्लिम दंगे छुटपुट कारणों को लेकर हुए है. मामूली बातों को लेकर हुए दंगो में हजारो निर्दोष मार गए, हजारों घर जले, लाखों ही बेघरबार

हुए या लुटे-जिन्हें लेकर अपराधी तत्वों को पकड़ा भी गया मगर अभी तक किसी भी दंगाई बदमाश को दण्ड नहीं मिला. मामले चलते है और कुछ वर्ष बाद राजनैतिक दबाव को लेकर समाप्त हो जाते है. नतीजा, ऐसे बदमाश व गुण्डा तत्व जब तब दंगा-फसाद करने को तत्पर रहते है. क्या यह हमारी न्यायव्यवस्था की त्रासदी नहीं है? अगर ऐसे अपराधी तत्वों को कड़ी सजा मिली होती तो अब तक ये दंगे समाप्त हो चुके होते. यही हाल आतंक मचाने वाले उत्पातियों का है, जिन्होंने देश में जगह जगह बम फोड़े, हजारों निर्दोषों की हत्या की-उनमें कई तो पकड़ में ही नहीं आए. जो आए उन पर भी वर्षो से कोर्ट कार्यवाही चल रही है. पार्लियामेंट हाउस पर अटैक करने वाले अफजल गुरू को वर्षो बाद तो फांसी की सजा हुई और उसके बाद भी वह वर्षो मौज किया सरकारी मेहमान बनकर. जिस पर लाखो खर्च हुए.यही हाल तमाम आतंकवादियों का है. इंग्लैड और अमेरिका में भी आतंकवादियों ने बम फोड़े थे जिन पर तुरंत कार्यवाही होकर उन्हें दण्ड दे दिया गया है. पर हमारे देश भारत का ही कानून अपंग और लगड़ा है, जहां इन खूंखार लोगों को सहलाया जाता है. उन पर करोड़ो का खर्च हो रहा है. समझ में नहीं आता कि ऐसे आतताईयों का जिनका कि अपराध खुले आम होता है, जो सैकड़ो निर्दोषों की मौत का कारण बनते है, उनके प्रति ये ढिलाई क्या कानूनी अपंगता नहीं? फिर उन्हें सजा हो जाने के पश्चात भी दामाद की तरह रखना?

इस देश में गरीबों को न्याय नहीं मिल पाता. एक तो कानूनी प्रक्रिया बड़ी लम्बी और थका देने वाली होती है. दूसरी बात जब कार्यवाही लम्बी चलेगी तो उसकी फीस भी वकील लम्बी लेगा. बाकी कोर्ट फीस भी लगती है. उपरान्त कोर्ट के आने जाने के चक्कर. इसलिए किसी ने कहा है कि हिन्दुस्तान के कोर्टो में जो जीता वह हारने के बराबर और जो हारा वह मरने के बराबर हो जाता है.

1984 में इन्दिरा गांधी की मृत्यु के पश्चात हजारों निर्दोष सिखों का कत्लेआम किया गया. उनके घर जलाये गये. इसके पूर्व 1948 में गांधीजी की हत्या के बाद भी महाराष्ट्र व अन्यत्र चुनचुनकर ब्राह्मणों को मारा गया, उनके घर जलाये गये. ये दोनों ही स्वयं को अहिंसावादी गांधीवादी या शांतिप्रिय कहलाने वालों ने ही किये, शासन भी उन्हीं का रहा. इसलिए कभी कोर्ट की कार्यवाही नहीं हुई. कहते है कि हिन्दुस्तान में हिन्दू मुस्लिम दंगों के पीछे भी कांग्रेसी राजनीति रही है. मुस्लिम गुण्डे जो बात बेबात किसी भी मामूली बात को लेकर दंगे कर देते है. वे सब कांग्रेसी वोट बैंक है. इसलिए बजाय उन्हें दण्डित करने के संरक्षित किया जाता है. हमारा कहना है यह नहीं कि केवल मुस्लिम गुण्डों को ही दण्डित किया जाये, हमारी मांग तो जो शांति भंग करता है, निर्दोषों की मौत का कारण बनता है, उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए, चाहे वह कोई भी क्यों न हो. तभी न्याय की निष्पक्षता पर लोगों का विश्वास बैठेगा. 1984 के सिंख दंगे हुऐ करीब 28–29 वर्ष हो गये. अभी भी अपराधियों के आरोप तय नहीं हुये और ना ही उन्हें दण्डित किया जा सका है. उलट उनको राज्यसभा, संसद या मंत्री मण्डल की सम्मानीय सदस्यता दी गई. तब सही न्याय की क्या उम्मीद की जाए?

अफजल गुरू को वर्षो बाद तो फांसी की सजा हुई और उसके बाद भी वह वर्षो मौज किया सरकारी मेहमान बनकर. जिस पर लाखो खर्च हुए.यही हाल तमाम आतंकवादियों का है. इंग्लैड और अमेरिका में भी आतंकवादियों ने बम फोड़े थे जिन पर तुरंत कार्यवाही होकर उन्हें दण्ड दे दिया गया है. पर हमारे देश भारत का ही कानून अपंग और लगड़ा है, जहां इन खूंखार लोगों को सहलाया जाता है.

इसी तरह 1984 के भोपाल काण्ड का हुआ. वहां से युनियन कार्बाइड कारखाना जो अमेरिकी कंपनी का है, व्यवस्था की लापरवाही को लेकर जहरीली गैस लीक होने के कारण 25000 से भी ज्यादा लोग मारे गये और लाखों लोगों के शरीर पर चमड़ी पर आंखों पर, गर्भवती महिलाओं के गर्भ पर इस तरह गंभीर असर हुआ जिसका 28 वर्ष बाद भी दुष्प्रभाव देखा जा सकता है. इस जघन्य अपराध को तब की प्रदेश सरकार और केन्द्र सरकार दोनों ही कांग्रेस की थी. राज्य के मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह थे तो केन्द्र के प्रधानमंत्री राजीव गांधी थे. चर्चा है कि उन पर अमेरीकी दबाव रहा कि इस मामले में कंपनी के चेयरमैन एन्डरसन को कोई तकलीफ नहीं हो. कारण कि घटना घटित होने पर पुलिस ने कंपनी के तमाम अधिकारियों को लापरवाही के अपराध में गिरफ्तार किया था. मगर

चेयरमैन एन्डरसन को गिरफ्तारी क तुरंत बाद जमानत पर छोड़ दिया गया. जिसकी जानकारी कंपनी वालों ने अमेरिकी सरकार को दे दी वहां तत्काल हरकत शुरू हुई और शंका है कि वहां के किसी बड़े अधिकारी ने एन्डरसन को तत्काल छोड़ने व सुरक्षित अमेरिका भेजने का दबाव दिया. संभावना है कि हमारी केन्द्र व प्रान्तीय सरकारें उस आका के दबाव में आई हो फिर हमारे टूटपूंजीये नेताओं ने यह भी विचार किया होगा कि किसी विदेशी कंपनी की नालायकी और लापरवाही पर कार्यवाही की गई तो हमारे यहां विदेशी मुद्रा का निवेश कौन करेगा? गजब तो तब है कि उन पीड़ितों को सही मुआवजा भी वर्षो तक नहीं मिल पाया. पर यहां मामला हजारों की मौत का और लाखों के जीवन का था- पर इतना सोचने की बुद्धि हमारे इन बौने और डफोल नेताओं में कहां है? मानवता भी जैसे मर गई हो. गरीब की मौत तो कीड़े मकोड़ो की मौत होती है. यही दुर्घटना कभी अमेरिका में हुई होती तो वहां की कार्यवाही का अंदाजा किया जा सकता है. अमेरिका के आतंकवादी हमले में जहां एक इमारत को उड़ाया गया और कुछ हजार लोग मारे गये तो बदले की कार्यवाही में अमेरिका ने इराक और ओसामा के कारण अफगानिस्तान पर आक्रमण कर तहस नहस कर दिया था. ऐसा ही इंग्लैण्ड के रेलवे स्टेशन पर हुये बम विस्फोट को लेकर कड़ी कार्यवाही इग्लैंड ने की थी जिसके बाद वहां दुबारा कोई घटना नहीं हुई. जबकि हमारे यहां तो आतंकवादी हमारे घरों व मोहल्लों में छुपे रहते है-ये आतंकवादी कौन है? एक ही कौम के ये गद्दार जिन्हें स्थानीय लोग मदद किया करते है. उन पर कार्यवाही तो दूर, उंगली भी नहीं उठाई जाती कारण कि वे सभी धर्मनिरपेक्षियों की वोट बैंक है. जब देश के हित का आम जनता की सुरक्षा या कल्याण की बजाय केवल वोट पर नजर रहेगी तो वहां आतंकवाद कैसे रूकेगा?

भोपाल गैस काण्ड के मुख्य जिम्मेदार एन्डरसन को राज्य के मुख्यमंत्री के विशेष विमान में तत्काल दिल्ली भेजा गया. चर्चा रही कि उस विमान में खुद मुख्यमंत्री साथ गये थे. फिर उसे उसी दिन आनन-फानन में अमेरिका भेजा गया. इतनी तत्काली कार्यवाही बिना केन्द्र सरकार की विदेश विभाग के सहमति के संभव नहीं होती. उसे भगाने में प्रधानमंत्री का नाम विशेष रूप से लिया गया. संभव है कि अमेरिकी सरकार का दबाव उन्हीं पर रहा होगा. उसे कानूनी कार्यवाही में हस्तक्षेप कर बाहर भेजा गया. यहां दो बात मुख्य हुई-चूंकि मुख्य जिम्मेदार आरोपी का पलायन कराया गया साथ ही उसके चलते कानूनी कार्यवाही भी ढीली कर दी गई. जब सरकार जो कानून की रक्षक है वही जब कानून विरोधी कृत्य करे तो नतीजा क्या होना था? उन्हें अपनी जिम्मेदारी का भान नहीं रहा. पद तो 4—5 वर्ष की सीमा में है. आज जब उन पर बदनामी का कीचड़ फेंका जा रहा है तो कौन-सा अमेरिका उनकी मदद करेगा? जनता में उन दोनों की तथा खुद कांग्रेस पार्टी की छबि धूमिल हुई है. खैर उन्हें इसकी क्या परवाह? दोनों ही स्वर्गवासी हो गये है. तीसरी बात 25 हजार के मरने का और लाखों की यातनापूर्ण जिन्दगी की इन्हें परवाह नहीं रही. परवाह तो वहां की जनता को भी नहीं रही तभी तो बाद के चुनावों में इन्हीं अपराधी लोगों और उनकी पार्टी को चुना गया. हमारे देश की कमनशीबी है कि यहां जहरीली दारू पीकर मरने वालों व बम बनाते हुये मरने वालों को तत्काल लाख दो लाख का अनुदान दे दिया जाता है. विमानी दुर्घटनाओं को तो 10—15 लाख का मुआवजा तत्काल देने की घोषणा होती है. पर यहां बेचारे हजारों निर्दोष जो नींद मे सोये हुये थे वे इन हरामखोरी की हलकटाई और हलगर्जी से हमेशा के लिए मौत की नींद में सो गए. वर्षो बीत गये उन्हें सही न्याय मिलना, मुआवजा मिलना तो दूर बल्कि अपराधियों को भी मामूली सजा और तुरंत जमानत की मंजूरी ऐसा न्याय भी 27 वर्षो बाद मिला है. यह तो स्वाभाविक है कि न्याय की देरी यानि न्याय का न मिलना. साथ ही वर्षो के बीतने पर सबूतों की हेराफेरी होना स्वाभाविक है. जहां जिस देश में रिश्वत का बोलबाला कदम कदम पर है वहां उस अपराधी कंपनी ने अपने बचाव के लिए नेताओं को रिश्वत की रेलमछेल नहीं की होगी? कौन विश्वास करेगा? जब सबूत सही नहीं तो न्याय सही नहीं. इसीलिए कहा जाता है कि हमारी न्याय व्यवस्था अंधी है और कानून लंगड़ा और अपाहिज.

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ-0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

अक्सर लोगों को कहते सुना होगा!

हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवी देवता है???

-रतन दीप
न्यू इण्डिया एंश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड, इलाहाबाद, उ.प्र.

लोगों को इस बात की बहुत बड़ी गलतफहमी है कि हिन्दू सनातन धर्म में 33 करोड़ देवी-देवता हैं. लेकिन ऐसा है नहीं और, सच्चाई इसके बिलकुल ही विपरीत है. दरअसल हमारे वेदों में उल्लेख है 33 'कोटि' देवी-देवता. अब 'कोटि' का अर्थ 'प्रकार' भी होता है और 'करोड़' भी. तो मूर्खों ने उसे हिंदी में करोड़ पढना शुरू कर दिया जबकि वेदों का तात्पर्य 33 कोटि अर्थात 33 प्रकार के देवी-देवताओं से है (उच्च कोटि.. निम्न कोटि इत्यादि शब्द तो आपने सुना ही होगा जिसका अर्थ भी करोड़ ना होकर प्रकार होता है) ये एक ऐसी भूल है जिसने वेदों में लिखे पूरे अर्थ को ही परिवर्तित कर दिया.

इसे आप इस निम्नलिखित उदहारण से और अच्छी तरह समझ सकते हैं अगर कोई कहता है कि बच्चों को 'कमरे में बंद रखा' गया है, और दूसरा इसी वाक्य की मात्रा को बदल कर बोले कि बच्चों को कमरे में ' बंदर खा गया' है, (बंद रखा=बंदर खा) कुछ ऐसी ही भूल अनुवादकों से हुई अथवा दुश्मनों द्वारा जानबूझ कर दिया गया ताकि, इसे हाईलाईट किया जा सके. सिर्फ इतना ही नहीं हमारे धार्मिक ग्रंथों में साफ-साफ उल्लेख है कि 'निरंजनो निराकारो एको देवो महेश्वरः' अर्थात इस ब्रह्माण्ड में सिर्फ एक ही देव हैं जो निरंजन महादेव हैं . साथ ही यहाँ एक बात ध्यान में रखने योग्य बात है कि हिन्दू सनातन धर्म मानव की उत्पत्ति के साथ ही बना है और प्राकृतिक है. इसीलिए हमारे धर्म में प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीना बताया गया है और प्रकृति को भी भगवान की उपाधि दी गयी है ताकि लोग प्रकृति के साथ खिलवाड़ ना करें. जैसे किः-

1. गंगा को देवी माना जाता है क्योंकि गंगाजल में सैकड़ों प्रकार की हिमालय की औषधियां घुली होती हैं.
2. गाय को माता कहा जाता है क्योंकि गाय का दूध अमृततुल्य और, उनका गोबर एवं गौ मूत्र में विभिन्न प्रकार की औषधीय गुण पाए जाते है.
3. तुलसी के पौधे को भगवान इसीलिए माना जाता है कि तुलसी के पौधे के हर भाग में विभिन्न औषधीय गुण है.
4. इसी तरह वट और बरगद के वृक्ष घने होने के कारण ज्यादा आक्सीजन देते हैं और, थके हुए राहगीर को छाया भी प्रदान करते हैं.

यही कारण है कि हमारे हिन्दू धर्म ग्रंथों में प्रकृति पूजा को प्राथमिकता दी गयी है, क्योंकि प्रकृति से ही मनुष्य जाति है ना कि मनुष्य जाति से प्रकृति है.

अतः प्रकृति को धर्म से जोड़ा जाना और उनकी पूजा करना सर्वथा उपर्युक्त है. यही कारण है कि हमारे धर्म ग्रंथों में सूर्य, चन्द्र, वरुण, वायु , अग्नि को भी देवता माना गया है और इसी प्रकार कुल 33 प्रकार के देवी देवता हैं. इसीलिए, आप लोग बिलकुल भी भ्रम में ना रहें क्योंकि ब्रह्माण्ड में सिर्फ एक ही देव हैं जो निरंजन महादेव हैं . अतः कुल 33 प्रकार के देवता हैं:-12 आदित्य है- धाता, मित्, अर्यमा, शुक्र, वरुण, अंश, भग, विवस्वान, पूशा, सविता, त्वष्टा, एवं विष्णु.

8 वसु हैं: धर, ध्रुव, सोम, अह, अनिल, अनल, प्रत्युष एवं प्रभाष

11 रूद्र हैं: हर, बहुरूप, त्र्यम्बक, अपराजिता, वृषाकपि, शम्भू, कपर्दी, रेवत, म्रग्व्यध, शर्व तथा कपाली 2 अश्विनी कुमार हैं

कुलः 12+8+11+2 =33

(साभार फेसबुक)

पूरी दुनिया की सबसे खूबसूरत जोड़ी कौन सी?
'मुस्कुराहट और आंसू'
दोनों का एक साथ मिलना मुश्किल है, लेकिन जब ये दोनों मिलते हैं, वो पल सबसे खुबसूरत होता है मो0 08957124490

आतंकवादियों का मनोबल तोड़ने की विधि पवनसुत हनुमान से सीखें

-ब्रदी नारायण तिवारी
कानपुर, उत्तर प्रदेश

पवनसुत हनुमान को केवल सीता का पता लगाने को कहा गया था, अपहरणकर्ताओं को दण्ड देने के लिए नहीं. लेकिन उन्होंने आतंकवादियों (राक्षसों) का मनोबल भी तोड़ा.
मेघनाथ ने हनुमान जी को मूर्छित कर दिया. यहां भी उनकी चालाकी थी. वह आतंकवादियों के चीफ कमाण्डर रावण से बात करना चाहते थे.

सम्पूर्ण रामचरित मानस में 'सुन्दरकाण्ड' अन्य काण्डों से विशिष्ट रूप में लिखा गया है. अन्य काण्डों का आरम्भ देखें तो पायेंगे कि बालकाण्ड के आरम्भ में विनायक की फिर भवानी और शंकर की, फिर वाल्मीकी की, फिर हनुमान की और अन्त में सीता की तथा राम की स्तुति की गई है. शेष काण्डों में श्रीराम और शंकर की स्तुतियां हैं. लेकिन सुन्दरकाण्ड का प्रारम्भ केवल पवनसुत हनुमान की स्तुति से किया गया हैं.
संभवतः संत तुलसीदास यह चाहते थे कि रामचरितमानस के पाठक व प्रेमी 'सुन्दरकाण्ड' का सम्पूर्ण पाठ ही न करें बल्कि पवनसुत हनुमान के चरित्र से शिक्षा भी लें कि आतंकवाद से कैसे मुकाबला किया जाना चाहिए. इसीलिए उन्होंने पवनसुत हनुमान की सात विशेषताओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया है:-

'अतुलितबलधामं हेमशैलाम देहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम!।
सकलगुण निधानं वानरायणामधीशम,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।

सम्भवतः संत तुलसीदास यह चाहते थे कि रामचरितमानस के पाठक व प्रेमी यही नहीं प्रभु श्रीराम को भी विश्वास था कि पवनसुत हनुमान ही सीता का पता लगा सकते हैं.

'पाछें पवन तनय सिरू नावा।
जानि काज प्रभु निकट बोलावा।।
परसा सीस सरोरूह पानी।
करमुदिका दीन्हि जन जानी।।
बहु प्रकार सीतहिं समुझाएहु।
केहि बल बिरह बेगि तुम्हं आएहुं।।

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है. पवनसुत हनुमान से केवल सीता की सुधि लाने को कहा गया था. सुग्रीव को हनुमान वाले समूह से यह अवश्य कहा था-

'मन क्रम वचन सो जतन विचारेहु।
रामचन्द्र कर काज सवांरेहु।।

लेकिन उन्होंने या अन्य किसी ने सीता के अपहरणकर्ताओं को दण्ड देने की बात पवनसुत हनुमान से नहीं की थी. जामवंत ने भी पवनसुत हनुमान से इतना ही कहा था-

'इतना करहु तात तुम्ह जाई,
सीतहि देखि कहहु सुधि आई।'

लेकिन क्या हनुमान सीता को देखकर ही लौट आए थे? नहीं, उन्होंने निश्चित कर लिया था कि सीता का अपहरण करने वाले राक्षस ने जो आतंक फैला रखा था उसका छिन्न-भिन्न कर उनका मनोबल भी तोड़ना है.
सुन्दरकाण्ड की कथा से यह सीख लेना आवश्यक है कि आतंकवाद का मुकाबला आतंकवादियों का मनोबल तोड़कर ही किया जा सकता है, शांति वार्ता से नहीं. इस कार्य में यदि हिंसा भी होती है तोा वह क्षम्य है.
सबसे पहले सुरसा से भेंट होती है. क्योंकि वह आतंकवादी नहीं थी बल्कि हनुमान का बुद्धि-कौशल जांचने के लिए भेजी गई थी, अतः हनुमान ने उसे अपने बुद्धि-कौशल से परास्त कर दिया और वह निम्न आशीर्वाद देकर चली गई-

'राम काज सब करिहह तम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिश दे सुरसा गई, हरषि चले हनुमान।।'

हनुमान जी की भेंट पहले आतंकवादी से हुई जो-

'निसिचर एक सिंधु महुं रहई।
करि गाया नाम के खग गहई।।
सोई छडल हनुमान कह कीन्हा।
तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हां।।'

हनुमान जी ने उससे शांति वार्ता नहीं की बल्कि-

'ताहि मारि मारूत सुत बीरा।
बारिधि पर गयऊ मति धीरा।।'

जब हनुमान जी लघु रुप धरकर लंका में घुसने को हुए, तभी लंकिनी नाम की आतंकवादी महिला ने हड़काया-

'नाम लंकिनी एक निसचरी।
सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।
जानेहि नहिं मरमुसठ मोरा।
मोर अहार जहां लगि चोरा।।

यहां भी हनुमान जी ने तुरन्त एक्शन लिया-

'मुठिका एक महा कपि हनी!
रूधिर बमत् धरनीं ढनमनी।।

लंका के अंदर प्रविष्ट होकर सबसे पहले उनकी विभीषण से भेंट हुई. लेकिन हनुमान जी ने एकदम अपने आपका खुलासा नहीं किया, बल्कि सोचने लगे-

'लंका निसिचर निकर निवासा।
इहां कहां सज्जन कर बासा।।
इहिसन हठि करिहऊँ पहिचानी।
साधु ते होई न कारज हानी।।

जब उन्हें विश्वास हो गया कि विभीषण समचुच रामभक्त हैं तब-

तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता।
देखी चहऊँ जानकी माता।।

हनुमान जी अशोक वाटिका में पहुंच कर-

'तरू पल्लव महुं रहा लुकाई।
करइ विचार करौं का भाई।।

जब हनुमान सीता जी के सामने पहुंचे तो उन्होंने सीता जी से कहा-

'अबहिं मातु मैं जाऊँ लवाई।
प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई।।'

तब हनुमान जी ने अपना असली रूप दिखाया-

'कनक भूधराकार शरीरा।
समर भयंकर अति बल वीरा।।

हनुमान जी ने निश्चित कर लिया कि अब आतंकवादियों का मनोबल भी तोड़ देना चाहिए. उन्होंने शुरुआत अशोक वाटिका के उजाड़ने से की. वहां के पहरेदार राक्षसों को मारना शुरू कर दिया. राक्षसों के मरने की खबर पाकर अक्षय कुमार आये. उसे देखकर हनुमान जी पूरे जोश में आ गए-

आयत देखि विटप गहि गजा।
ताहि निपाति महाधुनि गर्जा।।

अब मेघनाथ को भेजा गया. मेघनाथ ने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर हनुमान जी को मूर्छित कर दिया. यहां भी हनुमान जी की चालाकी थी. वह आतंकवादियों के चीफ कमाण्डर रावण से बात करना चाहते थे. साथ ही ब्रह्मास्त्र का जिसको वह निष्फल कर सकते थे, मान रखना चाहते थे.

रावण से वाद-विवाद तथा लंका दहन की कथा सबको ज्ञात है. एक तो उन्होंने सीता जी के टूटते मनोबल को सहारा दिया और दूसरे आतंकवादियों के गढ़ में घुसकर उनको मनोबल तोड़ दिया और श्रीराम का भय उनके हृदय में बैठा दिया.

'उहां निसाचार रहहिं ससंका।
जबते जारि गयऊ कपि लंका।।
निज निज गृह सब करहिं विचारा।
नहिं निसिचार कुल केर उबारा।।
जासु दूत बल बरनि न जाई।
तेहि आएं पुर कवन भलाई।

यद्यपि रावण भी भयग्रस्त हो गया था लेकिन उसने किसी की भी बात नहीं सुनी और अंत में श्रीराम के हाथों मारा गया.

काश! इस देश के हिन्दू भी पवनसुत हनुमान के गुण अपना लेते तो इस देश भारत की दुर्दशा न होती. आतंकवादियों की भी घुसपैठ करने की हिम्मत न होती.

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य

बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित विश्व स्नेह समाज मासिक को देश के विभिन्न शहरों में ब्युरो प्रमुख, विज्ञापन प्रतिनिधियों की जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.
ईमेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

पर्यावरण संरक्षण में साहित्यकारों की भूमिका

क्षिति जल पावक गगन समीरा,
पंच तत्व रचित यह अधम शरीरा

पर्यावरण की संरचना मानव शरीर से प्रारम्भ होती है और गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में उपरोक्त चौपाई बिल्कुल सटीक बैठती है. जिसका अर्थ है हमारे शरीर में आकाश धरती, वायु, जल और अग्नि इन्हीं से मनुष्य शरीर की संरचना हुई है और इसी से पूरा पर्यावरण विश्व संचालित होता है और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए यही पांच तत्व मुख्य भूमिका अदा करते है. हमारे साहित्यकारों ने अनेकों संदर्भ में इनको विभिन्न रूपों में प्रतिबिम्बित किया है. यथा रामायण में अनेको उदाहरण आपको मिलेगें जिसमें पेड़ पौधों को जीवित रूप में परिलक्षित किया गया है. जिस समय राम वन में सीता जी की खोज करते हैं तो वे पेड़ पत्तों तक से पूछते हैं. कहीं तुमने हमारी सीता को देखा है. उस काल के जितने कवि है उसमें सूरदास, कबीर, रहीम आदि उन सबने पर्यावरण पर अपने गहन विचार रखें है परन्तु आज के कवि, आज के साहित्यकार केवल उन विषयों पर लिखना पसंद करते हैं जिससे उनको अर्थोपाजन की आशा रहती है. सबसे मजेदार बात यह है कि पूर्व काल के जितने साहित्यकार है उन्होंने कोई भी रचना उसकी द्रव्य प्राप्ति के लिए नहीं लिखी परन्तु जनमानस को उद्वेलित करते हुए जीवन शैली और उसमें पर्यावरण का संरक्षण ध्यान में रखते हुए की है. आज का साहित्यकार अगर अपनी रचनाओं में पर्यावरण को प्राथमिकता देते हुए जनसाधारण की भाषा में उद्धृत करेगा तो ये साहित्य की ओर से समाज की बहुत बड़ी सेवा होगी।

हमारे ग्रामीण परिवेश में जितने भी रीति रिवाज हैं उनमें जल, वृक्ष, अग्नि, आकाश और धरती को स्थानीय भाषाओं में, कहावतों और गीतों में गाया गया है और कहा गया है. आखिर ये भी तो साहित्यकारों की रचनाएं है. चाहे वह साहित्यकार नामी गिरामी न हो फिर भी वह है तो साहित्यकार ही और उसने अपनी परम्परा को पर्यावरण से जोड़कर जीवित रखा है।

-रामकृष्ण गर्ग, सुप्रसिद्ध सामाजिक चिन्तक,
41बी/1, साकेत नगर, धूमनगंज, इलाहाबाद

रामआसरे गोयल

आदिम काल से ही मनुष्य का प्रकृति से रागात्मक संबंध रहा है तथा साहित्यकारों का संबंध तो और भी गहरा. साहित्यकार जो देखता है, अनुभव करता है वही सब अपनी लेखनी के माध्यम से कागज पर उतार देता है. आज प्रकृति का अपना सौन्दर्य समाप्त होता जा रहा है. कवियों ने अपने साहित्य में पर्यावरण की चुनौतियों के प्रति चिंता को अपना विषय बनाया है. उन्होंने पर्यावरण के विभिन्न अवयवों रंगों, आयामों को वर्णित किया. रघुवीर सहाय ने लिखा है-मैं चाहता हूं मेरी कविताएं/वृक्ष की ही नहीं/तिनके के टूटने की भी आवाजें सुने

कवि जगदीश्वर ने लिखा है-

धरती की सांसे फूल रही है, खराब हो रहे उसके फेफड़े
प्रदूषण रूपी काले केकड़े, कुतरने लगे हैं उसका मांस।

प्रकृति ने जो कुछ हमें दिया है वह अमूल्य है. जो कुछ भी जीवन दायिनी है वह 'पर्यावरण' है. जल, वायु, जंगल, जानवर सब हमारे पर्यावरण के संतुलन के भाग हैं. महानगरीय जीवन जीते-जीते जब आदमी का मन ऊब जाता है तो वह प्रकृति के आंचल में अपना सिर रखकर शांत नींद सोकर आराम करना चाहता है. राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी कहते है-

क्या आकाश उतर आया है, दुबों के दरबार में
नीली भूमि हरी हो गई, इन किरणों के ज्वार में।

साहित्यकारों के सृजन में आवेग, छटपटाहट, बेचैनी के साथ-साथ जीवंतता व ईमानदारी है. प्रतिबद्धता और अनिवार्यता उसका प्रधान गुण है. प्रो० धर्मवीर साहनी की यह पंक्तियां लोगों को चिंतन के लिए विवश करती है-

पर्यावरण की कीमत पर, हो सकता है विकास
केवल एक बिंदु तक, उस अनुकूलतम के परे,
होने लगता है, पर्यावरण का अधः पतन
ऐसे प्रतिमानों को जो पर्यावरण की गुणवत्ता से टकराए
कम से कम।

-संदीप टैक्सटाइल्स, गोयल भवन, दिल्ली गढ़ रोड,
सिम्भावली, गाजियाबाद, उ.प्र.

ओम प्रकाश त्रिपाठी

जब पंच तत्व ही प्रभावित हो गये और इनका अन्तसम्बंध असन्तुलित एवं प्रदूषित हो गया तो मनुष्य की सृजित व्यवस्था जैसे लोक जीवन, संस्कार, गीत, विभिन्न मानव जातियां, अनुशासन, शिक्षा, संस्कृति, धर्म, वैदिक वाङ्गमय समाज, पशु पक्षी, जड़ी बूंटियां एवं अन्यान्य व्यवस्थाएं कैसे नहीं प्रभावित होंगी? प्रश्न उठता है कि इस दुर्व्यवस्था का दोषी कौन? सम्यक विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव ही अपने विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा रजोगुण एवं तमोगुण के प्रभाव से प्रभावित होकर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर उसका दोहन कर उसकी सहजता को विनष्ट करने का कुत्सित प्रयास किया है. जिसका प्रभाव यकायक न होकर शनैः शनैः हो रहा है.

इस धरती के अनेक भागों में आज परिस्थितिक असन्तुलन एक अति भयावह स्थिति में पहुंच चुका है. जबकि इस पृथ्वी पर रहने वालों का सम्बंध प्रकृति से है. प्रकृति का संरक्षण, वन्य जीव जन्तु, पेड़ पौधे हमारे ऐसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिनके बिना मानव जीवन भयानक संकट में फंस जायेगा. आज का मानव अपने लिए ही अनेक प्रकारकी अवांछित समस्याएं खड़ी करके जीवन को अल्पायु कर रहा है.

पहले हमको आधारभूत तथ्य का इतना ज्ञान अवश्य होना चाहिए कि जीव जन्तुओं की शरीर रचना का यथार्थ चित्रण इस पृथ्वी पर एक अति कोमल परिस्थितिक तन्त्र से संचालित होता है. जिस प्रकार जिस गति से हमारे जीवन में आज प्रौद्योगिकी में परिवर्तन एवं क्रियाशीलता लाई जा रही है इससे पहले यह होना चाहिए था कि हमें इनकी अति दृढ़ता तथा सूक्ष्मता से मूल्यांकन करना चाहिए था.

'जल ही जीवन है' यह उक्ति सदैव से परिचर्चा में रही है. जल और जंगल के बीच एक प्राकृतिक रिश्ता है. जल है तो जंगल है और जंगल है तो जल है. इन दोनों प्राकृतिक संसाधनों का सीधा नाता मानव अस्तित्व से जुड़ा है. धरती का फेफड़ा कहलाने वाले पेड़ों का हमारे जीवन में सर्वत्र महत्व है लेकिन सबसे बड़ा लाभ इनके द्वारा प्राणवायु आक्सीजन का उत्सर्जन और वायुमण्डल को दूषित करने वाली एवं ग्लोबल वार्मिग की जिम्मेदार गैस कार्बन डाई आक्साईड का अवशोषण करना है. अगर पेड़ नहीं होंगे तो आक्सीजन की कमी से हमारी सांसे घुट जाएगी. इसी तरह जल जो अनमोल है उसका भी महत्व सर्वविदित है. प्यास लगने पर कोई भी तरल पदार्थ जल का विकल्प नहीं बन सकता है.

अब प्रश्न है कि हमें इस परिचर्चा की जरुरत क्यों पड़ी. पहले मानव और प्राकृतिक संसाधनों के बीच संतुलन कायम रहा. सह अस्तित्व की सांस्कृतिक विरासत के बल पर हम एक दूसरे को लम्बे समय तक लाभान्वित करते रहे. बदलते समय के साथ लालच बढ़ती गई. हम उपभोग के स्थान पर दोहन करने लगे. जमीन के अधिक से अधिक इस्तेमाल के लिए वनों एवं पेड़ों की कटाई की तनिक परवाह नहीं की.

सदियों गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने में, मानवीय मूल्यों एवं भारत को स्वतंत्र बनाने में साहित्यकारों एवं पत्र पत्रिकाओं ने जो प्राण फूंका है वह भारतीय इतिहास में अंकित है. पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रत्येक मानव में दृढ़ इच्छा शक्ति जगाने की. यह दुरूह कार्य साहित्यकार की लेखनी से संभव है. ऐसे साहित्य का व्यापक प्रचार-प्रसार की अतीव आवश्यकता है जो मानव मन में परिवर्तन लादे, उसे निःस्वार्थ भाव से इस कार्य में अभूतपूर्व सहयोग करने का संकल्प स्थापित कर दे.

अधिकाधिक वृक्षों का रोपड़ कर वनों की अधिकता द्वारा जीव जन्तु, पशु-पक्षी, वायुशोधन, वाष्पोत्सर्जन, जड़ी बूटियों तथा उत्तम स्वास्थ्य युक्त मानव की जीवन शैली स्थापित करने में साहित्यकार अपने बहुमूल्य, अनुपम विचारों एवं अमिट प्रभावपूर्ण लेखनी का प्रयोग कर भारत की सुरम्य छटा, संस्कृति एवं जीवन चक्र को स्थापित करें जिससे भारत में रजोगुण, तमोगुण एवं सतोगुण का आनुपातिक प्रभाव प्ररिलक्षित हो सके.

-राष्ट्रपति से पुरस्कृत, प्रधानाध्यापक, सोनभद्र, उ.प्र.

सुरेखा शर्मा

'जब धरती न रहेगी हरी-भरी
बूंद-बूंछ पानी को तरसेंगे
मचेगा चहूं ओर हाहाकार
किस स्वर्ग की तुम बात करते हो
सूखे की पड़ेगी भयावह मार
पृथ्वी, परमाणु और आतंक की
कत्लगाह बन चुकी होगी

आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विश्व की सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है. प्रकृति प्रतिक्षण अपना रूप बदल रही है. समस्त वायुमंडल दूषित हो चुका है. जिसके कारण

मानव जाति के साथ-साथ सम्पूर्ण जीव जगत बेहाल हो चुका है.

आधुनिक युग प्रगति का युग है. यही प्रगति पर्यावरण के लिए घातक है. जनसंख्या का बढ़ना, वनों का कटना इसके मूल कारण है. आज हवा, भूमि, जल प्रदूषित होने के कारण स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है. इससे बचने के लिए सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं व साहित्यकारों को मिल कर प्रयास करना होगा. वनों की कटाई को रोकने के लिए कठोर नियम बनाने होंगे. साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से जन-जन तक अपनी आवाज पहुंचा सकते है. जनमानस को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित करें. डॉ. अनिल प्रकाश जोशी जी लिखते हैं, 'वैसे तो यह प्रकृति का नियम ही है कि यह स्वयं ही अपने पर हुए अतिक्रमण का हिसाब चुकता कर देती है. हमारे चारो तरफ तथाकथित एक तरफा विकास की कीमत हमें प्रकृति से छेड़छाड़ के रूप में चुकानी ही है.

हिमालय को समझने की चूक हो रही है. इसे मिट्टी, बर्फ, पानी से बने पहाड़ को हमने वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं समझा और इसी भ्रम में इसके साथ खिलवाड़ किया. देवतुल्य हिमालय सदियों से देश व समाज की सभी प्राकृतिक उत्पादों से सेवा करता रहा है. हिमालय का अस्तित्व सारे देश से जुड़ा है. पर्यावरण का प्रदूषण सम्पूर्ण समाज को प्रदूषित करता है. प्राकृतिक सन्तुलन के असन्तुलित होने पर उसके परिणाम संपूर्ण मानव समाज के लिए बहुत भयानक होंगें. इसी भाव को व्यक्त करते कवि की पंक्तियां **न छेड़ों प्रकृति को**
अन्यथा एक दिन मांगेगी हमसे
तुमसे तरुणाई का एक-एक क्षण
और करेगी भयंकर बगावत

कहीं साहित्यकार पर्यावरण प्रदूषण के कहर से क्षुब्ध है, तो कहीं संभावना से परिपूर्ण है. वह आशावादी है थकता नहीं जूझता है. पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन सामान्य में जागरूकता उत्पन्न करना हम सब का कर्त्तव्य है.

मनु स्मृति में कहा गया है पानी में दूषित पदार्थ, रक्त या विष विसर्जित न करें. मत्स्य पुराण में लिखा है-

'दश कूप-समावापी, दशवापी-समोहदः
दश हदः-समःपुत्रों, दश पुत्र समो द्रुमः

अर्थात् दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष. वृक्षों के प्रति ऐसा आदरभाव धन्य है. आज का साहित्यकार भी पर्यावरण से चिन्तित है- **अजगर-सी ऊंची चिमनी से,**
वहां निकलती विष की ज्वाला
होम वहां मानव का होता,
दानवता हंसती विकराला।

-रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

पर्यावरण शुद्ध है तो हमारी मानवीयता की रक्षा है. पर्यावरण प्रदूषण के जिम्मेदार भी हम स्वयं ही हैं. हमारी जागरूकता ही पर्यावरण संरक्षण है. हम यदि अपनी स्वार्थपरता भूलकर नैतिकता अपना लें तो समस्या खड़ी ही नहीं हो पाएगी.

-हिन्दी विभागाध्यक्ष, गुड़गांव, हरियाणा

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा

प्रकृति के नियमबद्ध कानून एवं उसके द्वारा मानव का उच्च्य स्तर पर जीवित रहना बहुत आवश्यक है. धार्मिक विचारधारा की बात होने के साथ-साथ वैज्ञानिक सच्चाई के आधार भी है. पेड़ और हरियाली की यह मान्यता थी कि इनसे दवाओं की उत्पत्ति होती है. ये सारी विचारधारा प्राचीन ग्रन्थों में मिलती है जो साबित करते हैं कि साहित्य के माध्यम से तब युगोंपूर्व पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई थी.

मंत्रों के माध्यम से प्रकृति की पूजा होती है. भारतीय साहित्य ने गंगा, यमुना, कृष्णा और काबेरी की पवित्रता को सदियों से माना है और आज भी मानते हैं. यहां तक कहा गया है कि जिस देश में गंगा जैसी पवित्र नदी नही है तो वह देश मृतप्रायः है. यह दुःख की बात है कि हमें आज के युग में भगवान श्रीराम से प्रार्थना करना पड़ रही है कि तेरी गंगा मैली हो रही है. सच तो यह है कि गंगा मैली हो गई है. फिर भी हम उस पानी को पवित्रता का आयाम मानकर उसकी पूजा करते हैं. यही इस देश को कई मायने में जीवित रखते हुए हैं. विश्वास सबसे बड़ी चीज है और साहित्यकारों ने इस दिशा में कभी भी नकारात्मक बात नहीं कही है.

हम हिमालय की पूजा करते हैं, कंचनजंगा के आगे सिर नवाते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यदि अच्छी बारिश आनी है तो वह पहाड़ों के माध्यम से आ सकती है. हमारे मन्दिर प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य बने हुए हैं. इसका कारण यह था कि हमारे पूर्वज जानते थे कि जो प्रकृति से प्यार करेगा वह कभी दुःखी नहीं होगा. वह कभी रोगी नहीं होगा. इसमें साहित्यकारों ने अपनी बात साहित्य के माध्यम से कहकर इस बात को और भी बढ़ावा दिया है. कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को सर्वाधिक महत्व दिया है.

हमारे संस्कारों में पूजा का बहुत महत्व है. कितना भी बड़ा नास्तिक क्यों न हो, बिना पूजा के कोई बड़ा काम प्रारम्भ नहीं करता. और यदि पूजा पर शोध किया जाए तो पायेंगे कि हर मंत्र, हर काम का एक वैज्ञानिक आधार है. पूजा को इसलिए समाज में लाया गया था ताकि पर्यावरण की अशुद्धियों को दूर किया जाए. सबसे प्राथमिक चीज हवन है. चन्दन का उपयोग इसलिए किया जाता है ताकि पर्यावरण शुद्ध बने. इसी क्रम में दूध और तुलसी का प्रयोग भी होताा है. आज हम इन सब बातों को बिना समझें पूजा करते रहते हैं, पर यह सोच का विषय है कि हमारे पूर्वज सोच की दृष्टि में हमसे कितने आगे थे. नीम का उपयोग और देवधर एवं आम का उपयोग, साथ में अन्य लकड़ियों का उपयोग प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षण हेतु उपयोग में लाया जाता था. इसमें निश्चित रूप से साहित्यकारों की बड़ी भूमिका है क्योंकि मंत्र तो साहित्यकार ही लिख सकते हैं.

आज के साहित्य में कुछ साहित्यकार इस दिशा में कार्यरत हैं, पर शायद उनकी कोई सुन नहीं रहा है. वैसे भी आज की पीढ़ी के पास साहित्य की उपयोगिता ना के बराबर है. यह दुःख की बात है. संस्कारों के अभाव में वे सारे उल्टे काम हो रहे हैं जिन पर बाद में दुःख होता है. आज का साहित्यकार अपने मर्जी के साहित्य के अलावा यदि पर्य्नावरण संरक्षण के बारे में रचनाएं लिखे तो वह समाज के लिए बहुत बड़ा काम कर रहा है. यदि पढ़ने को समय नहीं है, तो नुक्कड़ नाटक जो गांवों में लोकप्रिय है के माध यम से बात कही जा सकती है. लघु फिल्में जो इस दिशा मं बात करें के माध्यम से टेलीविजन पर बात कही जा सकती है. यदि कुछ न हो तो लोकप्रिय गानों के सहारे पर्यावरण संरक्षण की बात कही जा सकती है.

यह आवश्यक है कि हम अपने पूर्व में झांकें, उनसे सीखें, यह जाने कि ऐसी स्थितियों में जब कोई भी वैज्ञानिक मदद नहीं थी इस देश ने पर्य्नावरण संरक्षण की दिशा में कितने काम किये हैं. हम वहां घूमने जाते हैं, पर आवश्यक है कि हम उत्तेजित हों कि उसी बीते हुए अच्छे काल को फिर से लायें।

-ग्वालियर, म.प्र.

डॉ० विमला मिश्रा

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पेड़-पौधे, मानव सब मिलकर पर्यावरण बनाते हैं. प्रकृति में इन सबकी मात्रा और इनकी रचना कुछ इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलनमय जीवन चलता रहे. यह चक्र हजारों वर्षो से चलता आ रहा है. पिछले १०० वर्षो में जबसे मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां अर्जित की, सुख-सुविधा के साधन जुटाये, बढ़ती आबादी की आवश्यकता की पूर्ति हेतु औद्योगिक क्रांति का सहारा लिया तभी से प्रकृति का सामान्य रूप विखण्डित होने लगा. कई ऐसे प्रयोग शुरु हुए जो मानव प्रकृति के अनूकूल नहीं थे. धीरे-धीरे सामान्य जन-जीवन में परिवर्तन आने लगे.

पर्यावरण को सुरक्षित रखने की प्रमुख बाधाओं मेंः-**वायु प्रदूषणः** वनो की कटाई, जीवाश्म ईधन का अधिक प्रयोग, औद्योगिकरण जिनसे ग्रीन हाउस प्रभाव, तेजाबी वर्षा, ओजोन पर्त का क्षय हुआ.

जल प्रदूषणः औद्योगिक जलवायु, घरेलू मल-जल एवं वर्षा जल के साथ आने वाली अनेक गन्दगी इसके मुख्य कारक है. इनसे पीने के पानी के स्रोत और भूगर्भ जल भण्डार प्रदूषित हुए है.

भूमि प्रदूषणः अधिक अन्न उत्पादन की लालसा ने मनुष्य को अधिक मात्रा में रासायनिक खादे तथा कीटनाशी दवाइयों के प्रयोग हेतु उकसाया. परिणामस्वरुप अन्न भी प्रदूषित हुआ और भोजन के साथ विष भी उपभोक्ता को लेना पड़ा.

ध्वनि प्रदूषणः बढ़ते औद्योगिकीकरण, भारी भीड़ से निकलने वाले विविध वाहनो द्वारा ऊंची आवाज वाले हार्न्स का उपयोग, मनोरंजन के साधन रेडियो, टीवी एवं ध्वनि विस्तारक यंत्र आदि ने ध्वनि प्रदूषण फैलाया. इसने मनुष्य को चिड़चिड़ा, बहरा, ब्लड प्रेशर, अल्सर और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो से ग्रसित कर दिया और उसकी सामान्य कार्यशक्ति को कम कर दिया.

भूमि क्षरणःभूमि क्षरण का मुख्य कारण मनुष्य द्वारा वृक्षों के अत्यधिक कटाई है. इससे वर्षा के पानी की रोक कम हो गई और जल का तेजल बहाव खेतों की उपजाऊ मिट्टी बहा ले जाता है. जल की महत्ता का सुन्दर श्लेषपूर्ण वर्णन करते हुए रहीम ने लिखा है-

रहिमन पानी राखिये,
बिन पानी सब सून
पानी गये न उबरे मोती मानस चून

पर्यावरण की रक्षा का प्रश्न इलाहाबाद

के संदर्भ में अधिक प्रासंगिक हो गया है. भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है. तमाम सरकारी प्रयासों, संतो के ध ारना-प्रदर्शन रैली के बावजूद गंगा के जल की स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं आ रहा है. जो गंगा मोक्ष दायिनी कही जाती है वही आज अपने पुत्रों से मोक्ष की कामना कर रही है क्यों? इसके लिए साहित्यकारों को सजग रूप से एक निश्चित कार्यकारी योजना पूर्ण रूप से सदैव के लिए बनाने और लागू करने के लिए जनता और शासन, प्रशासन को सजग करना होगा. जब जब समाज को जगाने की आवश्यकता हुयी इस कार्य में साहित्यकारों की अहम भूमिका रही है. कुछ उपाय निम्नवत है:-

१.गंगा और जल के किसी भी स्रोत में पालीथिन का किसी भी रूप में प्रवाहित करने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक है. इस कार्य के लिए दण्डात्मक और जागरूकता दोनों ही नीतियों का सन्तुलित प्रयोग आवश्यक है.

२.नदियों में मिलने वाले फैक्ट्रियों के नाले और शहरों के सीवेज लाइन के शुद्धिकरण करने की निश्चित व्यवस्था के लिए फैक्ट्रियों के मैनेजमेंट और सम्बन्धित नगर पालिका और प्रधानों को प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी बनाया जाय.

३.नदियों के किनारे मलमूत्र विसर्जन और पशुओं के नहाने पर प्रतिबन्ध लगाया जाए.

४.धार्मिक आयोजन और त्योहारों पर ध्वनि प्रसारक यंत्र लगाने की एक निश्चित संख्या प्रशासन की अनुमति से लगायी जा सके इसको सुनिश्चत किया जाए.

५.तेज आवाज करने वाले पटाखों का उत्पादन करने वाली फैक्ट्रियों को प्रशासन की निगरानी में रखा जाए.

६. हरे पेड़ों के काटने पर प्रतिबन्ध का सख्ती से पालन किया जाय.

७. खाली पड़े सरकारी जमीनों, सड़कों, नदियों के किनारे वृक्षारोपण के साथ-साथ लगाये गये वृक्षों की सुरक्षा का ठोस उपाय किया जाए

८. वाहनो की बढ़ती संख्या पर रोक लगाना आवश्यक है. इसके लिए वाहनों के व्यक्तिवादी प्रयोग के नकारात्मक प्रभाव का तार्किक ढंग से प्रचार प्रसार करना चाहिए.

पर्यावरण की रक्षा के लिए सम्पूर्ण मानव समाज की जागरूकता होने के साथ सुशिक्षित साहित्यकारों की भूमिका सर्वाधिक आवश्यक है. इसके लिए छोटे-छोटे उपायों को अपनाकर ही पर्यावरण संकट को वृहद रूप से रोका जा सकता है.

-प्रवक्ता, हिन्दी, नैनी, इलाहाबाद,उ.प्र.

हिन्दी में 90% से अधिक अंक पाने वालों को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषियों को सुश्री शांताबाई व हिन्दी भाषी राज्यों में स्व.पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति हिन्दी छात्रवृत्ति

इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर पर हिन्दी विषय में 80प्रतिशत अंक पाने छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी. इसमें छात्र/छात्रा को इंटरमीडिएट व स्नातक स्तर के अंक पत्र की प्रधानाचार्य/प्राचार्य/विभागाध्यक्ष से प्रमाणित छाया प्रति, नाम, पिता का नाम, सम्पूर्ण पता, एक फोटो, दूरभाष/मोबाइल संख्या/ई मेल के साथ ३० अक्टूबर 2013 तक भेजना होगा. इसमें चयनित छात्रों को 100 रुपये से लेकर 500/रुपये मासिक तक की छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी.

विशेषः 01 छात्रवृत्ति की संख्या का निर्धारण संस्थान द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा। 02 हिन्दीत्तर भाषी छात्र/छात्राओं को वरीयता दी जाएगी. प्रत्येक वर्ष अंक पत्र भेजना अनिवार्य होगा. तब तक हिन्दी विषय में 80प्रतिशत या उससे अधिक अंक मिलते रहेंगे यह छात्रवृत्ति जारी रहेगी. 03 विवरण के साथ एक नाम पता लिखा लिफाफा, व २५ रुपये का डाक टिकट भेजना होगा. 04 जिस विद्यालय के छात्र/छात्राओं का चयन लगातार पांच वर्ष तक होगा उस विद्यालय के हिन्दी विषय के प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. 05 जो प्रतिभागी लगातार तीन वर्ष तक यह छात्रवृत्ति प्राप्त करेगा उसे हिन्दी उदय सम्मान से एक गरिमामय कार्यक्रम में सम्मानित भी किया जाएगा.अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखेंः

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.मो० 09335155949

email:sahityaseva@rediffmail.com

व्यंग्य

मनमोहन चुप्पी

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा
पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव, छिन्दवाड़ा, म.प्र. ४८०००१

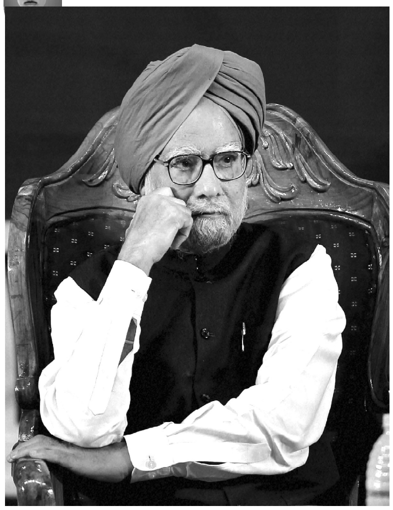

इन दिनों वे मुंह की तकलीफ से पीड़ित है शायद. कुछ बोलते नहीं है. या यूं कहे कि उनका मुंह उनसे परेशान है ये सोचकर कि मुझे इस आदमी का मुंह क्यों बनाया. मुझे इसके शरीर में लगाया क्यों? यह मुंह से मुंह का काम लेता ही नहीं. अति आवश्यक होने पर भी ये मुंह नहीं खोलते. कुछ भी नहीं बोलते. लोग उनके मुंह की तरफ उम्मीद की टकटकी लगाये हुए हैं कि इतनी बड़ी बात हो गई है चलो अब तो जरुर बोलेगे. इस बार तो बोलना ही पड़ेगा. लेकिन वे नहीं बोले. अरे जब बोलना ही नहीं था तो मौनी बाबा बनकर तपस्या करते. हमनें कहा ''यदि आपका मौन व्रत समाप्त हो गया हो तो मुंह खोले.''

वे फिर भी नहीं बोले. हमने कहा अब नहीं बोलेगे तो कब बोलेगे. उन्होंने कहा ''अनुमति नहीं है'. हमने कहा 'अपना मुंह खोलने के लिए किसी की अनुमति की क्या जरूरत है. कहीं ऐसा तो नहीं कि आपको मुंह की कोई बीमारी हो. आप बोल नहीं पा रहे हो चाहकर भी. क्योंकि आपके मुंह से कोयले की बदबू सी आ रही है. कहीं आपके दांत तो खराब नहीं है. आपको पायरिया तो नहीं है. अभी इलाज संभव है.' उन्होंने कहा, 'मैं मुंह बन्द रखने के लिए वचनबद्ध हूं.'

मैंने पूछा, 'किसको वचन दिया आपनें. '

वे बोले 'सारे देश को मालूम है. आपको नहीं मालूम'

मैंने उन्हें समझाया 'देखिये धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण की तरह मोह में वचनबद्धता में अन्याय होते देखना महाभारत करवाना है. आप बोलिये. उन्होंने कहा 'तो चुनाव तक रूक जाइये.' मैंने पूछा 'तब तक चुप रहेंगें.' वे बोले 'बोला तो है कि असम की हिंसा कलंक है देश के लिए.' मैंने कहा 'ये बोलना होता है.' वे बोले 'कोयला घोटाले की जांच होगी.' मैंने फिर कहा, 'जरा अपनी हैसियत के हिसाब से जमकर बोलिये. आपकी बिरादरी के मामूली से दो कौड़ी के सड़क छाप लोग अपने को नेता मानकर न जाने क्या-क्या बोल रहे है? देश में देश के ही लोगों को घुसपैठिये बताकर खदेड़ने के लिए कहकर राजनीति का धंधा चमका रहे हैं. फिर आप तो लोकतंत्र के परम पूज्य पद पर हैं. ऐसे भयंकर हालातों में कुछ तो बोलिये. आपको बोलने के लिए किसी का मुंह न किराये से लेना है न कर्जे पर. लोग तो दूसरों के मुंह से बोलकर देश को गृहयुद्ध में झोंक रहे हैं. आपका तो अपना मुंह है. उसी से बोलना है.' वे बोले 'परमीशन नहीं है.' मैंने कहा 'लोकतंत्र में बोलने के लिए परमीशन की क्या जरूरत है?' उन्होनें कहा 'देश में लोकतंत्र है. पार्टी में नहीं. मुझ पर लोकतंत्र नहीं है.'

मैंने कहा 'फिर पद क्यों ग्रहण किया. ' वे बोले 'उसी का जुर्माना, सजा तो है कि न बोलू. और सुनो-मुझे दुनियां वालों प्रधानमंत्री न समझो मैं बना नहीं हूं. बनाया गया हूं मैं वो रोबोट हूं जिसका स्विच आन का बटन मैडम के पर्स में दबाया गया हूं.'

मैंने कहा 'आप नहीं बोलेंगे तो राष्ट्र की तकलीफ बढ़ती जायेगी. आप कुर्सी छोड़ दें.' वे गुस्से में आ गये. कहने लगे कि चाहे कुछ भी हो जाये. मुंह तो नहीं खुलेगा. रही कुर्सी की बात तो वो समय पूरा होने पर ही छोड़ूगा. इटली का आदेश सर आंखों पर. आप विपक्ष के आदमी मालूम होते हैं. मुंह काला हो या पूरी सरकार काली. चुनाव तक प्रतीक्षा करें. तब तक जो हो रहा है. होने दे और मुझे चुप रहने दें.'

मैंने कहा 'ये इटली का आदेश क्या है,'

वे घबराहट में बोले 'आप लोग अर्थ का अनर्थ लगा लेते हैं. मैंने इटली नहीं कहा. मैंने कहा कि इडली मुझे पसन्द है. मैं इटली की खाता हूं. मैडम को भी इडली पसन्द है. हमारी पसन्द एक है. इसी वजह से हम उनकी मानते हैं.

'ये क्या कह रहे है उल्टा-सीधा आप'

'माफ करना टेंशन में रहता हूं. इसी कारण चुप रहता हूं.' वे गंभीर मुद्रा बनाकर चले गये. किसी ने पूछा 'कौन है ये गुमशुम सा आदमी'

मैंने कहा 'ये हमारे देश के प्रधानमंत्री है.'

उनकी चुप्पी भविष्य में मिसाल बनेगी. जब बच्चे घर में हल्ला करेंगे. शोर मचायेगे तो मां समझायेगी बेटा मनमोहन सिंह हो जाओ.

वाह! तरबूज

गर्मी का मौसम आते ही हर तरफ तरबूज दिखाई देने लगते हैं. यह तन-मन दोनों को ठंडक पहुंचाते है

बाकी फलों के मुकाबले बड़े आकार के इस फल को बाजार से घर तक लाना बेशक असुविधाजनक हो, लेकिन सेहत को फायदा पहुंचाने के मामले में यह और फलों से किसी मायने में कम नहीं है. यह भारत के अलावा ९६और देशों में पाया जाता है. अप्रैल के आसपास यह बाजार में दिखाई देने लगता है. माना जाता है कि जितनी ज्यादा लू चलती है, उतनी ज्यादा तरबूज की मिठास बढ़ती है. बरसात का मौसम शुरू होते ही इसमें फीकापन आने लगता है. इसका वजन १ किलोग्राम से लेकर १५ किलोग्राम तक हो सकता है. कीमत इतनी कि हर कोई आसानी से खरीद सके.

इसमें ९० से ९२ फीसदी तक पानी होता है. यह फाइबर तथा विटामिन ए और सी से भरपूर होता है. पका हुआ तरबूज शीतलता बढ़ाने के अलावा खांसी में तथा मूत्ररोगों को दूर करने में मदद करता है. इससे आंखों की रोशनी तेज होती है. तरबूज भी बाकी फलों की तरह औषधीय गुणों से भरपूर है-

■तरबूज के टुकड़े पर थोड़ी-सी चीनी बुरक कर रात भर के लिए रख दें. सुबह खाली पेट खाने से पेशाब में जलन व रूकावट दूर होती है.

■तरबूज के १०-१२ छिले हुए बीज हर सुबह खाली पेट खाने से दिमाग तेज होता है.

■तरबूज के रस में चीनी घोलकर ४० दिन तक रोजाना पीने से पुराने से पुराना सिरदर्द भी गायब हो जाता है.

■तरबूज के बीजों का रस पीने से उच्च रक्तचाप सामान्य होता है. गुर्दे में यदि सूजन हो, तो उसमें भी आराम मिलता है.

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक व्यक्तित्व विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई

पत्रकारों की सुरक्षा, संरक्षा एवं अधिकारों के लिए गठित

मीडिया फोरम ऑफ इंडिया

10 रीवां बिल्डिग, लीडर रोड, (रेलवे जंक्शन के सामने) इलाहाबाद–211003, उ.प्र.
09935959412, 9335155949 **Email:** media_fi@rediffmail.com, **Website**: www.mediaforumofindia.com

मीडिया फोरम का उपरोक्त पता ही एक मात्र कार्यालय है.
सभी पदाधिकारियों के नाम, पते फोटो सहित तथा सदस्यों के नाम वेब साइट में दर्ज है. इसके अतिरिक्त न तो कोई सदस्य ओर न पदाधिकारी विधिमान्य होंगे और न ही इनका फोरम से कोई वास्ता होगा.

मालवी बाल विनोद गीतों में प्रकृति ज्ञान

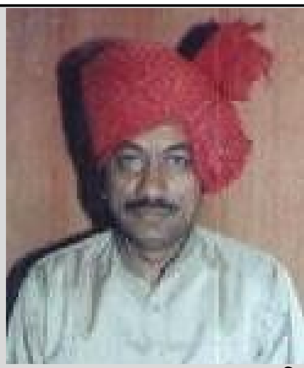

&जगन्नाथ विश्व

बालक कभी-कभी जीवन के ऐसे मार्मिक तथा कटु सत्य को उजागर करते हैं कि हमें कुछ क्षण उनकी बातों पर सोचना पड़ता है.

०नागडा, म.प्र.

मालवी लोक गीतों में बालकों के गीत जीवन संसार को परखने की क्षमता रखते हैं. बाल गीत उनकी आयु ज्ञान और बौद्धिक स्तर को पूर्ण रूपेण प्रतिबिम्बित करते हैं. बालकों की किशोरावस्था में उनकी मानसिक स्थिति बडी विचित्र होती है.

बालक कभी-कभी खेलते-कूदते जीवन के ऐसे मार्मिक तथा कटु सत्य को उजागर करते हैं कि हमें कुछ क्षण उनकी बातों पर सोचना पड़ता है. बालकों के गीतों में अधिकांश उनकी कल्पना का आधार उनकी आँखों देखी वस्तुओं पर निर्भर रहता है. उदाहरण के लिए प्रकृति-ज्ञान के इस गीत को देखिए-**चांद गयो गुजरात, हिरणी उगेगी/ हिरणी का बड़ा-बड़ा दाँत, छोरया डरपेगा/ संजा! तू थारा घरे जा, थारी माँ, मारेगा, कूटेगा, चोद गयो गुजरात.**

अर्थात-रात का अधिक समय हो गया है और चाँद चला गया याने अस्त हो गया है। हिरणी उदित होने वाली है. उसके दांत बड़े-बड़े हैं इसलिए जल्दी अपने घर चली जाओ अन्यथा हिरणी के बड़े दांत देखकर सब बाल-बालिकाएं भयभीत हो जावेंगे. इस प्रकार इस बाल गीत में बच्चे यदि रात को घर देर से आते-जाते हैं तो वहां मां की डांट-फटकार का भय बतलाकर बच्चों को शीघ्र समय पर घर जाने का आग्रह किया है.

जब कभी अनावृष्टि का आतंक छा जाता है तो गांव के लोगों में भी भीषण शंकाएं व्याप्त हो जाती है। कारणवश वे वृष्टि के देव इन्द्र को मनाने का प्रयास करते हैं. भोले-भाले बच्चों को क्या मालुम कि वर्षा के देवता इन्द्र हैं. वह तो डेंडक माता को ही सर्वस्व मानकर याचना करने लगते हैं. बच्चों की याचना का आनंद इस गीत में लीजिये-**डेंडक माता डेंडक दे, पानी की बोछार दे/म्हारा बीरा की आल सूखे, पाल सूखे/ गद्दो भूंके, गद्दी भूंके, भौ-भौ, भट्ट**

यह गीत बच्चें आपको अपने सिर पर टीन के पतरे या खपरैल को धर, तथा मिट्टी के लोंदे में नीम या अन्य झाड़ की डगाल गाड़कर प्रत्येक घरों के द्वार पर वर्षा के आव्हान के रूप में गाते हैं. बालक मनुष्यों की चाल-ढाल और बोल चाल से उसकी मन स्थिति को परखने की चेष्टा करते रहते हैं. मनुष्य के ऊपरी हाव-भाव से ही बालक उसकी अक्ल का अंदाजा लगा लेते हैं. यही इस गीत में झलकता है-**म्हारो मामो आयो रे, नखराली मामी लायो रे/ नकटी ने पूछी बात, धम्मक से पड़ी ऊके लात'**

अर्थ स्पष्ट है कि जब मामा एक नखराली सुन्दर स्त्री को लाया तो उसे एक नकटी औरत ने जान-बूझकर छेड़ दिया. बस मामा ने अपनी नयी, नवेली दुल्हन के सामने अपने पौरूष का प्रदर्शन करते हुए उस नकटी औरत को मार पीट कर भगा दिया. हास्य व्यंग्य की भावना के साथ-साथ सामान्य घटना की पकड़ भी इन बच्चों के गीतों में बड़ा सुन्दर लगती है. जैसे-**डूंगरी पर डूंगरी रे, झाडू घड़ियो जाय/ पेट लबूर तो जाय, बामण-बाणया पूंजी ले, छल्लो बोल्यो रे/ डूंगरी पर डूंगरी रे मियाँ पकावे दाल/ मियाँ की जल गई दाढी बीबी नोचे बाल, छल्लो बोल्यो रे.**

बच्चों को मजाक भी बड़ा प्यारा होता है. उन्हें कभी-कभी किसी की टांग ताड़ेने और मूंछ काटने में खूब आनंद आता है. बच्चों के मनोविनोद से ओत-प्रोत यह अद्‌भुत प्रसंग देखने काबिल है-**म्हारा घर का पाछे कड़ी तूमड़ी, तोड़ बगारी भाजी जी/ अण्डों तोड़यो बण्डो तोड़यो, फिर भी नी सीजी भाजी जी/ आखा गाम का छाणा चोरया, फिर भी नी सीजी भाजी जीध छोटा जेठ की टांग तोड़ो, तो भी नी सीजी भाजी जीध बड़ा बाप की मूँछा कतरी, खदबद सीजी भाजी जी**

इस प्रकार मालवाँचन के इन मालवी बाल गीतों में भावनात्मक मनोविनोद की झाँकी से ओत-प्रोत प्रकृति ज्ञान का भंडार हमें देखने को मिलता है.

काश तुझे जान पाता

तुझे जान लेता अगर, हो जाता मैं सिद्ध।
हाँकी गप्पें ज्ञान की, रहा गिद्ध का गिद्ध।।
रहा गिद्ध का गिद्ध, रहा सूखा न गीला।
उमर हुई मर जोग, समझ नहिं पाया लीला।।
हे! लीलाधर नाथ, सुगम पथ बतादे मुझे।
व्याकुल हूँ ''राजगुरु'', काश जान पाता तुझे।।

अर्थ–अनर्थ

खून खराबा को कहें, ये हिन्सक जेहाद।
खुदा नियामत जिन्दगी, काट करें बर्बाद।।
काट करें बर्बाद, खोदते खुदइ खुदाई।
खुदा करे नहिं माफ, जानिए इन्हें कसाई।।
अर्थ आयती करें, निज हित ये अफलातून।
खुदइ खुदा के नाम, ''राजगुरु'' बहायें खून।।

गलत व्याख्यायें

खुदा, ईश देता नहीं, हत्या का आदेश।
उसके नामे हम करें, अपने बचन निवेश।।
अपने बचन निवेश, बनाते सबको उल्लू।
धर्माचार्यो अरे!, डूब मरिये जल चुल्लू।।
टीका करके गलत, जन से जन करते जुदा।
हत्या का आदेश, ''राजगुरु'' देता, न खुदा।।

सजा का ढिंढोरा

कड़ी सजा का ढिंढोरा, मत पीटो बेकार।
उनकी वोटें चाहिए, गढ़ने को सरकार।।
गढ़ने को सरकार, दो–मुँहीं करो न बातें।
हाथ एक के शीश, पेट में दूजे लातें।।
सने खून आतंक, आप आदरें हर घड़ी।
मत पीटो ''राजगुरु'', ढिंढोरा सजा का कड़ी।।

–आचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर 'राजगुरु',
जबलपुर, म.प्र.

निभा सकता हूँ मैं

एक धोखा है, जिसे ताउम्र खा सकता हूँ मैं।
एक रिश्ता, आपसे हरसू निभा सकता हूँ मैं।
आप मेरे दोस्त है, सुनकर बहुत अच्छा लगा,
यह बतायें, आपके क्या काम आ सकता हूँ मैं।
जिन्दगी भर, आपके आदेश का पालान किया,
नाज नखरे आपके, अब भी उठा सकता हूँ मैं।
मैं वफा के लफ्ज से, वाकिफ नही हूँ सच कहा,
आईना इस बात पर, खुद को दिखा सकता हूँ मैं।
आपकी मौजूदगी, महफिल में लाइल्मी रही
इक इशारा कीजिए, आकर भी जा सकता हूँ मैं।
यह खुलूसे जिन्दगी, मेरा निजी अखलाक है
अपने कातिल की, जमानत भी करा सकता हूँ मै।
यह मुहब्बत है, नही है आप पर अहसान कुछ
कोई मौसम हो, कहीं भी, मिलने आ सकता हूँ मैं।
यह खुदा की देन है, इसके सिवा कुछ भी नही
ग़ज़ल हर मजमून पर, लिखकर दिखा सकता हूँ मैं।

–हितेश कुमार शर्मा, बिजनौर, उ.प्र.

राज धर्म

कश्तीबान लहरों से दोचार होता है
बस्ती बस्ती छाया गुबार होता है
उठें मौजें चीखें अंधड़ बढ़े अंधियारा
वहां माँझी नंग्गी तलवार होता है।
सागर भूलता है ह्याते तूफान कम है
उसके चुप में छिपा यही असरार होता है
बहर ने सोचा कश्ती को बिखरना है
लेकिन वहां भी रखा एक पतवार होता है।
फरोग़ लंकाएँ ढ़ह जाती हैं क्षण भर में
जहां जहां राजधर्म न बेदार होता है।

2

क़ल्म की जुबान से शहद टपकाओं तुम,
उसे न नफ्रत का एक खंजर बनाओ तुम।
हया है इक ज़ेवर इन्सानों का सुन,
किरदार ही सब कुछ है समझाओ तुम।

3

आज फसाना रंग से ख़ाली है
जेब का नोट भी लगे जाली है
शिवा की तीसरी आँख कहां है
भंग पीके मदहोष पड़ा माली है।

४

हिरसो हवा की ग़ज़ल गाता है
दुनिया में क्यों दिल लगाता है।
यह जगत बेपेन्दी का लोटा है
उसे चला दे जो सिक्का खोटा है।

–वली उल्लाह खां 'फरोग',
अजमेर, राजस्थान

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), **02-डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), **03—हिंदी सेवी सम्मान**- (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), **04-राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **05-राष्ट्रभाषा सम्मान** -(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) **06-कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिंग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) **09-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), **10-पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), **11-सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) **12-प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) **13-युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, **18-विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), **19-डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) **24-विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**: साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में**: समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में**: पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

विशेष:१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणिका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्‌जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**

एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो०ः ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः..

पताः..

....

दू०/मो०संख्या...........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..विधा...................वर्ष.........................

प्रेषित प्रतियाँ............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................

संख्या........................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

प्रस्तावक

नाम..............................

हस्ताक्षर..........................

पूरा पता.......................

भवदीय/भवदीया

हस्ताक्षर....................................

पूरा नाम....................................

सलंग्नक

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक

०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं,/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये **30 सितम्बर 2013** तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता **संःएस.बी. 538702010009259** में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

जीवन के उस पार

चार रास्ते ब्रम्हाण्ड लोक की तरफ जाते हैं. जीवन, जहां से होकर वह माता के गर्भ में आया है, आयु पूर्ण होने के बाद उसी मार्ग से उसे पुनः जाना है, जहां प्रस्थान करने के बाद वह वापस मृत्युलोक में नहीं लौट सकता. पृतुलोक में मानव द्वारा किये गये कार्यो का हिसाब किताब होता है.

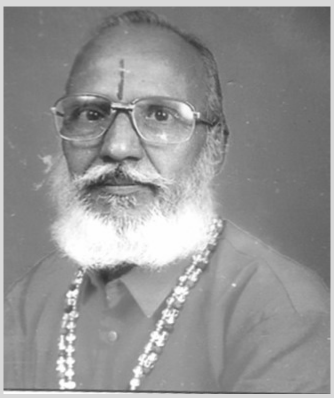

डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०१

मनुष्य के अन्तिम पड़ाव पर तनहा, अकेला खामोश परलोक के चौराहा की कल्पना कर मनुष्य सोचता है. मैंने जिन्दगी में क्या पाया और क्या खोया? जहां से चार रास्ते ब्रम्हाण्ड लोक की तरफ जाते हैं. मृत्युपरान्त प्रत्येक मनुष्य को इसी मार्ग से जाना है. इस चौराहे से चार मार्ग विभिन्न दिशाओं की ओर जाते हैं. जीवन, जहां से होकर वह माता के गर्भ में आया है, आयु पूर्ण होने के बाद उसी मार्ग से उसे पुनः जाना है, जहां प्रस्थान करने के बाद वह वापस मृत्युलोक में नहीं लौट सकता. पहला मार्ग है पृतुलोक का जहां पर हर आत्मा को शरीर छोड़ने के बाद एकत्रित किया जाता है. यहां पर उन्हें १३ दिन तक रहना होता है. उसके बाद प्रारम्भ होता है, उसके अनन्तमार्ग की यात्रा, पृतुलोक में मानव योनि में किये गये कर्मयोग-परोपकार-परमार्थ-पाप-पुण्य - क्षमा-दान, इत्यादि का अणवेषण(हिसाब किताब) करने के बाद विकट विकराल अंधकार गुफा मार्ग से उसके कर्मानुसार यमदूत या देवदूत उसे लेकर आगे बढ़ते हैं. गुफामार्ग समाप्त होते ही ब्रम्हाण्ड परिक्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है. जहां चारो ओर तरफ भयंकर ज्वालायुक्त परिक्षेत्र है, चारो तरफ अग्नि ही अग्नि है. इसी के बीच से जाता है अनन्तमार्ग, पापी-दोषी लोगों की आत्मा को यमदूत जंजीरों में जकड़ कर मारते-पीटते-घसीटते हुए ले जाते हैं. किन्तु जो पुण्य आत्माएं है, उन्हें देवदूत यमराज के न्यायालय में ले जाते हैं. यहां पर यमलोक के न्यायाधीश उसके मनुष्य योनि के कर्मो का न्याय करके, पाप आत्मा को नर्कलोक और पुण्य आत्माओं को देवलोक भेज देते हैं. इसके आगे चल कर पड़ता है, कर्मचौक, जहां से चार रास्ते विभिन्न दिशाओं में जाते हैं. यक्षलोक-तत्वयक्ष लोक आदि चार धाम है. जिस मानव प्राणी ने मनुष्य योनि में जीवन भर सदकर्म नहीं किया, कभी परमार्थ कर्म नहीं किया,जीव भर माया-मोह, लोभ-अहंकार में डूबा स्वार्थ भाव से परिवार के पालन-पोषण में ही रत रहा, कभी परमात्मा का स्मरण तक नहीं किया, अकर्म में विल्पत संलग्न रहा, तो मृत्युपरान्त उसे मोक्ष मार्ग कैसे प्राप्त होगा. यमराज के जल्लाद उसे भयंकर यातनाएं देते हुए कंटिले झाड़ियों के बीच जंजीरों से बांध घसीटते हुए ले जायेंगे, उस वक्त कोई सगा सम्बंधी उसके साथ नहीं होंगे. यह सांसारिक रिस्ते नाते केवल मृत्युलोक के भौतिक जीवन तक ही हैं. मृत्युबाद सभी रिस्ते नाते स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं. उसे कर्मयोग की यातनाएं भोगते हुए अकेले ही तनहा अनन्त मार्ग की यात्रा करनी होती है. इसी कर्मचौक से पहला मार्ग पूर्व दिशा की ओर जाता है. जो सीधे देवलोक पर जाकर समाप्त होता है. इसे स्वर्ग लोक शास्त्रों में कहा गया है. यह मार्ग विभिन्न सुगन्धों से सुगंन्धित है. दोनों ओर अप्सरायें कतार में खड़े होकर पुष्प-अर्क वर्षा करती हैं. इस मार्ग से केवल पुण्य आत्माएं और सिद्ध साधू महात्मा ही जाते हैं. जो साधू संत सन्यास रूप में भी लोभ मोह अहंकार से विरल नहीं हो पाते केवल भगवा वेषधारी हैं, वह उत्तर दिशा के मार्ग से जाते हैं, यह मार्ग भयंकर कंटिले झाड़ियों से होकर जाता है. इन्हें यमदूत यातनांए तो नहीं देते, किन्तु कर्म जंजीरों से जरुर जकड़ कर ले जाए जाते हैं. यह मार्ग सीधे ब्रम्हाण्ड लोक को जाता है. यमराज के दरबार में जाकर समाप्त हो जाता है. यमराज स्वयं ऐसे साधू महात्मा के मृतात्मा का न्याय करके उसे उचित लोक में भेजते हैं. ब्रम्हाण्ड लोक के इस विशाल परिक्षेत्र को पार करना सहज संभव नहीं है. **क्रमशः**

iath-la-%832

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

सम्पर्क स्थलः एल.आई.जी–93, नीमसरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-9335155949 **email**-sahityaseva@rediffmail.com,gokul_sneh@yahoo.com

सदस्यता फार्म

क्रमांक.............

कृपया दो फोटों सलंग्न करें

नाम ....जन्म तिथि ....

पिता का नाम ....शैक्षिक योग्यता ....

लेखन/पत्रकारिता का अनुभव ....वर्ष ....मुख्य व्यवसाय ....

स्थायी पताः...

....

पत्राचार का पताः ....

....

कार्यालय का पता : ....

....

दूरभाष : (का0)...(नि.)..मोबाइल सं0:......................

अन्य संगठन जिससे आप जूड़ें हुए होंः..

आप हिदी की किस प्रकार सेवा करना चाहते हैंः ....

दिनांक .... हस्ताक्षर सदस्य ....

संस्थान के उद्देश्य/नियम

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान का गठन विश्व भर के हिंदी प्रेमियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास, आर्थिक व सामाजिक उन्नयन, प्रतिष्ठा व सम्मान की सुरक्षा करना है। इसके द्वारा प्रत्येक वर्ष हिंदी साहित्यकारों को सम्मानित करना व मानद उपाधियॉ देना, हिंदी लेखन/पत्रकारिता महाविद्यालय खोलकर उसमें हिंदी के उत्थान हेतू कक्षाएं चलाना, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार प्रसार करना, विश्व के सभी देशों के हिंदी प्रेमियों को सम्मानित करना साहित्यकारों के हित के सरकार से सहयोग लेना इत्यादि होगा.आपको सदस्यता के लिए १००/- रुपये मात्र देना होगा. जिसमें ५०/-रुपये संस्थान की सदस्यता का व ५०/-रुपये पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का. साहित्य कोष के लिए अगर आप चाहे तो स्वेच्छा से १ रुपये से लेकर १०००००००००....../-रुपये तक जो भी आपकी सामर्थ्य हों दे सकते हैं. आपके द्वारा दी गयी धनराशि विश्व हिंदी साहित्य कोष में रक्खा जाएगा जिसका प्रयोग निर्धन साहित्यकारों की रचनाओं को प्रकाशित करने, उनकी आर्थिक मदद करने के लिए किया जाएगा.

आदरणीय संपादक महोदय,
पत्रिका मिली धन्यवाद. डॉ. रामधारी सिंह दिनकर को समर्पित यह दिसम्बर १२ का बिहार के साहित्यकार विशेषांक बहुत ही अनूठा है. इतने अच्छे सम्पादन के लिए आपको बधाई.

देवेन्द्र नाथ साह
कुलसचिव, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गांधीनगर, ईशापुर, भागलपुर, बिहार

++++++++++++++++++++

पत्रिका का बिहार के साहित्यकार विशेषांक प्राप्त हुआ. आपके इस खुलूस-ओ मुहब्बत के मैं सदके जावां. दिनकर जी पर विस्तृत जानकारी रोचक एवं ज्ञानवर्धक है. 'भारतीय संस्कारः दृष्टि मनुकी, एक बार ही नहीं कई बार पढ़ने के योग्य है. 'आओ लड़े मिलावट से' उपभोक्ताओं के हक में एक अच्छी एवं सचेत करने वाला मालूमाती मजमून है. आपका बहुत बहुत शुक्रिया.

फैयाज अहमद अंसारी
अजमतगढ़ स्टेट, आजमगढ़-२७६१२४

++++++++++++++++++++

आदरणीय श्री द्विवेदीजी
संस्थान द्वारा आयोजित साहित्य मेला के अवसर पर हमें आमंत्रित करने एवं मेरे द्वारा रचित 'केदार खण्ड' ग्रन्थ को 'विद्या वाचस्पति' की मानद उपाधि प्रदान करने हेतु हार्दिक धन्यवाद.
कुम्भ नगरी इलाहाबाद साहित्यिक नगरी के रूप में भी मान्यता प्राप्त रही है. इस दृष्टि से भी इस पवित्र नगरी से सम्मानित होना मेरे लिए गौरव की बात है.
हिन्दी के उत्थान एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्द्धन के क्षेत्र में आपका संस्थागत प्रयास महत्वपूर्ण है. कुम्भ की इस पवित्र नगरी से साहित्य की धारा यू ही अविरल, स्निग्ध प्रवाहमान रहे, यही कामना है.

हेमा उनियाल
८/५५०, लोधी कॉलोनी, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++

महोदय,
विश्व स्नेह समाज का सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी को समर्पित इलाहाबाद के साहित्यकार विशेषांक प्राप्त हुआ. निराला जी के बारे में आपकी रचना सराहनीय है. आपके द्वारा यह बहुत ही स्तुत्य कार्य किया गया है. आपको ढेरों बध ाई.

-एस.बी.मुरकुटे,
क्रास नं०२, आनंद नगर, बड़गांव, बेलगाव-५, कर्नाटक

महोदय,
आप द्वारा प्रेषित मार्च का अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! यह पत्रिका 'साहित्य समाज का दर्पण है' की उक्ति को अक्षरशः परिलक्षित करती है. समाज के सभी वर्ग की छवि इसके लेख, लघुकथाओं, कहानियों, कविताओं में झलकती है. इस अंक में डॉ० तारा सिंह द्वारा लिखित कहानी पानी ने बेपानी किया. वर्तमान समाज की सटीक व अक्षरशः सत्य कहानी है. इस कहानी का चित्रण घर-घर में हो रहे बुजुर्गो के साथ अत्याचार, उनके अपमानित जीवन को दर्शाता है. ऐसा लगता है कहानी लेखक ने पारिवारिक जिंगदी को करीब से देखा और एहसास किया है. पढ़कर मात्र सहानुभूति ही नहीं, बुजुर्गो के प्रति अपना व्यवहार बदलना आवश्यक है.

-सुनीता शर्मा
ए-४११, गुड़गांव, हरियाणा

प्रयास
काव्य संग्रह
रचनाकारः
ओम प्रकाश त्रिपाठी
मूल्यः 50/रुपये मात्र
प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र. -२११०११ मो०६३३५१५५६४६

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.
10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।
विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

घरेलु उपचार-अपने ही सुधार

-ब्रह्मर्षि वैद्य पं.नारायण शर्मा
कौशिक, नागौर, राजस्थान

रोगोपचार में जड़ी-बूंटी का विशेष महत्व है. कुछ सामान्य रोगों की जानकारी के बाद इस प्रकार रोगोंपचार कर सकते है-

हैजा की दवा-कपूर के साथ अजवाईन को मिलाकर देने से हैजा(क्थिूचिका) उदर रोग, वायुशूल आदि रोगों का निवारण होता है.

गले की सूजन की दवा-यदि गले में सूजन आ गयी हो तो या कफ अधिक निकलता हो तो अजवाईन का सेवन करना चाहिए. अगर पीड़ा हो तो पुल्टिस बनाकर बांधने से पीड़ा में निदान (उपचार) होता है.

पत्थरी की दवा-अनन्तमूल की जड़ को पीसकर गाय के दूध के साथ फाँकने से पथरी व कठिनता से मल उतरना दूर हो जाता है. गुजराती में इसे कपूरी, संस्कृत में सरिवा, हिन्दीं में गोस दीसर के नाम से जाना जाता है.

बच्चों के अतिसार की दवा-अनार की छाल, जावित्री, दालचीनी, धनिया तथा काली मिर्च मिलाकर सेवन करने से पुराना अतिसार दूर हो जाता है.

श्वास की दवा-अपामार्ग के फल वाली डंडी को तम्बाकू की भांति चिलम में रखकर पीने से श्वास रोग का दौरा कम होता है. हिन्दीं में इसे चिरचिटा, चीचोडा, ओगां गुजराती में घेड़ा कहते है.

कान की दर्द की दवा-अफीम को जलाकर ४ चावल बराबर भस्म गुलरोगन में मिलाकर कान में डाले तो कान दर्द दूर होता है.

दाद की दवा-अमलतास की हरी पत्तियों को कुछ कुचलकर दाद पर मलें लाभ होगा तथा खुजली भी दूर होगी.

सुख प्रसाव की दवा-अमलतास की फली के ऊपर की छाल को केंशर मिश्री और गुलाब जल के साथ पीसकर देने से स्त्रियों को तुरन्त प्रसव हो जाता है.

पसली का दर्द-पसली का दर्द होने पर ३०ग्राम सौठं को कूट कर एक गिलास पानी में उबाल कर छान लें. पसली के रोगीं को दिन में चार बार पीसी हुई काली मिर्च डालकर सेवन करवायें. शीघ्र लाभ होगा.

खाँशी (गले की खराबी)- यदि गले में खराबी हो तो अदरक का रस २५ग्राम, शहद १५ग्राम लेवे इन दोनों को मिलाकर हल्का गर्म कर ले. इसे शीघ्र काँच में डालकर रखें खाँशी, नजला जुकाम तथा गले के रोगियों के लिए दिन में चार बार एक बड़ा चम्मच पिलाने से कुछ दिनों में लाभ होगा. स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा, मधुर स्वर की ध्वनि बनेगी.

गंठिया-इसका प्राथमिक उपचार १० ग्राम सौंठ, सूखा अदरक १००ग्राम पानी में उबालें. जब पानी का चौथा भाग रह जाय तो उसे नीचे उतार कर उसमें शक्कर या शहद मिलाकर गठिया रोगी को दिन में दो बार पिलाने से शीघ्र ही ठीक हो जायेगा और जोड़ों के दर्द से मुक्ति मिलेगी.

जोड़ों का दर्द-छोटी इलाइची या इलाइची पिसकर जोड़ो के नीचे वाले हिस्सें में लेप करे तथा लेप को सुखने दे ऐसा करने से लाभ होता हैं.

अर्श(बवासीर)-६०ग्राम काले तिल को खाकर ऊपर से ठण्डा पानी पी ले. इससे बिना रक्त वाला अर्श(बवासीर) ठीक हो जाता है.

कब्ज की दवा-६०ग्राम तिल को कूटकर इसमे चीनी मिलाकर खाने से कब्ज का निवारण होता है.

पेचिस-भुनि हुई सौंफ और मिश्री दोनों को बराबर भाग में लेकर पीस ले दिन में चार बार एक-एक चम्मच पानी के साथ लेने से लाभ होगा.

नेत्र रोग- खाना खाने के बाद एक-एक चम्मच सौंफ, नित्य खाने से ज्योति बढ़ती है. जिकसार (हरूरे, बहड़े,आँवला) के पानी से आँखे नित्य धोयें.

स्मरण शक्ति बढाने के लिए-यदि स्मरण शक्ति कमजोर हो जाय तो सौंफ को थोड़ा-सा कूट कर ऊपर का छिलका उतार कर उसे मिश्री के साथ पीसकर मिलाकर बारीक छान लें. इस चूर्ण को सुबह तथा रात के समय गाय के दूध के साथ सेवन करें.

आवश्यक सूचना

पत्रिका के नये सदस्यों के लिए विशेष योजना 31.12.2014 तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना रचनाकार के विशेष अनुरोध ा पर प्रारम्भ की गई है

सम्मानार्थ प्रविष्टि आमन्त्रित है

३२वें 'भाषाई एकता अधिवेशन' में प्रतिभा सम्मान योजनान्तर्गत चयनित पत्रकारों, कलाकारों तथा साहित्यकारों कोा सम्मानित करेगी. सम्मान इस प्रकार है- प्रज्ञा भारती, विवेकानन्द सम्मान, सरस्वती सिंह सुमन स्मृति सम्मान, कबीर सम्मान, रोहित कुमार माथुर स्मृति सम्मान, दुर्गा प्रसाद शुक्ल स्मृति सम्मान, हिन्दी गरिमा सम्मान, साहित्य मार्तण्ड, कला मार्तण्ड एवं पत्रकार मार्तण्ड. सम्मानोपाधियां साहित्य सौरभ, साहित्य मनीषी, साहित्य भूषण, साहित्य वाचस्पति, साहित्य सागर, साहित्य महोपध्याय. सम्मानोपाधियों हेतु अलग से डाक टिक युक्त लिफाफा भेज कर फार्म मंगाये. उच्च कोटि के विद्वानों को मेडल भी दिए जायेंगें.

लेखक गण अपनी श्रेष्ठ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां, सम्पादकगण अपनी पत्र-पत्रिकाओं के तीन अंको की दो-दो प्रतियां, कलाकार गण स्व निर्मित चित्र या फोटोग्राफ्स के तीन चित्रों की दो दो प्रति भेजें.

सभी प्रतिभागी अपना जीवन परिचय, पता युक्त टिकट लगा लिफाफा दो चित्र, ३५ रुपये का डाक टिकट ३१ अगस्त २०१३ तक पंजीकृत डाक द्वारा भेजें. अपूर्ण प्रविष्टि स्वीकार न होगी.

वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'
सचिव
साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी
परियावां, प्रतापगढ़, म.प्र. मो. ९९५६६०१७८०

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30 सितम्बर 2013 तक.

एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

डॉ० अहिल्या मिश्र को सम्पादक शिरोमणि सम्मान

हैदराबाद. साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान में आयोजित पाटोत्सव ब्रज भाषा समारोह में देशभर के विद्वानों, साहित्यकारों एवं सम्पादकों का अभिनंदन किया गया. राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी-जयपुर तथा राजस्थान साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में पाटोत्सव के अंतर्गत विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन साहित्य मण्डल प्रेक्षागृह में किया गया.

समारोह में हैदराबाद की डॉ० अहिल्या मिश्र को साहित्य मण्डल के प्रधानमंत्री भगवती प्रसाद देवपुरा व राजस्थानी ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष सुरेन्द्र उपाध्याय की अध यक्षता में सम्पादक शिरोमणि अवार्ड से सम्मानित किया गया. पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई.

डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय को निराला साहित्य सम्मान

लखनऊ, नगर के सुप्रसिद्ध कथाशिल्पी, चर्चित साहित्यकार एवं हिन्दी सांसद-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान को निराला साहित्य परिषद, महमूदाबाद, सीतापुर द्वारा आयोजित महाप्राण निराला-जयन्ती समारोह के शुभ अवसर पर निराला साहित्य सम्मान-२०१३ से सम्मानित किया गया.यह सम्मान वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी एवं विश्व प्रसिद्ध साहित्य मनीषी डॉ० गंगारत्न पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. हरिशंकर मिश्र एवं प्रो. उषा सिन्हा के हाथों उत्तर प्रदेश प्रेस क्लब, लखनऊ में प्रदान किया गया. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

वंदे मातरम (लघु कथा संग्रह)
सम्पादकः आचार्य यदुमणि कुम्हार

जय श्रीराम काव्य संग्रह
रचनाकारः आचार्य यदुमणि कुम्हार

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद, उ.प्र

निर्णय

–अखिलेश निगम, 'अखिल'
लखनऊ, उ.प्र. मो०: 9793274150

''सुनो जी.''

''हूँ''

''आजकल अपने मुहल्ले का वातावरण बहुत खराब हो रहा है. यहाँ पर रहना मुश्किल हो रहा है.'' पत्नी ने डायनिंग टेबल पर पति को खाना परोसते हुए कहा.

''क्यों, क्या हुआ?'' पति ने उत्सुकतावश पत्नी की ओर देखते हुए कहा.

''हूँ...., आपको तो अपने आफिस कार्य के अलावा कुछ सूझता ही नहीं है. अरे...अपने पड़ोस में चौबे जी की लड़की सुमन दूसरे मुहल्ले के एक ठाकुर लड़के के साथ भाग गयी है.''

''अच्छा....। पति ने आश्चर्य प्रकट किया.''

''और पड़ोस के ही सिन्हा जी का लड़का अपनी एक पहाड़िन गर्लफ्रेंड से शादी कर लिया है. घर वालों ने बहुत समझाया लेकिन वह माना ही नहीं.''

''अरे....'' पति ने पुनः आश्चर्य व्यक्त किया.

''यह मुहल्ला अब हमारे रहने के काबिल नहीं रहा, अब लगता है कि कहीं अच्छी जगह किराये पर मकान लेना पड़ेगा, नहीं तो हमारे सूरज और साधना पर भी गलत प्रभाव पड़ेगा.'' पत्नी ने कहा.

पति ने सहमति में सिर हिला दिया.

डायनिंग टेबल पर पापा के साथ सूरज एंव साधना भी डिनार कर रहे थे. सूरज ने नजरें नीचीं रखते हुए पापा से कहा–''पापा! यदि आप बुरा न मानें, तो एक बात कहना चाहता हूँ किन्तु मुझे वह बात कहने में डर एवं संकोच लगता है.''

''नहीं तुम उसे बेधड़क कहो, डरने की कोई बात नहीं है.'' पापा ने कहा.

''हां, सूरज तुम्हें हम लोगों से डरने एवं सकोच करने कोई आवश्यकता नहीं है.'' मम्मी ने कहा.

पापा! मेरे कालेज में मेरी ही क्लास में एक मुस्लिम लड़की सकीना पढ़ती है. हम दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं. मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ.'' सूरज ने कहा.

''क्या?'' पापा–मम्मी दोनों ने आश्चर्यपूर्ण मुद्रा में सूरज को देखा.

''हाँ मम्मी, मै सकीना के परिवार वालों से भी मिल चुका हूँ उन्हें इस सम्बन्ध ा में कोई आपत्ति नहीं है.''

''किन्तु यह कैसे हो सकता है.'' मम्मी ने कठोरतापूर्वक कहा.

''पापा......मम्मी मैनें यह निर्णय किया है कि यदि विवाह करूँगा तो सिर्फ सकीना से...अन्यथा आजीवन कुआँरा रहूँगा.'' सूरज ने दृढ़तापूर्वक कहा.

पति–पत्नी सूरज के इस निर्णय से अवाक् रह गये. डायनिग टेबल पर खाना खा रही साधना के चेहरे पर भी विश्वास भरी मुस्कान खिल उठी.

अब सूरज के पापा–मम्मी मुहल्ला बदलने के उस निर्णय का परित्याग कर चुके थे.

अपहरण

–मोहम्मद आरिफ,
उज्जैन, म.प्र.

मंत्रीजी भूख हड़ताल पर बैठे हड़ताली के पास जाकर बोले–'लो यह मौसम्बी का जूस और अपनी भूख हड़ताल समाप्त कर दो.'

भूख हड़ताली–'जी नहीं. मैं अपनी भूख हड़ताल हरगिज़ समाप्त नही करुँगा।

मंत्रीजी–'आखिर इसकी वजह?'

भूख हड़ताली–'इससे मेरा परिवार पल रहा है, उसे रोजी रोटी मिल रही है.

मंत्रीजी–'मैं समझा नहीं. तुम्हारी भूख हड़ताल से भला तुम्हारा परिवार पल रहा है ऐसे कैसे हो सकता है?'

भूख हड़ताली–'मैं यहाँ भूख हडताल पर हूँ और उधर मेरे सारे समर्थकों की संवेदना मेरे परिवार के साथ है. वे मेरे परिवार को रुखी–सूखी दे रहे है, उनकी सहायता कर रहे है.

मंत्रीजी–'अच्छा अब समझा. इस तरह तुम्हारे परिवार को रोजी–रोटी मिल रही है.' मंत्रीजी चले गए. भूख हड़ताली के परिवार का रोजी–रोटी का झंझट भी खत्म हो गया. मंत्रीजी ने उसका अपहरण करवा दिया।

गाँधीगिरी

शहर के रेल्वे स्टेशन के बाहर फल वाले जोर–जोर की आवाज लगाकर केले, सेब अंगूर इत्यादि बेच रहे थे. केले के ठेले के समीप जाकर मैंने केले खरीदे. एक मैली–कुचैली, फटी साड़ी पहने औरत जो एक बच्चे को गोद में व दूसरा साथ में था. उसने भी कुछ केले खरीदे. केलेवाले के ठेले से हटकर मैं अपने केले खाये और खाने के बाद छिलके अपनी समझदारी का परिचय हुए कुछ दूर एक दीवार के नीचे डाल दिये और उस औरत को दूर से देखने लगा. मुझे भरोसा था कि वह केले के छिलके वहीं सड़क पर फेंककर चली जाएगी. लेकिन मैं अपनी गांधीगिरी पर शर्मिदा था क्योंकि उसने अपने बच्चों को केले खिलाकर मुझसे एक कदम आगे रेलवे द्वारा लगाए गए प्लास्टिक के डस्टबिन में छिलके डाले.

सीमाएँ

-डॉ.मोहन तिवारी आनंद,
भोपाल, म.प्र.

''हलो, कौन?''

''सर संगीता बोल रही हूँ।''

''बोलो संगीता क्या बात है, तुम आज फिर दफ्तर नहीं आईं. ये ठीक नहीं है.'' अधिकारी श्री शर्मा जी ने झल्लाते हुए संगीता की बात सुने बगैर ही डांट लगाते हुए कहा.

''सर ऐसा है.''

''क्या सर-सर, ऐसा है वैसा है, रोज़ रोज़ नए-नए बहाने बनाती रहती हो. काम में मन नहीं लगता रोज़ एक नई कहानी गढ़कर बेवकूफ बनाती हो. मैं कुछ नहीं सुनना चाहता.'' कहकर शर्मा जी ने फोन काट दिया. संगीता ने आटो वाले को बुलाया और कहा भैया आप मुझे आफिस तक छोड़ दो. संगीता को आटो पर बैठते देख पड़ोसी आन्टी बोली-''अरी संगीता तुम ऐसी हालत में कहाँ जा रही हो? तबियत ठीक नहीं है, तुम्हें आराम करना चाहिए.''

संगीता आफिस में पहुँची और सीधे अधिकारी के कक्ष में दाखिल हुई. उसके हाथ-पाँव और सिर पर बंधी पट्टी देखकर शर्मा जी उठ खड़े हुए और बोले-''अरे ये क्या हुआ? एक्सीडेन्ट हुआ क्या? कैसे हुआ? अरे -अरे ऐसी हालत में तुम क्यों चली आई.'' संगीता मौन थी. शर्मा जी का गुस्सा पानी हो गया था. वह अफसोस व्यक्त करते हुए बोले-''देखो संगीता मुझे तो मालूम नहीं था कि सच्चाई क्या है, दफ्तर का काम बहुत पिछड़ गया था, तुम्हारे कक्ष के सहकर्मी कह रहे थे कि तुम झूठ बोलकर अधिकारियों को बेवकूफ़ बनाती रहती हो। मैं भी मज़बूर था. शासकीय कार्यों की सीमाएँ होतीं हैं।'' संगीता चुप थी, उसकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह उठी.

''नहीं संगीता दुःखी नहीं होते, मैं अफसोस प्रकट करता हूँ कि मैं ने बगैर सच्चाई समझे तुम्हें भला-बुरा कहा.''

''नहीं सर, इसमें आपका कोई दोष नहीं है. दोष तो मेरे नसीब का है. आज मैं आप से एक विनती करने आई हूँ. आप मेरे बेटे को उसका वाज़िब हक दिला देना. मुझे आप पर बड़ा भरोसा है. मेरा बेटा अकेला है उसका दुनिया में मेरे अलावा कोई नहीं है. मेरे बाद आप इसका ख़्याल रखेंगे न?'' कह कर संगीता फूट-फूटकर रो पड़ी. शर्माजी हकबका गए. उन्होंने उसे साहस बंधाते हुए कहा-''संगीता ऐसे हताश नहीं होते, ज़िन्दगी में उतार चढ़ाव चलते रहते हैं. हर समय एक-सा नहीं रहता. बूरे दिन सदैव नहीं रहते. तुम कोई गलत निर्णय नहीं लेना. तुम्हारे बेटे को तुम्हारी बहुत जरूरत है. तुम्हें अपने लिए नहीं अपने बेटे के लिए जीना है. अपनी तकलीफ़ों का हल ढूंढ़ो. जो तुम्हें परेशान करते हैं उनसे डटकर मुकाबला करो. सब ठीक हो जाएगा. तुम्हें जो परेशानी हो खुलकर कहो, मैं हर सम्भव तुम्हारी मदद करूँगा.''

संगीता ने चुप्पी तोड़ी तथा अपने ऊपर गुजर रही सारी दास्तान कह सुनाई-''अब आप ही बताएँ सर, मैं क्या करूँ, किस पर भरोसा करूँ, लोगों की क्या उन्हें तो दूसरों पर कीचड़ उछालने में मज़ा आता है.''

''नहीं-नहीं संगीता, तुम संघर्ष करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर नारी सोच ले और अपने हक की लड़ाई लड़े तो कोई भी ताकत उसे परास्त नहीं कर सकती, रही बात लोगों की तो उनकी तो आदत ही रहती है ऐसी, उनकी परवाह नहीं करना चाहिए.

शर्मा जी की सलाह से संगीता को बल मिला. वह अपने हक के लिये कमर कसकर खड़ी हो गई. अब उसकी आँखों आँसू नहीं शोले बरसातीं हैं, उन पर जो कल तक उसे लौंडिया बनाकर उसका शेषण कर रहे थे, उसे घर की नौकरानी और उपभोग की वस्तु के अलावा और कुछ नहीं समझते थे.

विश्व स्नेह समाज की आगामी परिचर्चा का विषय

१-शिक्षा में भ्रष्टाचारः कारण एवं निवारण

२-मंहगाई मूल कारण एवं निवारण

३-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम २५० शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या ०१, ०२,०३ व ०४ के लिए क्रमशः २० जुलाई, २० अगस्त, २० सितम्बर २०१३ तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा. अपनी सामग्री पत्रिका के पते पर ही भेजें।

समीक्षा

समर्थ रचनाकार की श्रेष्ठ कृति 'शैला स्मृति'

प्रो० डॉ० दीनानाथ 'शरण' द्वारा लिखित 'शैला स्मृति' पुस्तक अपनी दिवंगता पत्नी/प्रेमिका के प्रति संबोधित श्रद्धांजलि है. समीक्ष्य कृति के गीतों में उसी पीड़ा की अभिव्यक्ति है. शरण जी ने लिखा है-'हमारी ये परवर्ती कविताएं, स्पष्ट है, कि हमारी दिवंगता पत्नी, प्रेमिका, जीवन संगिनी शैलजा सक्सेना के प्रति प्रेरित, लिखित और समर्पित है. जिनका पूर्व में तो नाम था शैलजा सक्सेना, परंतु हमने उन्हें विवाहोपरान्त नाम दिया था 'जयमाला'. परंतु इधर आकर, जाने क्यों, वे शैलजा शरण कहा जाना ही अधिक पसंद करती थी. हमारे नाम 'शरण' के साथ शायद अधिक निकटता के लिये.'

शैलजा, पीड़ा पत्नी के गुजर जाने के बाद प्रेम, सौन्दर्य, पीड़ा सभी की मिली जुली अभिव्यक्ति है.

जीवित और जीवंत नायिका
के जीवन का हो गया अन्त!
चाहते सदा ही हम तो थे
साथ उनका जीवन पर्यन्त।'

छायावाद जिसके खतरनाक ढंग से आकर्षित थे, हिन्दी के सुख्यात समालोचक पं. नलिनविलोचनं शर्मा के सन् १९५७ में हिन्दी काव्य में छायावाद की भूमिका लिखते हुए लिखा था-'मैं दीनानाथ जी से उस पराजय की आशा रखता हूं जो एक 'शैलजा-स्मृति' के गीतों में यह देखा जा सकता है. अपनी पत्नी के प्रति ऐसी और इतनी प्यार निष्ठा को इतनी गहराई और विस्तार के साथ लिखने वाला कवि हिन्दी में 'शरणजी' को छोड़कर और कोई दूसरा नहीं हुआ.

प्रेम-पगों गीतों की यह पुस्तक उन सभी पुरुषों को प्रिय होगी जो पर प्यार मारे हुए हैं, और उन स्त्रियों को भी बहुत पसंद आयेगी जिन्हें किसी पुरुष का सच्चा प्यार मिला.

कवि के दार्शनिक उदगार भी मिलते है, जैसे-

प्रेम बहुत की करना घातक,
प्रणय प्रेम में पीड़ा होती है।

भाषा का प्रवाह पाठकों को सहज अपने भावों में बहा ले जाता है.

आशा शीर्षक कविता में कवि ने प्रकृति के माध्यम से अपनी प्रेमिका की प्रतीक्षा की है-

हर दिन उषा आ-आकर
तुमकों है देखा करती
रातें हैं आहें भरतीं
आंसू मिस शबनम झरती.

लाक्षणिकता कवि की पंक्तियों में पग-पग पर हैं. सुहागिन शाम, यादों की सुगंध ा जैसे प्रयोग ध्यान देने योग्य हैं. कहीं-कहीं श्लेष अलंकार का भी बहुत अच्छा प्रयोग हुआ है.

प्यारी वह प्यारी आलिंगन में
प्यारी-सी प्यारी चुम्बन में।

कवि की कल्पना अधिकतर जीवन-वास्तव पर आधारित है जो उसने अनुभव किये हैं लेकिन अनुभव को कल्पना की कमनीयता और लाक्षणिकता प्रदान की है, जैसे

रातें रोतीं साथ हमारे
सिरहाने में होते सपने।

कवि ने यह आकांक्षा व्यक्त की है-

सुयस मिले मेरी शैला को,
सुयस मिले उनकी पुस्तक को।

नारी सशक्तिकरण के लिये कवि की जितनी प्रशंसा की जाये, कम है.

समीक्षकः कल्याणी सिंह

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद—211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

आइये हम प्यार बॉटने की कला सींखे

चलिए हम इस पन्ने पर एक बच्चे की नयी जिन्दगी/एक असहाय की सेवा के नाम लिखें–

जी, हॉ, आप किसी की उजड़ी जिन्दगी में फर्क ला सकते हैं और वो भी मात्र एक रुपये में

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए/ बृद्ध के लिए रु0 30/–प्रति माह (रु0 360/–वार्षिक) दे रहा हुं. मैं जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुॅ.

नाम : ....

पिता का नामः ....व्यवसायः..

पताः..

मैं एक बच्चे की पढ़ाई/असहाय की सेवा/विधवा/बृद्ध के लिए रुपये ....(शब्दों में).........
....मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट/चेक (कृपया बाहर चेक पर अधिभार शामिल कर लेवें) भेज रहा हुॅ. **अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता संःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.**

सचिवः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–11

ये आग कब बुझेगीः04 हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

ऊपर उद्धृत संग्रह मुख्य रूप से भ्रष्टाचार, शिक्षा, आतंकवाद व सामाजिक समस्याओं से सरोकार रखने वाले, विषयों से संबंधित आलेख/ व्यंग्य/ कहानियाँ/ कविताएँ/ग़ज़ल/दोहे आदि आमंत्रित हैं. इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचनाएँ 1500 शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा 250/-रुपये अथवा तीन रचनाएं 500/- रुपये सहयोग राशि के साथ 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता संःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं. अपनी रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करेंः

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93,

नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011

इेमेलः sahityaseva@rediffmail.com